

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

भाग-१- गजेन्द्र ठाकुर

भाग-२- प्रीति ठाकुर

(विदेह पेटारसँ ©Gajendra Thakur, Editor Videha www.videha.co.in ISSN 2229-547X)





ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয়: শান্তি রনস্পতয়: শান্তির্রিশ্বে দেরা: শান্তির্ব্রঁহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রঁহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্রঁহ্মমে শাংতি হুঅয়।

ওঁ-ব্রঁহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূলোকক রীচ, আপ:-জল, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্রঁহ্ম- সর্জক।

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑শীর্ষা↓ পুরু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্রা↑পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিঁ↑ Ẇ রি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্যা↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ॥ सभूमिं॑ स॒र्वत॑स्पृ॒त्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জায়ত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

भाग-१- गजेन्द्र ठाकुर

भाग-२- प्रीति ठाकुर

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

(विदेह पेटारसँ)

<u>अनुक्रम</u>

<u>भाग-१- गजेन्द्र ठाकुर</u>

भाग-२- प्रीति ठाकुर

भाग-१

गजेन्द्र ठाकुर

अध्याय-१

सुभाष चन्द्र यादव- गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर अद्भुत व्यक्ति छथि। प्रखर मेधा आ प्रचण्ड ऊर्जा सँ सम्पन्न। हुनक प्रतिभाक पसार बहुत व्यापक छनि। ओ भाषा, साहित्य आ समाजक उत्थानमे जी-जान सँ लागल छथि। गजेन्द्र ठाकुर बहुभाषाविद् छथि। हुनक ई गुण शब्दकोश-निर्माण, अनेक भाषा मे पारस्परिक अनुवाद आ विभिन्न प्रकारक अनुसंधान मे प्रतिफलित भऽ रहल अछि। ओ मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका “विदेह”क जनक छथि। “विदेह” मैथिली केँ वैश्विक मंच प्रदान कयलक अछि। मैथिल संस्कृतिक संरक्षण आ विकासक लेल ओ एकटा विलक्षण आर्काइवक निर्माण कयने छथि जे निरन्तर संवर्धनशील अछि। सात खंड मे प्रकाशित “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” गजेन्द्र ठाकुरक सृजन आ विमर्शक फुलबाड़ी थिक। साहित्यक कोनो विधा गजेन्द्र बाबू सँ छूटल नहि छनि। हुनक साहित्यिक बहुरंगी दुनिया बहुत प्रांजल आ लोकहितकारी अछि। बाल-साहित्य मे तऽ हुनक कलाक उत्कर्ष आ निखार अनुपम अछि।

अध्याय-२

प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह- मैथिली बाल काव्यधारा

वर्तमान दशकमे मैथिली बाल-काव्यधारामे बहुविधावादी प्रतिभासम्पन्न युवा कवि सशक्त हस्ताक्षर कयलनि ओ थिकाह गजेन्द्र ठाकुर (१९७१) जे प्रवासी रहितहुँ मातृभाषानुरागसँ उत्प्रेरित भऽ एहि क्षेत्रमे अपन उपस्थिति दर्ज करौलनि जनिक शताधिक बाल कवितादि "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" (२००९) मे संकलित अछि। एहिमे संग्रहित समस्त कवितादिक विषय-वैविध्यकेँ उद्घाटित करैत अछि। बालमनक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, ओकर नानाविध औत्सुक्य, प्रसन्नता, टीस, वेदना, प्राकृतिक सुषमा, बालोचित चांचल्य, वर्षा, रौद-बसात, खेलकूद, बाल श्रमिकक वेदना, किंडर गार्डन स्कूलक क्रिया-कलाप, अवकाश भेलापर प्रसन्नता, खूजल रहलापर अप्रसन्नता तथा स्कूल जयबामे हनछिन करब आदि-आदि भावक विश्लेषण कवि अत्यन्त सूक्ष्मताक संग विलक्षण ढंगे कयलनि अछि। शिशुकेँ पितामह आ मातामहक अधिक स्नेह भेटैछ, जाहि कारणेँ हुनका सभक लग रहबाक ओ बेसी आकांक्षी रहैछ, कारण ओ दुलार-मलार ओकरा समयाभावक कारणेँ पारिवारिक परिवेशमे अन्य सदस्यसँ नहि भेटि पबैछ। ओकर विविध जिज्ञासाक यथोचित उत्तर ओकरा ओतहि भेटैछ, जाहि कारणेँ ओ सतत हुनका सभक समीप रहब पसिन्न करैछ।

बालमन एतेक बेसी सेनसेटिभ होइछ जे सामाजिक परिवेशकेँ देखि ओकरा आत्मबोध भऽ जाइछ सम्पन्नताक आ विपन्नताक। तकर यथार्थ स्थितिक चित्रण निम्नांकित पंक्तिमे कवि कयलनि अछि यथा-

गत्र-गत्र अछि पाँजर सन

हड्डी निकलल बाहर भेल

भात धानक नहि भेटय तँ

गद्दरियोक किए नहि देल

औ बाबू गहूमक नहि पूछू

अछि ओकर दाम बेशी भेल

गेल ओ जमाना बड़का

बात गप्पक नहि खेलत खेल

(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. ७.१३७)

बालमनक प्रसन्नताक भाव कवि व्यक्त कयलनि अछि जखन ओकरा स्कूल जयबासँ छुट्टी भेटि जाइछ, तकर दिग्दर्शन तँ करू:

आइ छुट्टी

काल्हि छुट्टी

घूमब-फिरब जाएब गाम

नाना-नानी मामा-मामी

चिड़ै-चुनमुनी सभसँ मिलान

बरखा बुन्नी आएल

मेघ दहोदिस भागल

कारी मेघ उज्जर मेघ

घटा पसरल

चिड़ै-चुनमुनी आएल

(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. ७.८५)

हाथीकेँ जखन शिशु प्रथमे प्रथम देखैछ तँ ओ आश्चर्यित भऽ अकस्मात प्रफुल्लित भऽ जाइछ ओ सहसा बाजि उठैछ, हाथीक सूप सन कान" (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. ७.८४) आ "हाथीक मुँहमे लागल पाइप" (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. ७.७१)।

बाल श्रमिकक व्यथा सेहो सोझाँ आएल अछि। जेना-

फेर आएल जाड़

कड़कराइत अछि हार

बिहारी!!

लागए-ये भेल भोर

गारिसँ फेर शुरू भेल प्रात

बिनु तैय्यारी

(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. ७.९०)

जतेक दूर धरि भाषा प्रयोगक प्रश्न अछि एहिमे युवा कवि अपन उदार प्रवृत्तिक परिचय देलनि। भूमण्डलीकरणक फलस्वरूप भिन्न-भिन्न भाषादिक बहुप्रचलित हल्लुक शब्दादि मैथिलीमे धुड़झाड़ प्रयोग भऽ रहल अछि तकरा शिशु कोना आत्मसात कऽ अन्तर्राष्ट्रीय भाषा सीखि जाइछ, तकर कतिपय उदाहरण एहि कवितादिमे यत्र-तत्र उपलब्ध होइत अछि। शिशु अपन तोतराइत बोलीमे एहन-एहन शब्दकेँ अनुकरण करबाक प्रयास करैछ जकर फलस्वरूप ओकर भाषा ज्ञानक विस्तार अनायासे भऽ जाइछ तकर कतिपय उदाहरण एहिमे भेटि जाइछ, यथा:

ट्रेन गाड़ी धारक कातमे

आएल स्टेशन छुटल बातमे

ट्रेन चलल दौगल भरि राति

सुतल गाछ बृच्छ भेल परात

(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. ७.६३)

अत्याधुनिक परिवेशमे शिशुकेँ अत्यधिक लगाव खेल-कूदमे भऽ गेलैक अछि जे ओ अपन पुश्तैनी खेल सर्वथा बिसरि गेल अछि आ पाश्चात्य खेलक प्रति आकर्षित भऽ गेल अछि। कवि बालकक एहि चंचलताक विश्लेषण एहि प्रकारेँ कयलनि अछि:

हम बाबा करू की पहिने

बॉलिंग आकि बैटिंग

बॉलिंग कय हम जायब थाकि

बैटिंग करि हम खायब मारि?

पहिले दिन तूँ भाँसि गेलह

से सूनह ई बात बौआ

बैटिंग बॉलिंग छोड़ि छाड़ि

पहिने करह गऽ फील्डिंग हथौआ

(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. ७.१२१)

हिनक काव्य भाषा अत्यन्त विस्तृत आ व्यापक अछि जकर प्रयोग ओ कयलनि अछि। महानगरीय परिवेशमे रहितहुँ मैथिलीक ठेंठसँ ठेंठ शब्दादिक प्रयोग ओ अत्यन्त निपुणताक संग कयलनि अछि यथा गाछ-पात, भोरे-सकाल, झहराउ, हियाउ, फुसिये, लुक्खी, खिखीर, पीचल, सुन्न, ढहनाइत, झलफल, सूप, इयार, चाली, छागर, बुरबक, खगता, जलखै, बोन, घटक, गरिपढ़ुआ, थलथल, औंटब, मसौसि, पुरखा, अधखिजू, कोपर, सटका, खौंझाइ, लजकोटर, मुहचुरु, कथूक, दीयाबाती, घटकैती, झड़कलि, धमगिज्जर, चोरुक्का आदि-आदि।

युवा कविक गतिशीलताकेँ देखि लगैछ जे भविष्यमे हिनक कवित्व शक्ति आर अधिक विकसित होयतनि, कारण ओ एखन पुष्पक कली सदृश मैथिली बाल-काव्यक संगहि संग वयस्कोक हेतु पर्याप्त मात्रामे काव्य सृजन कयलनि अछि जे आलोकमय थिक।

अध्याय-३

शिव कुमार झा 'टिल्लू'

अध्याय ३ भाग १- मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

गजेन्द्र ठाकुरक "सहस्त्रबाढ़नि"मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनव आ किछु बर्ख बाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब बोन कम होएबा दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर "सहस्त्रशीर्षा" मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विस्तृत विवेचना करैत अछि। तीनटा घरक रहलोपर धोबिया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्राह्मण सभ जे बरियातीमे बेलबटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहीरि कऽ। वएह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोबि। डोमी साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार- मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बाँस काटि कऽ उपटाय देने अछि आ लोकक बसोबास बढ़ैत-बढ़ैत एहि चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाय-माल मरलाक बाद जा धरि ई सभ उठा कऽ नहि लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाड़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाय द्वारा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओहि स्थानकेँ कोड़य लगलाह, महादेव नीचाँ होइत गेलाह, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन्ह आ जमाय मथुरानंद डी.पी.एस. स्कूलक प्रचार्य छथि, वसंत-कुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि।

१९६७ ई.क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नहि सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतए सँ बिसॉढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओहि मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरोम्मतिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीखि लेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएबन्हि तँ तकर फीस दू सए टाका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीखि लेने अछि। वसंत कुंजक एकटा व्यवसायीक ओहिठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किशनगढ़मे। डोमटोलीक बौधा मल्लिक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेनेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छन्हि जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेबाक संग रोड आ पार्किगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। एहिमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक, भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पोछै छथि आ अखबारक हॉकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे। मुसहर बिचकुन सदाय....।

अध्याय ३ भाग २- कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)

किछु लोकक ई प्रवृति होइत अछि जे सदिखन अपन चल जीवनमे नव-नव प्रकारक प्रयोग करैत रहैत अछि। एहि नव प्रयोगक कारण जहानमे अपवर्गक विहान देखएमे अबैत अछि। प्रयोग धर्मिता व्यक्तिक इच्छासँ नहि जन्म लऽ सकैछ, ई तँ नैसर्गिक प्रतिभाक परिणाम थिक। मैथिली साहित्यमे प्रयोग धर्मी सरस्वती पुत्रक अभाव नहि परंच वर्तमान कालमे एकटा एहेन प्रयोगधर्मी मिथिला पुत्रकेँ माँ मिथिले अपन आँचरमे सक्रिय कएलनि, जे तत्कालिक मैथिलीक दशा वदलबाक प्रयास कऽ रहल छथि। क्रांतिवादी आ सम्यक विचार धाराक सम्पोषक ओ व्यक्ति केओ अनचिन्हार नहि- मैथिली साहित्यक प्रथम अंतर्जाल पाक्षिक पत्रिका विदेहक सम्पादक- श्री गजेन्द्र ठाकुर छथि। भऽ सकैत अछि जे किछु लोक मैथिली साहित्यकेँ अन्तर्जालसँ जोड़बाक प्रयास कए रहल हएताह परंच एकटा मूर्त्त रूप दऽ ३७१ अंक नॉट अउट धरि पहुँचेबाक कार्य गजेन्द्रे जी कएलन्हि। साहित्यक नव-नव विधा आ समाजक वेमात्र वर्गकेँ मैथिलीक आलिंगनमे आबद्ध कऽ साम्यवाद आ समाजवादकेँ वैदेहीक माटिपर आनि हमरा सबहक माथपर लागल अनसोहांत कलंककेँ धो देलनि। ३७१ अंकमे जे कार्य भेल अछि ओ कतऽ-कतऽ पहिने भेल छल, आत्म अवलोकन करबाक पश्चात् जानल जा सकैत अछि। समाजक फूजल, बेछप्प आ उदासीन वर्गकेँ अपन बयनाक मानस पटलपर आच्छादित करबाक लेल साहस सभ केओ नहि जुटा सकैत अछि। मात्र भाँज पुरयबाक लेल मानस पुत्र एहेन कार्य नहि कएलनि, ओहि उपेक्षित वर्गक रचनाकारक रचनामे विषए-वस्तुक गतिशीलता आ तादात्म्य बोध ककरोसँ कम नहि अछि। प्रयोगधर्मी गजेन्द्र जीक कर्मक दोसर आमुख थिक हिनक लेखनीक धारसँ निकलल इन्द्रधनुषक सतरंगी गुलालसँ भरल भावक आत्मउद्बोधन- “कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक”।

एहि पोथीकेँ की कहल जाए, उपन्यास, गल्प, बाल साहित्य, समालोचना, प्रबन्ध वा काव्य? साहित्यक सभ विधाक अमिर रसकेँ घोरि वंगोपखाड़ी वना देलनि जतए ई कहब असंभव अछि जे गंगा, कोशी, यमुना वा हुगली ककर नीर कतए अछि?

शीर्षक देखि अकचका गेल छलहुँ, ई महाभारत मचौता की! मुदा अपन हृदएसँ सोचल जाए प्रत्येक मानवक हृदएक दूटा रूप होइत अछि, मुदा अन्तर्मन सदिखन सत्य बजैत अछि ओहिठाँ मिथ्याक स्थान नहि।

कुरूक्षेत्र रणभूमि अवश्य छल परंच ओहिठाँ सत्यक विजयक लेल युद्ध भेल। ओहिठाँ धर्मसंस्थापनार्थ विनाश लीला मचल छल। हमरा सभकेँ अपन अन्तरआत्मामे कुरूक्षेत्रक दर्शन करएबाक लेल दिशा निर्देशन कऽ रहल छथि गजेन्द्र जी।

मैथिली साहित्यक कोन असत्यकेँ त्याग करबाक चाही? किअए सुमधुर बयनाक एहेन दशा भेल? नव पथक निर्माण नवल दृष्टिकोणसँ हएत। हमरा बुझने एहि पोथीमे साहित्य समागमक लेल दृष्टिकोणकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि। एहेन विलक्षण साहित्यपर आलेख लिखब हमरा लेल आसान नहि अछि- मुदा दु:साहस कऽ रहल छी-

भऽ रहल वर्ण-वर्ण नि:शेष

शब्दसँ प्रकटल नहि उद्देश्य

मोनमे रहल मनक सभ बात

अछिंजलसँ सध: स्नात

सात खण्डमे विभक्त एहि पोथीकेँ सम्पूर्ण परिवारक लेल सनेश कहि सकैत छी।

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना: एहि खण्डक आदि लोकगाथापर आधारित कथा सीत-बसंतसँ कएल गेल अछि। उत्तर मध्यकालीन इतिहासमे अल्हा-ऊदल, शीत वसंत सन कतेक कथा प्रचलित छल, जकर मंचन पद्यक रूपमे वर्तमानकालमे बिहारक गाम-गाममे भऽ रहल अछि। एक राज परिवारक विषय-वस्तुक चित्रण करैत लेखक सतमाएक सिनेहपर प्रश्न चिन्ह लगैबाक प्रयास कएलनि अछि? कथाक आरंभसँ इति धरि मर्मस्पर्शक

अनुभव होइत अछि। कथाक अंतमे विमाताकेँ ओहि पुत्रक छाया भेटलनि जकर पराभव ओ कऽ देने छलीह।

श्री मायानन्द मिश्र मैथिली साहित्यक सभ विधाक मांजल साहित्यकार मानल जाइत छथि। हुनक इतिहास बोधक चारू प्रमुख स्तंभ प्रथमं शैलपुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनपर सम्यक आलेख प्रस्तुत कऽ गजेन्द्र जी पूर्वमे लिखल गेल प्रबंधक दृष्टकोणकेँ चुनौती दऽ रहल छथि। ऋग्वैदिक कालीन इतिहासपर आधारित मंत्रपुत्र मायानन्द जीक प्रमुख कृति मानल जाइत अछि। एहि पोथीक लेल माया जीकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। मंत्रपुत्र पाश्चात्य इतिहाससँ प्रभावित अछि। मंत्रपुत्रक संग-संग पुरोहितमे सेहो पाश्चात्य संस्कृतिक झलकी देखए मे अबैत अछि। अपन समालोचनाकेँ गजेन्द्र जी अक्षरश: प्रमाणित कऽ देने छथि, मुदा मायाबाबूक रचना संसारपर कोनो तरह प्रश्न चिन्ह नहि ठाढ़ कएलनि। समीक्षाक रूप एहने होएबाक चाही। समीक्षककेँ पूर्वाग्रह रहित रहलासँ साहित्यिक कृतिक मर्यादा भंग नहि होइत अछि।

केदारनाथ चौधरी जीक दू गोट उपन्यास ‘चमेली रानी’ आ ‘माहुर’पर गजेन्द्र जीक समीक्षा पूर्णत: सत्य मानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे बहुत रास रचनाक बिक्री सम्पूर्ण मैथिल समाजमे जतेक नहि भऽ सकल, ‘चमेली रानी’क ओतेक बिक्री मात्र जनकपुरमे भेल। एहिसँ एहि साहित्यक प्रति पाठकक श्रद्धाकेँ देखल जा सकैत अछि। ‘माहुर’ मैथिली साहित्यक लेल क्रांतिकारी उपन्यास थिक। अरविन्द अडिगक कृतिक चरित्रसँ एहि उपन्यासक एक पात्रक तुलना लेखकक भाषायी समृद्धताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

विदेह-सदेहक सौजन्यसँ नचिकेता जीक एकटा नाटक ‘नो एण्ट्री मा प्रविश’ प्रकाशित भेल अछि। एहि नाटकक लेखनपर नचिकेता जीकेँ कीर्ति नारायण मिश्र सम्मान देल गेल अछि। नाटकक चारू कल्लोलक तर्क पूर्ण विश्लेषण कऽ गजेन्द्र जी समीक्षाक रूप बदलबाक प्रयास कएलनि अछि। एहि नाटकमे तार्किकता आ आधुनिकताक विषय वस्तु निष्ठताकेँ ठाम-ठाम नकारल गेल अछि।

रचना लिखबासँ पहिने अध्यायमे गजेन्द्र जी मैथिली साहित्यमे भाषा सम्पादनपर विशेष ध्यान देबाक प्रयास कएलनि। अपन साहित्यमे भाषायी त्रुटिपर पूर्णरूपसँ ध्यान नहि देल जा रहल अछि।

कविशेखर ज्योतिरीश्वर, विद्यापति शब्दावली, रसमय कवि चतुर्भुज शब्दावली आ बद्रीनाथ शब्दावली द्वारा मिथिला-मैथिलीक सर्वकालीन शब्द विन्यासक आ शब्द भंडारक विस्तृत वर्णन कएल गेल अछि। एहिसँ निश्चय भाषा सम्पादनमे सहायता भेटत। कतेक रास एहेन शब्द अछि जकर विषयमे हम की साहित्यक पैघ-पैघ वेत्ता पहिने नहि जनैत होएताह। निश्चित रूपसँ ई अध्याय पाठकक संग-संग साहित्यकार आ असैनिक सेवाक ओहि प्रतियोगीक लेल उपयोगी हएत जे मैथिलीकेँ मुख्य विषयक रूपे लऽ प्रतियोगितामे सम्मिलित होएबाक लेल प्रयत्नशील छथि। समीक्षक हमरा सबहक मध्य एकटा नव पद्य विधाक चर्च कऽ रहल छथि- हाइकू। एहि विधापर मैथिलीमे पहिनहुँ रचना होइत छल, मुदा एहि विधाकेँ क्षणिका नाओँसँ जानल जाइत छल। जापानी साहित्य द्वारा सृजित एहि पद्य रूपक वास्तविक चित्रण मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र जी कएलनि अछि।

मिथिलाक लेल प्रलय कहल जाए वा विभीषिका 'बाढ़ि' ई शब्द सुनितहि कोशी, कमला, बलान, गंडकी, बागमती आ करेहक आँतसँ ओझराएल लोक सभ काँपि जाइत छथि। एहि समस्याक स्थिति, सरकारी प्रयासक गति आ दिशाक संग-संग बचबाक उपाएपर लेखकक दृष्टिकोण नीक बुझना जाइत अछि।

कोनो ठाम आ कोनो आन धाममे जौं हमरा लोकनिक विषयमे पता चलए कि मैथिल छथि, लोकक दृष्टकोण स्पष्ट भऽ जाइत अछि- हम सभ मछगिद्धा छी। एकर कारण जे धारक कातमे रहनिहार जीवक जीवन जलचरे जकाँ होइत अछि। जलीय जीवक भक्षण अधिकांश व्यक्ति करैत छथि। तैँ ने हमरा सभकेँ माँछ आ मखानक प्रेमी बुझल जाइत अछि, आ वास्तवमे हम सभ माँछक प्रेमी छी। अधिकांश मैथिल ब्राह्मण परिवारमे सोइरीसँ श्राद्ध धरि माँछक भक्षण अनिवार्य अछि। आन जातिमे अनिवार्य तँ नहि अछि, मुदा ओहु वर्गक अधिकांश लोक माँछक प्रेमी छथि। लेखक एहि लोकक भक्षण-धारकेँ ध्यान धरैत कृषि मत्स्य शब्दावली लिखलन्हि अछि। एहिमे सभ प्रकार माँछक आकार, रंग-रूपक विश्लेषण

कएल गेल अछि। कृषिकार्यक लेल जोड़ा बड़दक संग हर पालो इत्यादिक ज्वलन्त व्यवस्थापर लेखकक विचार नीक मानल जा सकैत अछि। करैल, तारूज आ खीराक विविध प्रकारक नाओ सुनि गामक जिनगी स्मरण आवि जाइत अछि।

एहि खण्डक सभसँ नीक विषय जे हमरा अन्तर्मनकेँ हिलकोरि देलक ओ अछि विस्मृति कवि पंडित रामजी चौधरीक रचना संसारपर प्रवाहमय आ विस्तृत प्रस्तुति। हमरा सबहक भाखाक संग किछु विषमता रहल जे एहिमे कतेक रास एहेन रचनाकार भेल छथि जे अपने संग अपन रचनाकेँ गेंठ बन्हने विदा भऽ गेलाह। एकर कारण एहिमे सँ किछु रचनाकारक रचनाक संकलन नहि भऽ सकल वा भेबो कएल तँ पाठक धरि नहि पहुँचल। एहि लेल ककरा दोष देल जाए, रचनाकारकेँ वा हमरा सबहक भाषाक तत्कालीन रक्षक लोकनिकेँ? एहि भीड़मे रामजी चौधरीक नाओ सेहो अछि। मैथिली साहित्यमे रागपर लिखल रचनामे रामजी बाबूक रचना सेहो अछि। भक्तिमय राग विनय विहाग, महेशवाणी, ठुमरी, तिरहुता, ध्रुपद, चैती आ समदाओनक रूपमे हुनक लेखनीसँ निकलैत गीत सभ अलभ्य अछि। शास्त्रीय शैलीक मैथिली गायनमे वर्तमान पिरहीक लेल अत्यन्त उपयोगी रचना सभकेँ प्रकाशमे आनि गजेन्द्र जी मिथिला, मैथिली आ मैथिलपर पैघ उपकार कएलनि अछि। सत्यकेँ स्वीकार करबाक सामर्थ्य मात्र किछुए लोकमे होइत अछि। गजेन्द्र जी ओहि लोकक पातरिमे ठाढ़ एक व्यक्ति छथि। परिमाणत: मैथिली साहित्य भोजपुरीसँ आगाँ मानल जाइत अछि मुदा गुणवत्ताक दृष्टिए भोजपुरी रास परिमार्जित अछि। भोजपुरी साहित्यक काल पुरूष भिखारी ठाकुरक मर्मस्पर्शी बिदेसियाक माध्यमसँ एहि भाषाकेँ अलग पहिचान भेटल। मैथिली भाषामे बिदेसियाक कमीक मुख्य कारण रहल प्रवासक प्रति उदासीनता। जौं लिखलो गेल तँ महाकाव्यक रूप दऽ देल गेल। बिदेशिया पद्य आ विद्यापतिक लिखल? हमरो विश्वास नहि भेल छल। विद्यापतिकेँ मुख्यत: श्रैंगारिक कवि मानल जाइत अछि। ओना हुनक रचनाकेँ भक्ति रससँ सेहो जोड़ल जाइत अछि। कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक पोथी पढ़लासँ नव सोच मोनमे आबि गेल। जकरा भोजपुरी साहित्यमे बिदेसिया कहल गेल वास्तवमे मैथिलीमे ओ अछि- पिआ-देशान्तर।

विद्यापतिक नेपाल पदावलीमे एहि प्रकार रचना सभ संकलित अछि, मुदा कहियो एहि रूपे महिमा मंडित नहि कएल गेल। कारण स्पष्ट अछि पिआ-देशान्तरक नाटय रूप मिथिलाक

पिछड़ल जातिक मध्य प्रदर्शित कएल जाइत अछि। तेँ अग्रसोची लोकनि एकरासँ दूरे रहब उचित बुझैत छथि। एहिसँ मैथिलीक दशा-दिशाकेँ नव गति कोना भेटि सकैत अछि। मैथिली लोकभाषा अछि, लोक संस्कृतिकेँ बढ़यबाक प्रयास करबाक चाही। गजेन्द्र जीक सोझ दृष्टिकोणकेँ बिम्बित करबाक चाही। “एतहि जानिअ सखि प्रियतम व्यथा”– श्रैंगारिक-विरह व्यथाक वर्णन मुदा अछि पिआ-देशान्तर।

श्री सुभाष चन्द्र यादव जीक कथा संग्रह ‘बनैत-बिगड़ैत’पर गजेन्द्र जीक समीक्षा अपूर्व अछि। प्रवेशिकामे हुनक कथा ‘काठक बनल लोक’ पढ़ने छलहुँ। काठक बनल लोकक नायक बदरियाक मर्म देखि पाथरो पिघलि जा सकैत अछि। वास्तवमे सुभाष जी मैथिली साहित्यक फणीश्वर नाथ रेणु छथि। महिमा मंडनक कालमे मात्र भाँज पुरएबाक लेल हिनक कथा पाठ्यक्रममे दऽ देल जाइत अछि। आंचलिक रचनाकेँ कहिया धरि उपहासक पथियामे झाँपि कऽ राखल जाएत? एक नहि एक दिन छीप उधिया जाएत आ सत्यक सामना करए पड़त। लोक धर्मी साहित्यकार चाहे ओ धूमकेतु, कुमार पवन, कमला चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, जगदीश प्रसाद मंडल वा कोनो आन होथु- हुनका सबहक रचनाक उपेक्षा नहि होएबाक चाही। सुभाष जीक कथा कनियाँ-पुतरा, बनैत-बिगड़ैत आ दृष्टिक समीक्षा देखि समए-कालक दशाक अविरल द्वन्द्व उपस्थित भऽ जाइत अछि। ऋृणी छी जे गजेन्द्र बाबू एहि पोथीपर समीक्षा लिखलन्हि। इंटरनेटक लेल अन्तर्जाल प्रयोग, नीक लागल। वेबसाइट बनएबाक तकनीकसँ गजेन्द्र जीक उद्बोधन आ नियमन नहि बुझि सकलहुँ। तीन बेरि पढ़लहुँ मुदा जेठक तेज बिहारि जकाँ माथपरसँ उड़ि गेल। नव-नव नेना भुटका बुझि जएताह। तकनीकी युगक नेनाक स्मरण शक्तिक आंगन पैघ होइत अछि तेँ हुनके सबहक लेल एहि अध्यायकेँ छोड़ि देलहुँ।

लोरिक गाथा समाजक उपेक्षित वर्गक संस्कृतिपर आधारित अछि। सहरसा-सुपौलक वीर आदि पुरूष लोकिकक परिचए-पातमे पौराणिक मैथिल संस्कृतिक दर्शन होइत अछि।

मिथिलाक खोजमे जनकपुर, सुग्गा धनुषा सन नेपालक स्थलसँ लऽ कऽ मधुबनी जिलाक कतेको उत्तर मैथिल गामसँ दक्षिणमे जयमंगलागढ़ (बेगूसराय)क चर्च कएल गेल अछि।

पूबमे पूर्णिया किशन गंजक कतेक स्थलसँ लऽ पश्चिममे चामुण्डा (मुजफ्फरपुर)क माँ दुर्गाक मंदिरक चर्च कएल गेल अछि।

मिथिलाक किछु स्थानक वर्णन एहि सुचीमे नहि भेटल जेना- सती स्थान (गाम-शासन प्रखंड-हसनपुर जिला- समस्तीपुर) आ उदयनाचार्यक जन्म स्थली (गाम-करियन जिला-समस्तीपुर)। एहि लेल लेखककेँ दोष नहि देल जा सकैत अछि, किएक तँ मिथिलाक खोज विदेहसँ लेल गेल अछि, जाहिमे गजेन्द्र जी आवाहन कएने छथि, जे जिनका लग कोनो प्रसिद्ध स्थलक विषएमे जानकारी हुअए जे एहिमे सम्मिलित नहि अछि तँ ओकर छाया चित्रक संग सूचना पठाओल जाए। किछु स्थल आर छूटल भऽ सकैत अछि, प्रबुद्ध पाठक एहि विषएपर कार्य कऽ सकैत छी।

सहस्त्रबाढ़नि उपन्यास: सहस्त्रबाढ़नि एकटा आकाशीय पिण्ड होइत अछि, जकर दर्शन आर्यक धार्मिक दृष्टिकोणमे अछोप बुझना जाइत अछि, मुदा उपन्यासकार एक अछोप पिण्डकेँ आत्मसात् करैत एकरा सावित्री बना देलनि। सावित्री अपन पातिव्रत्य आ दृढ़ निश्चयसँ सत्यवानक प्राण यमराजसँ छीनि लेने छलीह। एहि उपन्यासक दृष्टिकोण तँ एहन नहि अछि परंच उपन्यासक नायक आरूणिक मृत्युपर विजयमे सहस्त्रबाढ़निक उत्प्रेरणक उद्बोधन कएल गेल अछि। कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक मूल पृष्ठपर सहस्त्रबाढ़निक चित्र देल गेल अछि। एहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे रचनाकारक दृष्टिमे सम्पूर्ण पोथीक सातो खण्डमे एहि उपन्यासक विशेष महत्व अछि। सहस्त्रबाढ़निक अध्ययन कएलापर उन्नैसम शताब्दीक उत्तरांशसँ वर्तमानकाल धरिक वर्णन कएल गेल अछि।

एक परिवारक एक सए पंद्रह बरखक कथाक वर्णनकेँ कल्प कथा मानब निश्चित रूपसँ रचनाकारक भावनापर कुठाराघात मानल जाएत। सद्यः ई कथा रचनाकारक पाँजड़िक कथा अछि। जौं एकरा गजेन्द्र बाबूक आत्मकथा मानल जाए तँ संभवत: अतिशयोक्ति नहि हएत। उपन्यासक आदि पुरूष झिंगुर बाब एकटा किसान छथि। जनिक घरमे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना बर्ख सन् १८८५ ई.मे एकटा बालक जन्म लेलन्हि- कलित। कलितक नेनपनसँ एहि उपन्यासक श्री गणेश कएल गेल। कलितक ओहि कालमे, बंगाली शिक्षकसँ, अंग्रेजीक शिक्षण व्यवस्था दरिभंगामे कएल गेल। एहिसँ दू प्रकारक भावक बोध

होइत अछि। पहिल जे झिंगुर बाबू समृद्ध लोक छलाह। ओहि कालमे अवहट्ठक शिक्षा सेहो गनल गुथल परिवारमे देल जाइत छल, अंग्रेजीक कथा तँ अति विरल छल। दोसर जे बंगाली लोक हमरा सभसँ शिक्षाक दृष्टिमे आगाँ छलाह। बंगाली जातिक अंग्रेजी शिक्षक, हम सभ कतेक पाछाँ छलहुँ जे हमरा सबहक संस्कृतिक राजधानी दरिभंगामे कोनो मैथिल अंग्रेजी शिक्षक झिंगुर बाबूकेँ नहि भेटलन्हि।

सौराठ आ ससौलाक सभा गाछीक चर्च तँ बेरि-बेरि कएल जाइत अछि, मुदा एहि पोथीमे विलुप्त सभा बलान कातक गाम परतापुरक सभा गाछीसँ कथाकेँ जोड़बाक दृष्टिकोण अलग मुदा नीक बुझना जाइत अछि। कलितक विवाहमे वरक महफामे, बूढ़ बरियातीक कटही गाड़ीमे आ जवान लोकक पैदल जाएब वर्तमान पीढ़ीक लेल अजगुत लागत मुदा अपन पुरातन संस्कृतिसँ नेना-भुटकाकेँ आत्मसात कराएब आवश्यक अछि। कलितक मृत्युक पश्चातक कथा हुनक छोट पुत्र नंदक परिधिमे धूमए लागल। नंदक पारदर्शी सोच, अपन कनियासँ प्रत्यक्षत: गप्प करब, तृतीय पुरूषक रूपे संबोधन नहि। मिथिलामे वर-कनिया, सासु-पुतोहु, साहु जमाएक गप्पमे तृतीय पुरूषक संबोधन अनिवार्य होइत अछि। एहि प्रकारक व्यवस्थाक विरूद्ध नंदजी अपन नवल सोचकेँ केन्द्रित कएलन्हि। वर-कनियाँक संबंध स्वाभाविक रूपैँ तँ समझौता मात्र होइत अछि परंच संसारक व्यवस्थामे सभसँ पवित्र आ अपूर्व संबंध यएह होइत अछि। जीवन भरि निर्वहनमे कोनो एक जनक संग छूटलापर दोसरमे व्यथा..... अकथ्य व्यथा। तैँ एहि संबंधमे प्रत्यक्ष संबोधन होएबाक चाही। हमर दृष्टिकोण ई नहि जे अपन संस्कृतिक पराभव कऽ देबाक चाही, मुदा संस्कृति आ व्यवस्थामे सेहो कालक गति सन परिवर्तनक अनिवार्यता प्रतीत होइत अछि।

आर्यावर्त्त न्याय, कर्म, मीमांसा सन प्रांजल दर्शनक आविर्भाव भूमि मानल जाइत अछि। एहि खण्डमे एकटा नव दर्शनसँ मिथिलाक भूमिकेँ वैशिष्ट्यता प्रदान कएल गेल ओ अछि इमान आ मर्मक बिम्बमे संबंधक मर्यादा। नंद बाबू इंजीनियर छलाह। जौं अपन धर्ममे किछु ढील दऽ दैतथि तँ भौतिकताक बाढ़िसँ परिवार ओत-प्रोत भऽ सकैत छल। मुदा एना नहि कऽ सतत अपन कर्मकेँ साकार सत्यसँ बान्हि लेलन्हि। स्वाभाविक अछि अर्थयुगमे इमानक प्रासंगिकता बड़ ओछ भऽ जाइत अछि। असमए मृत्युक पश्चात् परिवारक दशाक विवेचन

मर्मस्पर्शी लागल। हुनक सत् कर्मक प्रभाव यएह भेल जे संतान सभ विशेषत: आरूणि भौतिक रूपसँ रास संपन्न तँ नहि भऽ सकलाह मुदा पिताक छत्र-छायाक आंगनमे मनुक्ख भऽ गेलाह। कर्मक गतिसँ लोक राज भोगकेँ प्राप्त तँ कए सकैत अछि, मुदा मनुक्ख बनबाक लेल नैसर्गिक संस्कार बेशी महत्वपूर्ण होइत अछि। तेँ कहलो गेल अछि- “बढ़ए पूत पिताक धर्मे।” कतहु-कतहु नीच विचारक मानवक संतान मनुसंतान भऽ जाइत अछि, एहिमे दैहिक संस्कार आ प्रकृतिक लीला होइत अछि। आरूणिक दृढ़ विश्वासपर केन्द्रित एहि उपन्यासक कथामे सतत प्रवाहक गंगधारा खहखह आ शीतल बुझना गेल। जँ कथाकेँ आत्मसात् कएल जाए तँ कोनो अर्थमे एकरा काल्पनिक नहि मानल जा सकैछ। एकरा आत्मकथा स्पष्टत: नहि मानि सकैत छी, किएक तँ उपन्यासकार कोनो रूपेँ एकर उद्बोधन नहि कएलनि अछि। भऽ सकैत अछि समाजक अगल-बगलक रेखाचित्र हो, मुदा हमरा मतेँ ई कल्पना नहि, सत्य घटनापर आधारित अछि।

उपन्यासमे एकटा कमी सेहो देखलहुँ। अंग्रेजी आखरक ठाम-ठाम प्रयोग कएल गेल जेना- एनेश्थेशिया, ओपिनियन, इम्प्रेशन आदि। एहि सभ शब्दक स्थानपर अपन शब्दक प्रयोग कएल जा सकैत छल, मुदा नहि कएल गेल। हमरा बुझने हम दोसर भाखाक ओहि शब्द सभकेँ मात्र आत्मसात करी जकर स्थानपर हमर अपन भाखामे शब्दक अभाव अछि।

सहस्राब्दीक चौपड़पर: कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनकक तेसर खण्ड कविता संग्रहक रूपमे अछि, जकर शीर्षक ‘सहस्राब्दीक चौपड़पर’ देल गेल। मात्र तैंतालीस गोट कविताक सम्मिलनमे शृंगार, विरह हैकू, विचार मूलक कविताक संग-संग एकटा ध्वज गीत सेहो अछि। इन्द्रधनुषक आसमानी रंग जकाँ प्रथम कविता ‘शामिल बाजाक दुन्दभी वादक’मे क्षणिक प्रकृतिक आवरणमे स्वर-सरगमक भान होइत अछि, मुदा अन्तरक अवलोकनक पश्चात् दशा पूर्णत: विलग। राजस्थानक वाद्य संस्कृतिमे एकटा दर्शक वाद्य यंत्रक प्रासंगिकताक केन्द्रनमे कविक भाव अस्पष्ट लागल। सहज अछि ‘जतऽ‘ नहि पहुँचथि रवि, ओतऽ गएलनि कवि’। कवि स्वयं दुन्दभी वादक छथि तेँ स्पष्ट दर्शन कोना हएत। हिन्दी साहित्यमे एकटा कविता पढ़ने छलहुँ ‘गोरैयो की मजलिसमे कोयल है मुजरिम’। संभवत: समाजक पथ प्रदर्शकक मूक दृष्टकोणकेँ कविताक केन्द्र बिन्दु बनाओल गेल अछि। बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी व्यक्ति सेहो जीवनक गतिमे दवाबक अनुभव करैत कतहु-कतहु अपन

संवेदनाकेँ दबा कऽ दुन्दभी वादक सन नाटक करैत छथि। केओ-केओ दोसरकेँ संतुष्ट करबाक लेल अपन विचारधारा बाह्य मनसँ बदलि दैत छथि। संतुष्टीकरणक प्रवृत्ति वा कोनो प्रकारक मजबूरी हो, हमरा सभकेँ परिस्थितिसँ सामंजस करबाक बहाने अपन सम्यक विचारकेँ माटिक तरमे नहि झँपबाक चाही। समाज जौं एकरा पूर्वाग्रह मानए तँ अपन पक्षक विवेचन कएल जाए, मुदा अनर्गल प्रलापकेँ मूक समर्थन नहि देबाक चाही।

मोनक रंगक अदृश्य देवालमे परिस्थितिजन्य विषमताक विषय वस्तुक दर्शन आशातीत अछि। मन्दाकिनी.... आ पक्का जाठि शीर्षक कवितामे प्रकृति आ समाजक स्थितिक मध्य विगलित मानवतापर मूक प्रहारमे कविक नैसर्गिक मुदा अदृश्य सोच हमरा सन साधारण समीक्षक लेल अनबूझ पहेली जकाँ अछि। अपन पुरातन इतिहासक ओहि दिवसकेँ लोक स्मरण नहि करए चाहैत छथि, जाहिसँ अतुल पीड़ाक अनुभव होइत अछि। त्रेता युगक घटना, कलियुग धरि पाछाँ धेने अछि। सीता जीक बियाह अगहन शुक्ल पक्ष पंचमीकेँ भेलनि, परिणाम सोझाँ अछि। तखन शतानंद पुरोहित जी खरड़ख वाली काकीक बिआह ओही तिथिमे किएक करौलन्हि? भऽ सकैत अछि हुनक भाग्यमे सीताजी जकाँ गृहस्थ सुख नहि लिखल मुदा कलंक तँ ‘वियाह पंचमी’ तिथिकेँ देल गेल। एहि कवितामे कविक दृष्टकोण तँ विधवा बिआहक समर्थन करबाक अछि, मुदा सवर्ण मैथिल से नहि स्वीकार कऽ रहल छथि। अपन पुरान साँगह लऽ कऽ हम सभ हवड़ाक पुल बनाएबाक कल्पनामे कहिया धरि ओझराएल रहब?

एहि कविता संग्रहमे जे नव विषय बुझना गेल ओ अछि ‘बारह टा हैकू’। गिदरक निरैठ, राकश थान, शाहीक मौस आ बिधक लेल शब्द-शब्द बजैत अछि।

हैकूक सार्थक अर्थ लगाएब अत्यन्त कठिन होइत अछि, मुदा हमरा बुझने जौं एहेन हैकू लिखल जाए तँ नेनो सभ जे मैथिलीमे माए परिवार कुटुम्बक संग बजैत छथि अवश्य बूझि जएताह।

मिथिलाक ध्वज गीतमे मातृभूमिसँ कर्मक सार्थक गति मांगल गेल अछि। जेना गायत्री परिवारक प्रार्थना ’वह शक्ति हमे दो दयानिधि’ मे गाओल जाइत अछि। मातृ वंदनाकेँ

कविता संग्रहमे देबाक हिनक दृष्टिकोण रचनाक्रममे उपयुक्त हो मुदा हमरा मते एकरा कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक प्रथम पृष्ठपर वंदनाक रूपमे देल गेल रहिते तँ बेसी सुन्नर होइतए।

'बड़का सड़क छह लेन बला'मे मिथिलाक विकासक क्रमित स्थितिक वर्णन कएल गेल अछि।

सम्पूर्ण कविता संग्रहक अवलोकनक बाद कोनो पद्य अकच्छ करैबला नहि लागल। 'पुत्र प्राप्ति' शीर्षक कवितामे लुधियानामे हमरा सबहक समूहक एकटा पंडितक ठकपचीसीक चर्च कएल गेल अछि। एहने ठकक कारण 'बिहारी' व्यक्तिकेँ आठ ठाम लोक शंकाक दृष्टिसँ देखैत छथि। मुदा गजेन्द्रजी सँ हमर आग्रह जे एहि कविताक पंजाबी भाषामे अनुवादक अनुमति नहि देल जाए नहि तँ कतेको भलमानुष बनल मैथिल घुरि कऽ गाम आबि जएताह आ हमरा सबहक समाजमे कुचक्र आरो बढ़ि जाएत।

गल्प गुच्छ: २३ गोट कथा-लघुकथाक सम्मिलन कऽ गल्प गुच्छक नाओ देल गेल। चौंसठि पृष्ठक एहि खण्डमे समए-सालक सभ रूपकेँ बिम्बित करैत कथाकार साहित्यक समग्र विधापर लेखनक प्रयास कएलनि अछि। सर समाज कथामे अर्थनीतिक मौन प्रस्तुति नीक लागल मुदा कलात्मक शैलीक अभाव बुझना गेल। घरक मरम्मतिक बिम्बित खिस्सामे कनेक रस-प्रवाह रहितए तँ कथा आर नीक भऽ सकैत छल। हम नहि जाएब विदेशमे पलायनवादक विरोध कएल गेल अछि बिम्ब तँ नीक अछि मुदा विश्लेषणमे अलंकारक तादात्म्य नहि भेटल। एहेन मार्मिक विषय-वस्तुक कथा तँ ओहि प्रकारक होएबाक चाही जाहिसँ हियमे हिलकोरि उत्पन्न भऽ जाए। राग भैरवी छोट मुदा संस्कृतिकेँ छूबैत अछि। काल स्थान विस्थापन आ वैशाखीपर जिनगीकेँ औसत मानल जा सकैत छैक।

कोनो साहित्यकेँ ता धरि पूर्ण नहि मानल जा सकैछ जा धरि समाजक अंतिम व्यक्तिसँ संबंधत भाषा साहित्यकेँ जोड़ल नहि गेल हुअए। "सर्व शिक्षा अभियान" कथाकेँ पढ़लाक वाद मैथिली साहित्यमे दलित, पिछड़ा आदि वर्गक प्रति सरकारी योजनाक निष्फल होएबाक कारण केर स्पष्टीकरण वास्तविक लगैत अछि। पेटमे अन्नक फक्का नहि हो आ पोथी मुफ्तमे भेटए, एहेन शिक्षाक स्थितिपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करब स्वाभाविक अछि। साम्यवादी सोच राखएबला कथाकार कथाक बहाने स्पष्ट करए चाहैत छथि जे गरीबक

मध्य जातिक आधारपर विभाजन हमरा सबहक समाजक कलुष रूप थिक। छोट उद्देश्यपूर्ण कविताकेँ क्षणिका वा हाइकूक नाओ देल गेल मुदा लघुकथाकेँ की कहल जाए? लघुकथामे बिम्बक विश्लेषण अति क्लिष्ट होइत अछि मुदा “जातिवादी मराठी”मे मैथिली भाषाक अस्तित्वपर लागल जातिक कलंकक प्रस्तुति सराहनीय अछि। थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, अनुकम्पाक नौकरी सभक विषय-वस्तु छोट-छीन परंच सारगर्भित लागल। जेना हिन्दी साहित्यक पत्र-पत्रिकामे चर्चित लेखक खुशवन्त सिंह मात्र दू पाँतिमे बहुत-रास गप्प लिखि जाइत छथि ठीक ओहिना एहि सभ लघुकथाकेँ पढ़ि बुझना गेल।

जाति-पाति लघुकथा तँ पूर्णत: बेच्छप लागल। एकटा डोम जातिक आइ.पी.एस. परिवीक्षाधीन अधिकारीमे जातिक गरानि कोनो आत्मीय मनुक्खकेँ मर्माहत कऽ सकैत अछि। मृत्युदंड आ वाणवीरक सामाजिक बिम्बक संग-संग सामन्तवादी, मीडियासँ संबंधित कथा सभकेँ बेजोड़ तँ नहि मुदा मैथिली साहित्यक लेल नूतन-धाराकेँ स्पर्श करैबला कथा जौं मानल जाए तँ कोनो दोख नहि।

आब प्रश्न उठैत अछि जे गल्प-गुच्छकेँ कोन रूपक मानल जाए। हमरा सबहक भाषाक संग दुर्भाग्य रहल जे कथाक विषय वस्तुसँ बेशी भाषा विज्ञान, बिम्बक विश्लेषण आ शब्द विन्यासक कलाकारीपर विशेष ध्यान देल जाइत अछि। साहित्यक अधिकांश अधिष्ठाता एकटा गप्पपर नहि ध्यान देबए चाहैत छथि जे रचनासँ समाजक परिदृश्यमे सम्यक जीवनक सनेश जाएत वा नहि। जातिक संग-संग संतुष्टीकरण केर छद्मसँ ऊपर उठब अनिवार्य अछि नहि तँ मैथिलीक अस्तित्वपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ भऽ जाएत। भौगोलिकीकरणक परिधिमे मैथिली सभसँ बेसी प्रभावित भेल छथि। सौतिन भाषाक संग-संग पाश्चात्य संस्कृतिक प्रभावसँ वैदेही टिम टिमा गेली। एहि भाषामे नवल अर्चिस जड़एबाक लेल वर्ग संघर्षक स्थितिसँ ऊपर उठि कऽ कार्य करबाक चाही। पागक बजाय जौं मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक संग-संग बहुल झाँपल मुदा जनभाषाक संरक्षक वर्ग धरि पहुँचबाक प्रयास कएल जाए तँ मैथिलीक दशामे फेर चारि नहि आठ गोट चान लागि जाएत।

एहि कथा सबहक कथाकारक कथाक शैलीक विवेचन जे हुअए एकर निर्णए पाठकपर छोड़ि देबाक चाही मुदा रचनाक उद्देश्य स्पष्ट अछि। गजेन्द्र जी निश्चित रूपेँ एहि कथा संग्रहक माध्यमसँ समाजमे अपन संस्कृतिक रक्षा करैत नूतन सम्यक ज्योति जड़ाबए चाहैत छथि, जतऽ डोम, चमार, ब्राह्मण, राजपूत, मुसलमान ओ कायस्थ नहि मात्र "मैथिल" शब्दक व्योमक परिधिमे मिथिलाक चर्च कएल जाए। दुर्भाग्य अछि जे मैथिली पोथीक समीक्षा करबामे आलोचना-प्रत्यालोचनाकेँ मूल बिम्ब मानल जाइत छैक जखन की आन भाषामे रचनाकारक मनोवृति आ दृष्टिकोणपर ध्यान देल जाइत अछि।

लेखकक "पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल" कथा संग्रहमे गल्प-गुच्छक लगभग सभटा कथाक परिवर्द्धित रूप आयल अछि आ आलोचनाक सभ बिन्दु ओतऽ समाप्त भऽ गेल अछि। "पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल"क 'पाठकक लेल किछु निर्देश बा सुझाव' मे गजेन्द्र ठाकुर लिखै छथि-

"ऐ पोथी ('पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल')क किछु कथा हमर सन् २०२३ सँ पूर्वमे प्रकाशित/ ई-प्रकाशित कथाक परिवर्धित रूप अछि, ऐ पोथीक कथा सभकेँ ओइ कथा सभक प्रामाणिक संस्करण घोषित कएल जा रहल अछि (जँ कियो ऐ कथा सभक कोनो संग्रहमे संकलन बा उल्लेख बा अनुवाद करऽ चाहि रहल होथि, तिनको लेल ई लागू अछि)। "

नाटक- संकर्षण: मात्र १६ पृष्ठक नाटक, सुनबामे कनेक अनसोहाँत जकाँ लगैत अछि मुदा जौं तन्मय भऽ कऽ पढ़ल जाए तँ स्पष्ट भऽ जाएत जे हिन्दी साहित्यमे मात्र किछु कथाक कथाकार श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जीकेँ कोना आ किए आत्मसात कऽ लेल गेल?

संकर्षण सन अभिनेता जाहि नाटकमे हुअए ओहिमे विशेष भावक उपस्थिति स्वाभाविक अछि। अभिनेताक कोनो गुण नहि मुदा गजेन्द्र जी एकरा प्रधान नायक बना देलनि। समाजक कुहरैत अवस्थाक यएह सत्य रूप थिक एक दिस महीसक चरवाह आ दोसर दिस कलक्टरक चाटुकार। मिथिलाक समाजिक बिम्बकेँ स्पर्श करैत छोट नाटक संकर्षणमे नुक्कड़ नाटकक रूप अछि। "हौ गोनर! पानि कोना लागए देबैक एकरा। पएरक चमड़ा सड़त तँ फेर नवका आबि जाएत। मुदा ई सड़ि जाएत तखन कतएसँ आएत।" कहबाक

तात्पर्य जे जाहि व्यक्तिकेँ शरीरसँ बेसी किछु कैंचाक जुत्ता विशेष महत्वपूर्ण लगैत हुअए ओहि व्यक्तिमे जीवनक तादात्म्यक कोन प्रयोजन?

धर्मनीतिसँ अर्थनीति बेसी महत्वपूर्ण अछि। कालक बदलैत स्वरूपक चिन्तन करबाक योग्य, संभवत: एहि नाटकक यएह उद्देश्य थिक। मंचन करबाक लेल एकरा कोनो अर्थमे उपयुक्त नहि मानल जा सकैछ। किएक तँ पर्दा उठत आ आधा घंटामे नाटक समाप्त। मुदा जीवनक नाटकमंडलीकेँ केन्द्रित करएबला संकर्षण चिन्तन करबाक योग्य अवश्य लागल। सभटा नाटकमे कोनो ने कोनो रूपेँ हास्य आ शृंगारक सम्मिलन होइत अछि मुदा एहिठाँ अभाव किएक तँ समाजक मनोवृत्तिकेँ छुबैत एहि नाटककेँ पढ़ि कोनो कविक एकटा कविताक एक पाँति मोन पड़ि गेल-

“ठोप-ठोप चारक चुआठकेँ आंगुरसँ उपछैत रहल छी”

गजेन्द्र जीक प्रयास छोट परंच अनुकरणीय लागल।

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन: जेना कि नाओसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे दुनू काव्य ऐतिहासिक घटनाकेँ बिम्बित कऽ लिखल गेल। धर्म आ कर्मक्षेत्रक परिधिमे आर्य संस्कृतिक विवेचन नीक लागल। एहि महाकाव्यक विषयमे मात्र यएह कहल जा सकैत अछि जे सुरेन्द्र झा सुमन, वैद्यनाथ मल्लिक विधु आ मार्कण्डेय प्रवासी जीक काव्य लेखन द्वारा परम्पराकेँ जीवंत रखबाक प्रयास कएल गेल।

बालमंडली आ किशोर जगत: हम सभ गौरवान्वित छी जे मैथिली भाषा समग्र आर्य परिवारक भाषा समूहमे सभसँ सरस भाषा मानल जाइत अछि। साहित्य चिन्तन सेहो पाठकक गणनाकेँ देखैत ककरोसँ कम नहि। मुदा एकटा पक्ष जे सभसँ कमजोर रहल ओ थिक मैथिली भाषा साहित्यमे बाल साहित्यक दरिद्रता। कहबाक लेल तँ बहुत रास लेखक वा कवि अपनाकेँ बाल साहित्यसँ जोड़बाक सतत वाक-पटुता देखबैत छथि मुदा जौं पूर्ण रूपसँ बाल साहित्यक रचनाक गणना कएल जाए तँ जीवकांत जी सन मात्र किछु साहित्यकार छथि जिनक लेखनी एहि दिशामे क्रियाशील रहल। जखन कि बाल साहित्य जौं परिमार्जित नहि हएत तँ निकट भविष्यमे मातृभाषाक स्वरूप विगलित भऽ सकैत

अछि। एहि दिशामे गजेन्द्र जीक प्रयाससँ कृतज्ञ होएबाक चाही। कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक सातो खण्डमे सभसँ नीक खण्ड अछि बाल मंडली। किशोर जगतपर अपन लेखनीकेँ हाथसँ नहि हृदयसँ लिखलन्हि। एहि खण्डमे दू गोट बाल नाटक तैइस गोट बाल कथा, वर्णमाला शिक्षा आ एक सएसँ ऊपर बाल कविता देल गेल अछि। सभ बिम्बकेँ केन्द्रित करैत लिखल गेल रचना सभक भाषा अत्यन्त सरल अछि। नेना-भुटकाकेँ एहने रचना चाही। जौं तत्सम मे बाल साहित्य लिखल जाए तँ ओकर कोन प्रयोजन? कविता सभ तँ खूब नीक मानल जा सकैत अछि-

आइ छुट्टी

काल्हि छुट्टी

घूमब फिरब जाएब गाम......।

बाल बोधक लेल अलंकारसँ बेसी मनक चंचलता उपयोगी होइत छैक तँए एहि खण्डकेँ आलोचनात्मक स्वरूपसँ देखब उचित नहि।

निष्कर्ष: सात खण्डमे विभक्त एहि पोथीमे साहित्यक समग्र रसक स्वादन करएबाक प्रयास कएल गेल। मुदा एकर सभसँ पैघ नकारात्मक स्वरूप जे एकरा की मानल जाए? भऽ सकैत अछि सभ धाराकेँ छूबि गजेन्द्र जी मैथिली साहित्यमे एकटा नव रूपक धारा केन्द्रित करए चाहैत होथि।

एकटा पोथीमे प्रबन्ध, समालोचना, उपन्यास, गल्प, कविता संग्रह, महाकाव्यक संग-संग बाल साहित्य पोथीकेँ विशाल बना देलक। भऽ सकैत अछि समीक्षक लोकनिक संग-संग किछु पाठककेँ नीक नहि लागनि मुदा हम एहि प्रकारक प्रयोगक स्वागत करब उचित बुझैत छी। ओना पाठकक सुविधाक लेल ई अलग-अलग सेहो प्रकाशित कएल गेल अछि। भाषा सम्पादन सेहो नीक लागल, शाब्दिक आ व्याकरणीय अशुद्धता अत्यन्त न्यून अछि।

अध्याय-४

उदय नारायण सिंह "नचिकेता"

अध्याय ४ भाग १- गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डमे विभाजित कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे एकहि संग कठिनसँ कठिन विषयपर सुचिन्तित विश्लेषण भेटत आ उपन्यासक जटिल कथा केर गुत्थी सेहो भेटत सुलझाएल आ संगहि प्रेमक कविता आ प्रकृतिक गीत सेहो । सात खण्ड एहि प्रकार छन्हि-

खण्ड-१ प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, खण्ड-२ उपन्यास-सहस्रबाढ़नि, खण्ड-३ पद्य-संग्रह-सहस्त्राब्दीक चौपड़पर, खण्ड-४ कथा-गल्प सग्रह-गल्प गुच्छ, खण्ड-५ नाटक-संकर्षण, खण्ड-६ महाकाव्य- १.त्वञ्चाहञ्च आ २.असञ्जाति मन, खण्ड-७ बालमंडली /किशोर जगत।

सभसँ महत्त्वपूर्ण बात ई जे सभ विषयक पाठकक आ पाठिकाक लेल एतए किछु ने किछु भेटबे करत । पुछलियन्हि जे एहन संरचना किएक तँ जे किछु कहलन्हि ताहिसँ लागल जे ई हिन्दी केर तार-सप्तक आ तमिलक कुरुक्षेत्रम् केर बीच मे कतहु अपन जगह बनेबाक प्रयास कऽ रहल छथि । फराक एतबे जे हिन्दी आ तमिल मे कएक गोटे मिलि कए संकलित भेल छथि एकटा जिल्दमे, आ एतए कएक लेखकक द्वारा विभिन्न विधा केर रचना नहि रहि हिनके अपन रचना पोथीमे उपलब्ध कराओल गेल अछि ।

कतेको पंक्ति भरिसक पाठकक मोनमे ग्रंथित-मुद्रित भऽ जएतन्हि , जेना कि –

“ढहैत भावनाक देबाल

खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

आकांक्षाक बखारी अछि भरल

प्रतीक बनि ठाढ़।”

अथवा, निम्नोक्त पंक्ति-येकेँ लऽ लिअ :

“सुनैत शून्यक दृश्य

प्रकृतिक कैनवासक

हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द

क्यो नहि देखत हमर ई चित्र अन्हार मे...”

मिथिलेक नहि अपितु भारतक कतेको संस्कृतिक प्रभाव देखल जा सकैछ हिनक कथा कवितामे । एहिसँ मैथिली क्रियाशील रचनाक परिदृश्य आर बढ़ि जाइछ, आ नव-नव चित्र, ध्वनि आ कथानक सामने आबि जाइत अछि ।

कवि कोन मन्दाकिनी केर खोजमे छथि जे कहैत छथि-

“मन्दाकिनी जे आकाश मध्य

देखल आइ पृथ्वीक ऊपर...”

अपन विशाल भ्रमणक छाप लगैछ रचनामे नीक जकाँ प्रतीत होइत अछि । आ आर एकटा बात स्पष्ट अछि – कोषकार गजेन्द्र ठाकुर आ रचनाकार गजेन्द्र ठाकुर भिन्न व्यक्ति छथि , व्यक्तित्त्वमे सेहो फराक... जतए कोशकारितामे सम्पादकत्व तथा टेक्नोलोजीसँ सम्बन्धित व्यक्तिक छाया भेटिते अछि , मुदा सृजनक मुहुर्तमे से सभटा हेरा जाइत छथि ।

एहिमे सँ कतेको टेक्स्ट ओ रखने छथि इन्टरनेटमे मैथिलीक बढ़ैत पाठककेँ ध्यानमे राखए , जेना कि विदेह-सदेह अछि http://videha.co.in/archive.htm मे, आ

देवनागरी आ तिरहुता दुन्नु लिपिमे । जे क्यो मिथिलाक्षरक प्रेमी छथि तनिका सब लेखैँ तँ ई विरल उपहारे रहत ।

अनेको रचनामे मात्र गोल-मटोल कथे नहि, राजनीतिक भाष्य सेहो लखा दैत अछि । ताहिमे हिनका कोनो हिचकिचाहटि नहि छन्हि । ओना देखल जाए तँ कुरुक्षेत्र क कतेको महारथी छलाह- प्रत्येक वीर-योद्धा अपन-अपन क्षेत्र आ विधाक प्रसिद्ध पारंगद व्यक्ति छलाह- क्यो कतेको अक्षौहिणी सेनाक संचालनमे, तँ क्यो तीरन्दाजीमे, आदि आदि। सभ जनैत छलाह जे धर्म आ अधर्मक भेद की होइछ मुदा तैयो सभ क्यो जेना आसन्न विपर्यायिक सामने निरुपाय भऽ गेल छलाह। आजुक सन्दर्भमे सेहो कथा मे तथा व्याख्यामे एहन परिस्थितिक झलक देखल जाइत अछि। सैह एहि महा-पाठ- क (मेटाटेक्सट) खूबी कहब । नहि तँ ओ कियेक लिखताह-

“देखैत देशवासीकेँ पछाड़ैत

मन्त्रतंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल, गुनधुनी बला स्वप्न

बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक, अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान

दमसैत मालिकक स्वर तोड़ैत छैक ओकर एकान्त

कारिख-चित्रित रातिक निन्न,

टुटैत-अबैत-टूटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य...”

एहि महापाठकेँ एकटा एक्सपेरीमेन्ट केर रूपमे देखी तँ सेहो ठीक , आ सप्तर्षि-मंडलक निचोड़ अथवा सप्त-काण्डमे विभाजित आधुनिक महा काव्य रूपमे देखी तँ सेहो ठीक हएत। जेना पढ़ी, सामग्री एहिमे भरपूर अछि, भरिसक किछु अतिउच्च मानक लागत, आ किछु किनको तत्तेक नहि पसिन्न पड़तन्हि । मुदा एहि ग्रन्थ निचयकेँ पाठक अवश्य स्वागत करताह , आ नवीन लेखक वर्गकेँ एकटा नव दिशा सेहो भेटतन्हि ।

अध्याय ४ भाग २- गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ अंग्रेजी-मैथिली कम्प्यूटर शब्दकोशपर

जखन सैमुअल जॉनसनक ’अ डिक्शनरी ऑफ द इंग्लिश लैंगुएज’ (१७५५) प्रकाशित भेल तखन जा कऽ अंग्रेजी विद्वान आ विद्यार्थीकेँ यथार्थमे अपन भाषामे एकटा विश्वसनीय आ परिष्कृत कोश भेटलन्हि। अंग्रेजीक अधिकांश पहिलुका प्रयास गंभीरतासँ रहित छल। १६०४ ई.क रॉबर्ट काउड्रेक कोश जकर नाम ’अ टेबल अल्फाबेटिकल’ आ कतेक आन कृति आ तकर अनुकरण केनिहार आन कृति सभ ओहि मानदण्डक अनुरूप नहि छल जे शेष यूरोपमे कोश निर्माणक परम्पराक अनुरूप होअए। मुदा पहिलुका द्विभाषी कोश सभ जाहिमे विदेशज फ्रेंच, इटालवी वा लैटिन शब्द सभ अंग्रेजीमे परिभाषाक संग सम्मिलित छल एहि सभसँ नीक छल आ ताहिमे १५९२ क रिचर्ड मुलकास्टरक ग्लॉसरी एकर एकटा उदाहरणक रूपमे राखल जा सकैत अछि। ई सभ तखनहु अरबी कोश सभक समकक्ष नहि छल जे ८म आ १४म शताब्दीक बीचमे संग्रहित भेल विशेषतः सामान्य काजक लेल रचित कोश सभ जेना ’लिसान अल अरब’ (तेरहम शताब्दी)।

अंग्रेजी जेना एकरा हम आइ देखैत छी, भाषाक वैश्विक इतिहासमे एकटा सापेक्षतया नूतन घटना अछि संभवतः मैथिलीसँ किछुए पुरान। ई एहि लेल किएक तँ जखन मैथिलीक सभसँ पुरान उपलब्ध ग्रन्थ ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखल जा रहल छल ओ समय रहए अंग्रेजीमे चौसरक। पाश्चात्य कोशमे सभसँ पुरान कोश तखुनका अक्कादी साम्राज्यमे रचित भेल जाहिमे सुमेरी-अक्कादी शब्द सूची रहए (आधुनिक सीरियाक एबलामे प्राप्त) आ एकर समय छल लगभग २३०० ई.पू.। मुदा सभसँ प्राचीन ग्रीक कोश ’एपोलोनियश द सोफिस्ट’ प्रथम शताब्दीक, ई होमरयुगीन शब्दपरिभाषा आ अर्थ सूचीबद्ध करैत अछि आ एकटा उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. उर्रा-हुबुल्लु शब्दार्थसूची जे एहने द्विभाषी शब्द सूचीक संग पुरान कोशीय लेखाक एकटा आर उदाहरण अछि जेकर तुलना तेसर शताब्दीक चीनी परम्परे सँ कएल जा सकैत अछि। प्रारम्भिक जापानी प्रयास ६८२

ई.क चीनी अक्षरक नीना ग्लॉसरी आ सभसँ पुरान उपलब्ध जापानी कोश तेनरेइ बान्शो मैगी (८३५ ई.) सेहो महत्त्वपूर्ण प्रयास छल। भारतमे वैदिक साहित्यक संरक्षण व्याकरण आ कोशीय रचनाक लेल सभसँ पैघ उत्प्रेरक छल। संस्कृतक पाणिनीय आ दोसर वैयाकरणिक परम्परामे ई एकटा सामान्य आ पूर्णतः आधारभूत कार्य रहए- वैदिक वाक्यकेँ शब्दमे खण्ड-खण्ड करब आ शब्दकेँ खण्ड करब धातु-प्रत्ययमे। एहि क्रममे शाब्दिक संरचना, भाषायी ध्वनि तन्त्रक संग संरचनात्मक-ध्वन्यात्मक सिद्धांत सभ सेहो विकसित भेल। ई विश्वास कएल जाइत अछि जे निघण्टु (७०० ई.पू.) पर यास्क एकटा निरुक्त नाम्ना भाष्य लिखलन्हि जे आइ सभसँ पुरान ज्ञात कृति अछि आ ई परम्परा सेहो पाली परम्परा धरि चलल। ओ सभटा कोशीय सामग्रीकेँ समानार्थी आ समानह्विजए-ध्वनि अनुसार सजेलन्हि। शास्त्रीय संस्कृतमे सभसँ लोकप्रिय कृति अछि अमरसिंहक अमरकोष (६अम शताब्दी)। कटालोगस कैटालोगोरम मात्र अमरकोषपर कमसँ कम ४० टा भाष्यक सूची दैत अछि जे प्राचीन भारतमे एहि समानार्थी कोशक महत्व आ लोकप्रियता देखबैत अछि। एहि तरहक आर कोश जे कम-बेशी अमरकोषक आधारपर रचित भेल आ एहिमे सम्मिलित अछि (संदर्भ मल्हार कुलकर्णी- TDIL अन्तर्जालपर):-

१. भोजक कृत नाममालिका (११म शताब्दी), २. सहजकीर्तिक सिद्धशब्दार्नव (१७म शताब्दी), ३. हर्षकीर्तिक शारदीयाख्यानाममाला (१७म शताब्दी), ४. धनन्जय भट्टक पर्यायशब्दरत्न, ५. कोशकल्पतरु, ६. नानार्थरत्नमाला- इरुगप दण्डाधिनाथ (१४म शताब्दी), ७. राघवक नानार्थमञ्जरी, ८. धरनीदासक धरणीकोश (१२म शताब्दी), ९. शिवदत्त मिश्रक शिवकोश, १०. सौभरीक एकार्थनाममाला-द्वक्षारनभमाला, ११. मकरन्ददासक परमानन्दीयनाममाला।

पहिल अधुनातन युगक संस्कृत कोश जे पाश्चात्य सिद्धांतकेँ प्रयुक्त कए बनाओल गेल से अछि प्रोफेसर एच.एच.विल्सन द्वारा संगृहीत आ १८१३ ई. मे प्रकाशित संस्कृत-अंग्रेजी कोश। दू टा भारतीय कोश तकर बाद आएल पं. सर राजा राधाकान्त देवक शब्दकल्पद्रुम आ पं. ताराकान्त तर्कवाचस्पतिक वाचस्पत्यम् ।

हमर विचारमे प्रयुक्त शब्दकोशशास्त्र आकि कोश संग्रहक विज्ञान वा कला जे अछि कोश सभकेँ विभिन्न कार्यक लेल लिखब आ संपादन करब आ ई सेहो ततबे महत्वपूर्ण अछि जतेक सैद्धांतिक कोशशास्त्र महत्वपूर्ण अछि। शब्दकोशशास्त्र शब्द एकटा कथ्यक रूपमे १६८० ई.मे आबि कए प्रयुक्त भेल जखन कि कोश शब्द अंग्रेजी भाषामे १५२६ ई. मे आबि कए प्रयुक्त भेल जेनाकि मेरिअम-वेब्सटर कोश कहैत अछि। हमरा सभकेँ कहल जाइत अछि जे कोशमे ई सभ सम्मिलित होएबाक चाही-

१. प्रिंट वा इलेक्ट्रॉनिक रूपमे संदर्भ स्रोत जाहिमे वर्णमालाक आधारपर सजाओल शब्द रहए, जाहिमे ओकर रूप, उच्चारण, कार्य, व्युत्पत्ति, अर्थ आ वाक्य रचना आ कहबी युक्त प्रयोग होअए।

२. एकटा संदर्भ ग्रंथ जाहिमे संबंधित कार्य-विषयक महत्त्वपूर्ण पदबंध आ नामक वर्णानुसार सूची होअए- संगमे ओकर अर्थ आ अनुप्रयोगक चर्चा सेहो रहए।

३. एकटा संदर्भ ग्रंथ जाहिमे एक भाषाक शब्दक लेल दोसर भाषामे समानार्थ देल रहए।

४. एकटा संगणकीय संशोधित सूची (दत्तांशशब्द वा शब्द पदक) जे सूचना प्राप्ति वा शब्द संसाधकक लेल संदर्भक रूप उपयोग कएल जा सकए।

एहि असाधारण आ समय साध्य कलाक अनुप्रयोगमे सम्मिलित कार्य सभमे ई सभ आवश्यक रूपमे सम्मिलित अछि:-

*प्रयोक्ताक निर्धारण आ ओकर आवश्यकताक निर्धारण

*सामान्यजनक शब्दशक्तिक आधारपर भाषिक शब्दक संख्याक निर्धारण आ एकटा निश्चित सीमित परिधिमे ओकर निर्णय

*परिभाषा आ विवरणक सज्जाक विषयमे निर्णय

*कोशक संदर्भमे सूचना संचरण आ विचार-क्रियाक निर्धारण

*कोशक विभिन्न अंगक निर्धारण दत्तांशक संग्रह आ प्रदर्शनक लेल उचित संरचनाक चयन (जेना आवरण-संरचना, संवर्गीकरण, वर्गीकरण, प्रसारण आ एकसँ दोसर अंशमे सन्दर्भ-संकेत)

*प्रधान शब्द आ जोड़एवला शब्दक चयन- पारिभाषिक शब्द बनएबाक लेल

*समानधर्मिता आ संधिकेँ चिन्हित करब

*अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला (आइ.पी.ए.) आ ब्लॉच एण्ड ट्रैगर चिन्हक प्रयोगसँ शब्द उच्चारणक निर्देश

*सुरुचिपूर्ण आ वर्ग-स्थान-विशेष बोली स्वरूपक योग

*बहुभाषिक कोशक लक्ष्य भाषाक लेल समानार्थी शब्दक चयन

*छपल आ इलेक्ट्रॉनिक दुनू तरहक कोशमे उपयोक्ताक लेल प्रवेशमार्ग बटन आ आन सुविधा

बिहारक गंगाक मैदान आ नेपालमे हिमालयक निचुलका पहाड़ीक तराइ क्षेत्र मिलि कऽ मैथिली आ मिथिलाक सांस्कृतिक क्षेत्रक निर्धारण करैत अछि, जे बहुत पहिने १९०८ ई. मे जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा चर्चित भेल, ओना ओ मुख्यतः भारतमे स्थित मिथिला क्षेत्रपर केन्द्रित रहल। एहि क्षेत्रमे बहुत रास परिवर्तन आ सीमाक पुनर्निर्धारण भेल। २०म शताब्दीक प्रारम्भमे ग्रियर्सन मैथिली भाषाक क्षेत्र सम्पूर्ण दरभंगा आ भागलपुर जिलाकेँ मानलन्हि। एकर अतिरिक्त ओ मैथिलीकेँ मुजफ्फरपुर, मुंगेर, पूर्णियाँ आ संथाल परगनाक बहुसंख्यक लोक द्वारा बाजल जाएवला भाषाक रूपमे चिन्हित कएलन्हि। मुदा आइ-काल्हि एहिमे सँ किछु अंश झारखण्ड राज्यक अंग भऽ गेल अछि।

एतए ई तथ्य आनब सेहो समीचीन होएत जे एहि बीच राज्यक मान्यताक क्रममे मात्र १७ मे सँ ५ जिला (ई अछि भागलपुर, पूर्णियाँ, सहरसा, दरभंगा आ मुजफ्फरपुर) बिहारक मैथिली भाषी क्षेत्रक रूपमे सामान्य रूपमे अभिहित भेल। पॉल ब्रास (१९७४) मैथिली

आन्दोलनक अपन वृहत् अध्ययन उत्तर भारतमे भाषा, धर्म आ राजनीति मे एकरा सामान्य रूपमे परिभाषित भौगोलिक क्षेत्रक रूपमे लेलन्हि। १९८० क दशकमे बिहारक ३१ जिलामे भेल विभाजनक बाद एकटा प्रोजेक्ट रिपोर्टमे ('द मैथिली लैंगुएज मूवमेन्ट इन नॉर्थ बिहार: अ सोशियो लिंगुइस्टिक इन्वेस्टीगेशन' नामसँ)जे संयुक्त रूपसँ हमरा, एन.राजाराम आ प्रदीप कुमार बोस द्वारा बनाओल गेल, हम सभ एहि निर्णयपर पहुँचल छलहुँ जे ३१ मे सँ ई सभ १० जिलाकेँ मैथिली भाषी क्षेत्र मानल जएबाक चाही: भागलपुर, कटिहार, पूर्णियाँ, सहरसा, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर आ वैशाली। से एहि भौगोलिक सीमाक परिवर्तन प्राकृतिक परिवर्तन (कोशी धार २०० बरखमे सात बेर अपन दिशा बदलने अछि) आ जिलाक पुनर्गठनक परिणामस्वरूप भेल अछि।

ई ककरो लेल एकटा पैघ चुनौती होएत जे मैथिलीक एकटा भीमकाय कोश बनेबाक प्रयास करताह जेना गजेन्द्र ठाकुर कएने छथि। ई परिस्थिति आर ओझरा जाइत अछि कारण मैथिलीक शब्द चयन अंशतः वा अधिकांशतः एहि सांस्कृतिक क्षेत्रमे बाजल जाएवला १२ टा आन भाषासँ संभवतः प्रभावित होइत अछि। एतए एहि लगभग १२ टा दोसर भाषाक वर्णन सेहो वर्णन योग्य अछि। मैथिलीक आस-पड़ोसमे भोजपुरी आ मगही अछि आ हिन्दी एहि सभपर ऊपरसँ आच्छादित अछि जे एहि तीनू भाषा समूहक लोक द्वारा बाजल जाइत अछि। मुदा बिहार एकटा बहु-भाषी राज्य अछि आ नेपाली आ बांग्ला भाषी सेहो एतए प्रचुर मात्रामे देखल जा सकैत छथि। एकर अतिरिक्त किएक तँ मैथिली भाषी झारखण्ड क्षेत्रमे सेहो पर्याप्त मात्रामे छथि, ई बुझबाक थिक जे ओराँव, मुण्डारी, हो, बिरहोर, धांगर, संथाली आ संख्यामे कम ऑस्ट्रिक भाषा समूहक वक्ता सेहो हुनका संग निवास करैत छथि। ओना तँ मिथिला क्षेत्रक बहुत रास मुस्लिम अपन मातृभाषा मैथिली देखबैत छथि मुदा बहुत रास एहनो छथि जे अपनाकेँ उर्दूभाषी घोषित करैत छथि। एहि सभ भाषामे मात्र चारि टा केँ सांवैधानिक मान्यता भेटल अछि- हिन्दी, उर्दू, बांग्ला आ नेपाली (पछाति संथालीकेँ सेहो)। हमरा विचारेँ मैथिलीक वाक्य-रचनापर, ऑस्ट्रिक भाषा समूह सहित, विभिन्न कोणसँ प्रभाव पड़ल अछि। मुदा कोशीय स्तरपर योग आ अनुकूलन सीमित स्रोतसँ भेल अछि जेना उर्दू, हिन्दी, भोजपुरी आ मगहीसँ। कोश आत्मसात करैत अछि देशी शब्दावलीकेँ देशज शब्दावलीक संग। ई एहि कारणसँ कारण हमरा विचारेँ बेशीसँ बेशी २५-

३०% वक्ता मैथिलीकेँ एकभाषीय रूपमे बजैत छथि। कारण शेष दोसर भाषामे सेहो नीक पइठ रखैत छथि। ओ मैथिली भाषी जे बिहारक पश्चिमी सिमानपर रहैत छथि, भोजपुरी सेहो बजैत छथि आ पटना-राँची-गया-मुंगेर-क्षेत्रमे रहनिहार मगही जनैत छथि आ सेहो हिन्दीक अतिरिक्त। मुदा एकटा अत्यल्प प्रतिशत कहू जे ३-५ % सँ कम्मे, एहन मैथिल छथि जे अंग्रेजीमे सेहो प्रभावी रूपमे बाजि सकैत छथि। मुदा अंग्रेजीसँ मैथिलीमे शब्दक आगम ततबे वृहत अछि जेना ई कोनो दोसर नव भारतीय भाषा (न.भा.भा.) सभमे अछि।

बहुत गोटे ई शंका व्यक्त कऽ सकैत छथि जे कतेक गोटे एहन होएताह जिनका गजेन्द्र जी सनक प्रयाससँ लाभ भेटतन्हि ? ओना तँ मैथिली भाषीक संख्याक आधिकारिक आँकड़ा स्थिर नहि रहल अछि मुदा एहि तथ्यक विस्तारसँ वर्णन आवश्यक अछि। जनसंख्याक आँकड़ा वास्तविक नहि अछि जेना २००१ ई.क जनसंख्याक ई आँकड़ा: (१,२१,७९,१२२)। एकरापर अविश्वास पक्का अछि। जखन हम देखैत छी जे मैथिली भाषीक संख्याक संदर्भमे दस बरखक अंतरालमे लेल जनसंख्या आँकड़ामे बहुत बेशी परिवर्तन अछि। ई १८९१ सँ दस बरखक अंतरालमे जनसंख्याक आँकड़ामे बढ़ल आ घटल संख्याक तुलनासँ स्पष्ट अछि:

१९०१-११: +३.१२%; १९११-२१: -०.७७%; १९२१-३१: +७.६८%; १९३१-४१: +९.१३%; १९४१-५१: गणना नहि भेल; १९५१-६१: +२२.३५%; १९६१-७१: +२०.८९%; १९७१-८१: +२४.१९%

तार्किक रूपेँ वास्तवमे मैथिली वक्ताक संख्या स्थिर रूपेँ बढ़ल अछि। हमर अनुमानसँ किछु संकेत देल जा सकैत अछि जे अनुमानित ४ करोड़ धरि पहुँचैत अछि। १८९११ मे ग्रियर्सन (१९०८) अनुमान कएलन्हि जे मैथिली भाषीक संख्या ९२,८९,३७६ अछि। एकर विरुद्ध १९६१क जनसंख्या आँकड़ा एकरा ४९,८२,६१५ कऽ दैत अछि। निश्चयरूपेण १९६१ क जनसंख्या आँकड़ा वास्तविक नहि अछि। ओना ग्रियर्सनक (१९०९) जनसंख्या आकलन जे हुनकर १८९१ ई. मे कएल सर्वेक्षणपर आधारित अछि, सभक द्वारा सम्मति प्राप्त नहि अछि। वर्तमान शताब्दीक प्रारम्भमे मैथिली निम्न क्षेत्रमे बाजल जाइत छल:-

(i) सम्पूर्ण दरभंगा आ भागलपुर; (ii) मुजफ्फरपुरक ६/७ भाग; (iii) मुंगेरक १/२ भाग; (iv) पूर्णियाँक २/३ भाग; (v) संथाल परगनाक ४/५ भाग जे जनगणना आँकड़ामे वर्णित हिन्दी भाषी छथि।

१८१६ ई. मे उत्तर दिसुका भाषायी क्षेत्र नेपाल राजशाही द्वारा स्थायी रूपसँ नेपालमे सम्मिलित कए लेल गेल। ताहि द्वारे भाषा बजनिहारक संख्या पर पहुँचबाक लेल नेपालक जनसंख्याक १४% हिस्सा आर जोड़ए पड़त। पॉल ब्रास (१९७४:६४-६) क गणना (जनसंख्या वर्ष १९०१ ई.) १८८५ ई.सँ उपलब्ध विभिन्न दस्तावेजक आधारपर करैत छथि आ १,६५,६५,४७७ संख्यापर पहुँचैत छथि। ई गणना ग्रियर्सनक आकलनकेँ आधार लए आ तकर बादक ८ दशकमे बिहारमे जनसंख्या वृद्धिकेँ आधार लए कएल गेल अछि। १९८१ क जनसंख्या आँकड़ाक आधारपर आ मिथिला क्षेत्रक बाहर पसरल मैथिलक संख्याकेँ जोड़ि कऽ आ १० जिलाक जनसंख्याकेँ (३१ जिलामेसँ) ध्यानमे राखि हम आ हमर सहयोगी १९८० क दशकक मध्यमे २,२९,७२,८०७ (सिंह, राजाराम आ बोस १९८५) क संख्यापर पहुँचलहुँ। ई संख्या हमर विचारमे जनसंख्याक दसवर्षीय वृद्धिकेँ ध्यानमे रखैत ४ करोड़ धरि पहुँचल अछि आ ताहि द्वारे बहुत रास लोक कोशक एहि भीमकाय प्रयाससँ लाभान्वित होएताह। ई सामान्यतः मानल जाइत अछि जे मैथिली मिथिला क्षेत्रक ब्राह्मण द्वारा बाजल जाइत अछि। ई एकटा पहिलुका कुप्रचार छल जे एकरा हिन्दीक बोलीक रूपमे सिद्ध करए चाहैत रहथि मुख्यतः हिन्दी भाषीक आधिकारिक संख्यामे वृद्धिक उद्देश्यसँ। मुदा उत्तरी बिहारक जाति संरचनाकेँ देखैत मैथिलीक जनसंख्या संबंधी आँकड़ा एकर सत्य कथा कहत। सापेक्षतया मैथिलीक बेस संख्या जे जनगणना रिपोर्टमे आएल, केँ एहि तथ्य मात्रसँ व्याख्यायित कएल जा सकैत अछि जे ओना तँ मैथिली भाषी जिलाक कतोक क्षेत्रमे ४६.८४% धरि मुस्लिम आ ३१.०६% धरि हिन्दू निवास करैत छथि, मैथिलीक लेल जे सहयोग आएल अछि से एहिमे सँ एकटा पैघ संख्या द्वारा मैथिलीकेँ अपन मातृभाषा घोषित कएने बिना संभव नहि छल।

मिथिलामे भाषा प्रयोगक एकटा सर्वेक्षण ई देखा सकैत अछि जे ओना तँ भाषाक औपचारिक क्षेत्र सभमे प्रयोग कम भेल अछि मुदा ई सेहो सत्य अछि जे एकर साहित्यिक उत्पादकता आ उपलब्धि आइ अखिल भारतीय स्तरपर बेशी नीक जकाँ सोझाँ आबि रहल

अछि तुलनात्मक रूपेँ जतेक ई आइसँ २० बरख पूर्व अबैत छल। मधुबनी चित्रकला वा मिथिला कला आइ भरि भारतमे सुप्रसिद्ध भऽ गेल अछि आ विश्व-बजार धरि पहुँचि गेल अछि। मात्र तखने जखन मैथिली भाषी नव-पीढ़ी अपन सांस्कृतिक भाषायी बोधसँ हटबाक निर्णय करताह तखने एकरा कोनो खतरा सोझाँ अएतैक। हमरा विचारेँ सांवैधानिक अधिकार नहि भेटनाइ अप्रत्यक्ष रूपमे मैथिलीक लेल वरदान साबित भेल कारण ई साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधिकेँ बल देलक। ई पहिनहियेँ बहुत रास सांवैधानिक मान्यता प्राप्त भाषा सभकेँ पाछाँ छोड़ि देलक, जेना मणीपुरी, कोंकणी, नेपाली आ सिन्धी सेहो। आ आब जखन की ई अष्टम सूचीमे अछि एकरा सभटा आधिकारिक आ आन तरहक संरक्षण भेटबाक चाही जकर ई अधिकारी अछि। एकरा एकर उपयोगकर्ताक सहयोग सेहो भेटबाक चाही जे आब आधुनिक अओजार सभक ताकिमे छथि जेना ऑनलाइन पत्रिका, ई-कोश, सुविधाजनक जंगम परिभाषा-कोश सभ आ स्वचालित प्रश्नोत्तर प्रणाली इत्यादि। ताहि स्तरपर मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ अंग्रेजी-मैथिली कम्प्यूटर शब्दकोश जे अन्तर्जाल आ छपल दुनू संस्करणमे उपलब्ध अछि, से संग्रहकर्त्ता द्वारा एकटा महत्वपूर्ण योगदान होएत। मैथिली भाषी समुदाय आ आन भाषाक अनुवादक-विद्वान द्वारा गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा विशेष प्रशंसाक पात्र छथि। ई सत्य अछि जे मैथिली कोश-विज्ञान बहुत बादमे विकसित भेल, म.म. दीनबन्धु झाक प्रयासक बहुत बाद आ आब जा कए हमरा सभक सोझाँ महत्त्वपूर्ण कार्य सभ आएल अछि जेना पं गोविन्द झा द्वारा कल्याणी कोश वा जयकान्त मिश्रक बृहत् मैथिली शब्दकोश, मतिनाथ मिश्र ‘मतंग’ क मिथिला शब्द कल्पद्रुम वा अलाइस डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली: अ मैथिली-नेपाली-अंग्रेजी वोकाबुलरी। संक्षिप्त मैथिली शब्दकोश आ द्विभाषी मैथिली शब्दकोश जे मैथिली अकादमी द्वारा संकल्पित अछि, अयनाइ एखन बाकी अछि। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन द्वारा संकल्पित (देखू www.ntm.org.in) लांगमैन- सी.आइ.आइ.एल. बेसिक इंगलिश- इंगलिश- मैथिली जे कॉर्पोरापर आधारित अछि सेहो एकटा रुचिगर उत्पाद होएत। मुदा सभटा कहला आ केलाक बाद एहि कार्यक महत्त्व समय बितलाक संगे अनुभूत कएल जाएत।

अध्याय-५

राजदेव मंडल

कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)

प्रिय बन्धु,

अहाँक दीर्धकाय ग्रंथ “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक” पढ़बाक सुयोग प्राप्त भेल। कतेको साहित्यिक कृति (उपन्यास, कविता, कथा-गल्प संग्रह, नाटक, महाकाव्य, बाल नाटक, बाल कथा, बाल कविता, प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना आदि)कैँ एकहि पुस्तकमे संग्रहित कए अहाँ पाठकक लेल एकटा तेहेन पुष्पमाला बना देलिएक जाहिमे लगैत अछि जे विभिन्न रंगक पुष्प एकहि जगह गाँथल हो। आ पाठक वृन्द साहित्यक कोनहु स्वाद एहि दीर्घ पोथीसँ प्राप्त कए सकैत छथि। निश्चय अपनेक ई प्रयास साहित्यक लेल नवीन अछि संगहि कर्मठताक साक्ष्य....।

हम कोनहु पैघ समीक्षक नहि छी तेँ समीक्षा करबाक दायित्वपूर्ण कार्यक लेल अक्षम छी। तथापि अहाँक पुस्तक पढ़लाक उपरान्त मनमे जे विचारक उद्भव होएत ताहिसँ अवगत करा देब एकटा दायित्व सन बुझैत छी। तेँ किछु अपन विचार पठा रहल छी।

बन्धु, प्रथमत: ई कहबामे हमरा कनियो संकोच नहि होइत अछि जे मैथिली साहित्यक लेल जे अपने साहित्य आन्दोलनक कार्य कऽ रहल छी से साहित्यक लेल तँ ऐतिहासिक अछिए संगहि मैथिली प्रेमी, मिथिलावासी सेहो अहाँक एहि सुकार्यकैँ कहियो नहि भूलत-बिसरत।

बालकथा

अहाँ मिथिलांचलमे पसरल छोट-पैघ कथा सभकैँ नवीन रूपैँ संग्रहित कएने छी। अहाँक एहि प्रयाससँ विलुप्त होइत कथा सभ पुन: जीवन्त भऽ उठल अछि। बगियाक गाछ बचपनावस्थामे दादीक मुँहसँ सुनने रही। आइ पुन: पढ़बाक अवसर भेटल।

राजा सलहेस, महुआ घटवारिन, नैका-बनिजारा, जट-जटिन इत्यादि कथा सभ पढ़लासँ लगैत अछि जे ऐतिहासिक बहुत गूढ़, तथ्यपूर्ण बात सभ सोझा आएल अछि। क्षिप्रताक साथ अग्रसर होइतो सब बातक संकेत धरि आबि गेल अछि आ ओहि प्राचीन समएक दशा आ दिशाक ज्ञान सहजहिं परिलक्षित भऽ रहल अछि। सामाजिक जिनगीक क्रिया-कलापक वर्णन करैत अहाँ जे चित्र उपस्थित कएने छी ताहिमे ओहि काल-विशेषक प्रेम-घृणा, संयोग-वियोग, उन्नति-अवनति, बैर-प्रीत, शांति-अशांति, वीरता-कायरता, मुर्खता-विद्वता सबटा भिन्न-भिन्न रूपेँ प्रगट भेल अछि। पढ़ैत काल लगैत अछि जे हम दोसर संसारमे प्रवेश कएने छी। ओहि समएकेँ जँ एखुनका समएसँ तुलना करैत छी तँ बुझि पड़ैत अछि जे विकास कते तीव्र गतिसँ भऽ रहल अछि। आ एहि पुरान भेल जिनगीक कथापर कलम चलौनाइ कोनो साधारण गप्प नहि अछि। विषए-वस्तु सभपर जे अहाँ संतुलन बनौने छी से समए आ परिस्थितिक अनुकूल अछि।

संकर्षण-नाटक- अपाला आत्रेयी-दानवीर दधीची

अपाला आत्रेयी आर दानवीर दधीची- एहि दुनू बाल नाटकमे अहाँ कथा किछु नव रूपे प्रकट कएने छी। से पात्रक अनुरूपे अछि। कथोप-कथनमे प्रवाह अछि आर छोट-छोट वाक्यक प्रयोग अछि, जे नाटकीयतामे प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। जेना दानवीर दधीचीक एकटा कथोपकथन: “दधीची- इन्द्र। कुरूक्षेत्र लग एकटा जलाशय अछि जकर नाम अछि, शर्यणा। अहाँ ओतय जाउ। ओतय घोड़ाक मुड़ी राखल अछि.....। ओहिसँ नाना प्रकारक शस्त्र बनाउ।”

बाल नाटक- बालकेँ ज्ञान बृद्धिक लेल सेहो उपयोगी अछि।

संकर्षण

नाटक एकटा नवीन चरित्रसँ परिचित करबैत अछि। जे गामक लोककेँ ठकनाइकेँ नीक बुझैत अछि। ईएह अवगुणकेँ प्रतिभा बुझैत रहैत अछि। अवगुणक प्रतिफलपर कनेको विचार नहि करैत अछि। वएह बेकती जखन दिल्ली सन महानगर जाइत अछि तँ रास्तामे स्वगं ठका जाइत अछि। लालकिलामे जूता किनबा काल ओकरा पता चलि जाइत अछि जे

ओ ठक विद्यामे कतेक पाछू अछि, उदाहरण रूपेँ एकटा कथोपकथन: "गोनर- अहाँकेँ ठकि लेलक। अहाँक नाम तँ बुझनुक लोकमे अबैत अछि। संकर्षण- मित्र की कहू?......। एहि लालकिलाक चोर बजारक लोक सभ तँ कतेको महोमहापाध्यायक बुद्धिकेँ गरदामे मिला देतन्हि।"

छोट छीन कथोपकथन द्वारा व्यंग्य, हँसी आ गम्भीर बातकेँ सहज ढंगसँ कहि देब अहाँक लेखनीक विशेषता थीक। नाटकक आकार लघु अछि जे नवीनताक सूचक अछि। तथा मिथिलामे पसरल बहुत रास बातकेँ समेटबाक प्रयास निश्चय सराहनीय अछि। मंचित करबाक लेल दिशा निर्देश नीक ढंगे कएल गेल अछि। नाटक पठनीयता संगे नाटकीयतासँ परिपूर्ण अछि। आर संकर्षण आकर्षणसँ भरल अछि।

गल्प गुच्छ- (कथा संग्रह)- कथा सभकेँ पढ़लहुँ जे गल्प गुच्छमे संग्रहित अछि। पढ़ैत काल स्मरण भेल- एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाक किछु शब्द- कथा स्वतंत्र विधा अछि। एहिमे संक्षिप्ताक संगहि अत्यधिक संगठित तथा पूर्ण कथा रूप हेबाक चाही। ओना जिनगी कथा अछि आ कथा जिनगी अछि। आ जिनगी जे निरन्तर नवीनताकेँ प्राप्त कऽ रहल अछि। गल्प गुच्छ पढ़ैत काल जे कथा वा पाँति बेसी प्रभावित कएलक ओहि सबहक विषयमे कहब आवश्यक बुझाइत अछि। नीक-अधलाह कहबाक अधिकार तँ पाठककेँ होइते अछि।

नव सामन्त- आब सामन्तवादी युग नहि रहल। किन्तु सामन्ती प्रवृति एखनो जीअते अछि। हँ, ओकरा रूपमे परिर्वन भऽ गेल अछि। आ ओ भिन्न-भिन्न रूपे समाजमे आइयो दृष्टिगोचर भऽ गेल अछि। एहि कथामे एकटा नव सामन्तक नवीन रूप लक्षित भऽ रहल अछि।

सर्वशिक्षा अभियान- कथाक माध्यमसँ दलित आ गरीबक धीया-पुताकेँ पढ़ेबाक लेल उदासीनताक भावना व्यक्त भेल अछि, सरकार द्वारा मुफ्तमे देल गेल पोथी अदहरमे बेचि लैत अछि। कथाक पाँति- "आ दुसाधटोली, चमरटोली आ धोवियाटोलीसँ सभटा किताब सहटि कऽ निकलि गेल।"

थेथर मनुक्ख- एहि कथासँ स्पष्ट होइत अछि जे मनुक्खक पूर्ण अद्य:पतन भऽ गेल अछि। एतेक जे मनुक्ख चिड़ै-चुनमुनी, परबा पौरकी धरिसँ नीचा उतरि थेथर भऽ गेल अछि।

स्त्री-बेटी- एहिमे समाजमे स्त्रीगणक महत्वहीनता आ संगहि करवट लैत सामाजिक स्थिति-परिस्थितिक चित्रण भेल अछि।

बिआह आ गोरलगाइ- क्षण-क्षणमे मनुक्खक बदलैत रंग गिरगिट जकाँ...... आ दहेजक लोभी बेकती संतोषी सन बेवहार देखा कऽ स्वयं लज्जित होइत छथि। आइयो कोन कोन रूपेँ दहेज लोभी दबकल अछि समाजमे आ कोन-कोन प्रपंची चालि चलि रहल अछि। से एहि कथासँ बुझाइत अछि। नीक चित्रण भेल अछि।

प्रतिभा- चालाकी आ प्रतिभा दुनू अलग-अलग बात छैक। प्राप्तिक लेल दुनूमे सँ कोन महत्वपूर्ण सएह देखेबाक यत्न भेल अछि।

मिथिलाक उद्योग- किछु कथाक कोनो गप्प पाठककेँ दीर्घकाल तक झंकृत कएने रहैत अछि। एहि कथामे गदहापर लादल जे संदेश भेटि रहल अछि से बहुत दिन धरि पाठककेँ स्मरणमे रहत।

रकटल छलहुँ कोहबर लय- स्त्री-पुरूषक बीच बनैत-बिगड़ैत सम्बन्ध आ छल-प्रपंच अपने-आपकेँ ठकइ आ ठकाइबला गप्पक मार्मिक विश्लेषण एहि कथा द्वारा भेल।

हम नहि जाएब विदेश- कोन बेकतीकेँ हृदयमे कतेक कष्ट-पीड़ा आ हँसी-खुशी भरल अछि। ओकरा पूर्णतया उत्खनन करनाइ सम्भवो नहि अछि तथापि कथाकार तँ प्रयास करबे करता। एहि कथामे द्विजेन्द्रक मोनक व्यथाक कथा पूर्णरूपेण उजागर भेल अछि। एकटा पाँति- “कोन सरोकार माएसँ पैघ छल यौ लाल। जे अहाँ कहैत छी जे हम ककरोसँ सरोकार नहि रखने छी।”

राग बैदेही भेरवी- एहि कथामे एकटा कलाकारक जिनगीपर रोशनी देल गेल अछि। कोना एकटा साधारण गामक गबैया सुख-दुख, सफलता आ विफलतासँ लड़ैत उच्चताकेँ प्राप्त कएलक तकर विशद वर्णन भेटैत अछि।

बाढ़ि भूख आ प्रवास- हास्य-व्यंग्यसँ पूर्ण कथा अछि। लघु आकारक रहितहुँ ई कथा बहुत रास गप्पकेँ समेटने अछि। भूख आ भूखक कारणे उठैत मनक तरंग आ ओहि कारणे बेकती कतऽ सँ कतए प्रवास करैले जाइत अछि। आ ओहू स्थानपर कोना आशापर तुषारपात होइत अछि। एहि पाँतिकेँ पढ़लासँ स्वत: हास्य उपस्थित भऽ जाइत अछि। “सरकार हम तँ ट्रेनसँ आएल छी मुदा अहाँ कोन सवारीसँ अएलहुँ जे हमरासँ पहिनहिसँ विराजमान छी?”- बैदिक जी अल्हुआसँ हाथ जोड़ि कहैत अछि।

नूतन मीडिया- आधुनिक मिडिया कोन तरहेँ चलि रहल अछि। से उजागर भेल अछि।

जाति-पाति- एहि कथाकेँ पढ़लाक बाद पाँति याद अबैत अछि- “देखनमे छोटन लागै जाति पातिक दंश।”

बहुपत्नी बियाह आ हिजड़ा- एहि कथामे एकसँ अधिक पत्नी कएलासँ जे समाजमे सड़ांध पैदा भऽ रहल अछि, कोन-कोन रूपेँ ओकर बिकार निकलैत अछि तकर वर्णन भेल अछि। किछु पाँति- “...भातिज सभकेँ नहि मानैत छिऐक तैं भगवान बच्चा नहि देलन्हि।”

बाणवीर- एहि कथामे बाणवीरक मनोविश्लेषण नीक जकाँ भेल अछि। समूहसँ कटल बाणवीर कतेक अथाह पीड़ामे संघर्ष करैत जिनगीक एक-एक पल कटैत रहैत अछि से कथासँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। बाणवीरक एहि कथनमे कतेक मर्म छिपल अछि- “माए बाबू! हमरा बुझल अछि जे हमर बियाह दान नहि होएत। मुदा अपन पेट तँ कोहुना हम गाममे भरिए लैत छी। गुजर तँ कइए लैत छी। लोक सभ कहैत रहए जे तोहर माए-बाप तोरा बेचि देलकउ। से ठीके अछि की?”....कन्नारोहट उठि गेल।

अनुकप्पाक नोकरी- लोककेँ बाप मरलापर नोकरी भेटैत छैक। हुनका भाएक मरलापर भेटलन्हि। एहि कथाक सार अछि।

मृत्युदंड- कथा द्वारा देखाओल गेल अछि जे कोना बालिका आर्याकेँ मृत्युदंड मिल जाइत अछि जेकर कोनो दोष नहि छल। बेगुनाहकेँ दण्ड। सेहो मृत्युदंड। एहेन अछि एहिठामक समाज। जेकरा सहजताक संग स्वीकारो कऽ लेल जाइत अछि। एखनुक समाजक दर्पण जकाँ कथा लगैत अछि।

एहि तरहेँ गल्प गुच्छक कथा सभक बाद बुझाइत अछि जे वर्तमान समस्याक यर्थाथ रूप प्रगट भेल अछि। छोट-छोट दृश्य खंड काव्यात्मक रूपसँ सोझा आएल अछि। कथावस्तुमे मिथिलाक माट-पानिक गंध अछि। किछु कथा अत्यन्त लघु तथापि उदेश्य प्रकट भऽ गेल अछि जे सम्पूर्ण देशक यथार्थकेँ समेटने अछि।

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)- प्राचीनकालहिसँ सहस्त्रबाढ़निक विषयमे उत्सुकताक संगहि अनुमान कएल जाइत रहल अछि। अनुमानित व्याख्या आ समीक्षा होइत रहल अछि। विज्ञान द्वारा अलग ढंगसँ आ साहित्य तथा आध्यात्म द्वारा अलग-अलग ढंगसँ। अहाँक उपन्यासक पात्र एहि सम्बन्धमे कहैत अछि-

"खसैत लहास, कनैत हुनकर सबहक परिवार। सपनामे अबैत रहल ई सभ सहस्रबाढ़निक रूप बनि कए। हमरे सन कोनो शापित आत्मा अछि ओ सहस्रबाढ़नि जे अपन संघर्ष अधखिज्जू छोड़ि मरि गेल होएत आ आब ब्रहमाण्डमे घुरिया रहल अछि। आब देखू तीनू बच्चाक परीक्षा परिणाम सभदिन प्रथम करैत अबैत रहथि, आब की भऽ गेलन्हि। हम जे संघर्ष बीचमे छोड़लहुँ तकर छी ई परिणाम।" नन्द हबोढ़कार भऽ कानए लगलाह।

एहि पाँतिकेँ जँ गम्भीरतासँ आत्मसात करए लगलहुँ तँ मात्र नामेटा नहि संगहि उपन्यासक सारतत्व एवं उद्देश्यो प्रगट भऽ गेल। नन्दक चरित्र आर हुनका द्वारा कएल गेल संघर्षक रूप तथा मनक मनोविज्ञान स्पष्ट भऽ जाइत अछि। उपन्यासक भाषा शैली नवीन ढंगक अछि। वर्णनात्मक शैलीमे आरम्भ भेल अछि। भाषामे चित्रात्मकताक एकटा उदाहरण- "एकदिन कलितकेँ देखलहुँ जे ठेहुनियाँ दैत आगू जा रहल छथि। आंगनसँ बाहर भेलापर जतए आँकर-पाथर देखलन्हि ततए ठेहुन उठा कऽ मात्र हाथ आ पएरपर आगू बढ़ए लगलाह।"

किछु एहि तरहक शब्दक प्रयोगसँ भाषामे आकर्षण आबि गेल अछि। जेना थाम्ह-थोम्ह, कानब-खीजब, काज-उद्यम, जान-पहचान, बूढ़-पुरान, घुमब-फिरब, टोका-टोकी, संगी-साथी, झगड़ा-झाँटी, तंत्र-मंत्र, पढ़ाइ-लिखाइ इत्यादि। उपन्यासक भाषा मैथिली पाठकक अनुकूल अछि जहिना लोक बजैत छथि तहिना सहज ढंगसँ वर्णित अछि।

झिंगुर बाबू, नन्द आ नन्दक भैया, भातिज, बेटा, नवल, आरूणि आ हुनक माए-बाबू, बहिन, कलित आ हुनक पत्नी, शशांक, मणीन्द्र, भौजी, शोभा बाबू, बुचिया इत्यादि पात्रक माध्यमसँ कथावस्तुक संगहि चरित्रक विकास भेल अछि। जाहिमे मौलिकताक संगहि स्वाभाविकता अछि। नव दृष्टिकोणसँ सहजताक संग चरित्र सबहक विकास भेल अछि। जे उपन्यासक अनुकूल अछि। मिथिलाक नदी-कमला, कोशी, बलान आदिक वर्णन भेल अछि। संगहि एहिठामक गाम घर- झंझारपुर, मेंहथ, गढ़िया, नरुआर, कछवी आदिक वर्णनसँ सहजहि कथामे मिथिलाक माटि-पानिक गंध आबि गेल अछि। कथोपकथनमे संक्षिप्ता आ सहजता अछि। उदाहरण स्वरूप किछु अंश देखल जा सकैत अछि।

आरूणि दू-तीन कौर खा कऽ उठि गेलाह। हुनकर संगी करण पुछलखिन्ह-

"पता नहि। घबराहटि भऽ रहल अछि।"

"काल्हि ट्रेनिंगपर जएबाक अछि ने। ताहि द्वारे।"

"पता नहि।"

ताबत भीतरसँ अबाज आएल। सभ क्यो दौगलाह।

कथोपकथन जीनगी आ पात्रानुकूल अछि।

"की बजलहुँ बेटा"- माए पुछलखिन्ह।

"नहि। ई कॉलोनी देखि कऽ किछु मोन पड़ि गेल।"

"नहि देखू ई पपियाहा कॉलोनीकेँ।"

उपन्यास मनोविश्लेषणक संगहि दर्शनसँ सेहो पुष्ट अछि।

“पृथ्वी विशाल अछि आ काल निस्सीम, अनंत। एहि हेतु विश्वास अछि जे आइ नहि तँ काल्हि क्यो ने क्यो हमर प्रयासकेँ सार्थक बनाएत।”

आशाक संचार करएबला ई वाक्य बारम्बार मनमे उठैत अछि। जिनगीक संचालित करबाक लेल तँ आवश्यक अछि जिनगीक रस। वएह रस थिक- आशा। जँ जिनगीमे आशा, अभीप्सा नहि होइ तँ जीवन निरर्थक।

“आरूणिकेँ लगलन्हि जे ओ झोंटाबला सहस्त्रबाढ़नि झमारि कए एहि विश्वमे फेक दैत छन्हि हुनका।”

कथीले किछु किएक से प्रश्न उठैत अछि मनमे। यएह प्रश्न पाठककेँ बेर-बेर सोचैले मजबूर करैत अछि- बहुत रास गप्प। आ एक प्रश्नसँ जन्मैत अछि बहुत प्रश्न जे पाठककेँ एकटा अलग संसारमे लऽ जाइत अछि।

मनुष्यक प्रवृतिक सम्बन्धमे ई पाँति देखल जा सकैत अछि- “मनुष्यक प्रवृत्तिये होइछ, समानता आ तुलना करबाक, साम्य आ वैषम्यक समालोचना आ विवेचनामे कतेक गोटे अपन जिनगी बिता दैत छथि। आरूणि आ नन्दक बीच सेहो अनायासहि साम्य देखल जा सकैत अछि।”

उपरसँ मानव भिन्न-भिन्न प्रवृत्तिक होइत अछि। किन्तु मूलमे गहराइसँ अन्वेषण कएल जाए तँ किछु तलपर सभ मनुष्य लगभग साम्य होइत अछि। अन्तमे वएह रस नि:सृत होइत रहैत अछि। किन्तु ओतेक शान्त भाव आ ओतेक गम्भीरतासँ स्वंयकेँ देखनाइ सहज गप्प तँ नहि थिक। उपन्यासक आकार लघु रहितहुँ कथा वस्तुक पूर्ण विकास भेल अछि। कथाक अनुकूल भाषाक संतुलित ढंगसँ प्रयोग भेल अछि। नव वस्तुक नवीन दृष्टिकोणसँ अभिव्यक्ति भेल अछि। मौलिकतासँ पूर्ण अछि।

वर्तमानमे मैथिली साहित्यक प्रगतिक लेल अहाँ सन बेकतीक आवश्यकता अछि। जे एकभगाह होइत मैथिलीकेँ संतुलित करता आ संगहि स्वयं तँ अग्रसर होएबे करताह दोसरोकेँ आगू बढ़बाक सुअवसर देताह। एहि दृष्टिकोणसँ अहाँक प्रयास अवर्ण्य अछि।

एकटा पाँति स्मरण भऽ गेल-

अहीं सन मैथिली सेवकपर

अछि हमरा सबहक आस

भरब भण्डार मैथिलीक

अछि पूर्ण विश्वास।

सहस्त्राब्दीक चौपड़पर

सहस्त्राब्दीक चौपड़पर बैसल अहाँ जिनगीक खेल देखा रहल छी। गहन अन्वेषण करैत एक-एकटा चित्रक रचना कऽ रहल छी आ ओइ उमंगमे डूबि रहल छी।

“असीम समुद्रक कातक दृश्य

हृदय भेल उमंगसँ पूरित....।”

अहाँक अन्तरक कवि रविक चित्र उपस्थित करैत कहैत अछि-

“सूर्य किरण पसरि छल गेल

कतेक रहस्य बिलाएल

तिमिरक धुँध भेल अछि कातर

मुदा ई की.......।”

संग्रहमे किछु हैकू पढ़बाक सुअवसर भेटल। किछु सुआद बदलबाक लेल....।

मिथिलांचलक गमकसँ अहाँक कविता हमरा सबहक मोनकेँ गमका रहल अछि :

“मोन पाड़ैत छी धानक खेत

झिल्ली कचौड़ी

लोढ़ैत काटल धानक झट्टा

ओहि बीछल शीसक पाइसँ कीनल

लालझड़ी

जेकरे नाओं लाल छड़ी आ

सतघरिआ खेल....।”

प्रवासमे रहैत स्मरण होइत गाम घर। ऐ पाँतिमे वियोगक ओइ व्याथाक वर्णन भेटैत अछि। एकटा नवीन लयक संग-

“पता नहि घुरि कऽ जाएब

आकि एतहि मरि-खपि

बिलाएब.....।”

ऐ व्यंग्यमे स्पष्ट दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि।

“लाठी मारबामे कोनो देरी नहि

बाछी भेलापर शोको थोड़ नहि

परन्तु छी पूजनीया अहाँ....।”

बाढ़सँ उत्पन्न भेल समस्या आ ओकरा छोट-छीन पाँतिमे समेटनाइ गागरमे सागर भरबाक प्रयास ऐ पाँतिमे परिलक्षित भऽ रहल अछि -

“ठाम-ठाम कटल छल छहर

ऊपरसँ बुन्नी पड़ि रहल

सभटा धान चाउर भीतक कोठी

टूटि खसल पानिक भेल ग्रास...।”

नव-नव बिम्बसँ कविता सभ पूरित अछि -

“सहस्रबाढ़नि जकाँ दानवाकार

घटनाक्रमक जंजाल

फूलि गेल साँस

हड़बड़ा कऽ उठलहुँ हम....।”

हड़बड़ा कऽ नै बल्कि अहाँ सचेत भऽ कऽ उठलहुँ। नव-नव चित्र ध्वनि लऽ कऽ नवीन दृष्टिक संगे। पता नै कतऽ धरि जाएब। कतऽ गंतव्य अछि अहाँक।

“विश्वक मंथनमे

होएत किछु बहार आब....

पथक पथ ताकब.....

प्रयाण दीर्घ भेल आब....।”

प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना

प्रारंम्भमे फील्ड वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत अछि। ई लोक कथा मार्मिक अछि संगहि शिक्षा आ उपदेशसँ भरल। सतमाएक चरित्र केहेन होइत अछि आ केहेन होएबाक चाही से स्पष्ट भेल अछि। समाज द्वारा बिसरल जा रहल ऐ कथाकेँ अहाँ पुन: जीवन्त कएने छी जइमे माए-बाप बेटा आ सतमाएक मर्मस्पर्शी वर्णन भेल अछि। वर्तमानमे सीत-बसंत नाच बिहारक गाम-गाममे लोक मानसकेँ आनन्दित कऽ रहल अछि।

दोसर अछि मायानन्द मिश्रक प्रथमं शैल पुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधन। जे वेदकालीन इतिहासपर आधारित अछि। जेकर समीक्षा इतिहास आ साहित्य दुनू आधार लऽ अहाँ नीक जकाँ प्रस्तुत कएने छी।

एकर बाद अछि केदान नाथ चौधरी जीक दूटा उपन्यास, चमेली रानी आ माहुर। ई पाठक द्वारा समादृत उपन्यास अछि। एकर समीक्षा अहाँ नीक तरहेँ कएने छी। अहाँ कहने छी जे-नव समीक्षा कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।

नो एंट्री : मा प्रविश नचिकेता जीक नाटक अछि। जकर अहाँ किछु नव तरहेँ समीक्षा करबाक प्रयत्न कएने छी।

कविशेखर ज्योतिरीश्वर शब्दावली, विद्यापति शब्दावली, कवि चतुर्भुज शब्दावली आ बद्रीनाथ झा शब्दावली द्वारा मैथिली शब्द भंडारक विशद वर्णन कएल गेल अछि।

मैथिली हैकू आ क्षणिकाक सिद्धांत पढ़बाक अवसर भेटल।

मिथिलाक बाढ़ि जे एतुक्का रहनिहारक लेल प्रलय बनि अबैत अछि। ऐ समस्या आ सरकारी प्रयासक वर्णन नीक जकाँ भेल अछि।

विस्मृत कवि पं. रामजी चौधरीक रचनाकेँ पाठकक सोझा रखबाक प्रयास। वास्तवमे ई अहाँक अविस्मरणीय कार्य अछि।

विद्यापतिक बिदेशिया- पिआ देसाँतर- ऐमे किछु नव तथ्य सभ सोझा आएल अछि।

बनैत-बिगड़ैत सुभाष चन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षामे अहाँ द्वारा सार्थक प्रयास भेल अछि। ई कथन जे “ओ कथाक माध्यमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्प आ कथ्य दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कए कथाकेँ सार्थक बनबैत छथि।” ऐ कथा संग्रहक अहाँ विशद रूपेँ समीक्षा कएने छी।

अन्तर्जालपर मैथिली- ऐमे नवीन एवं ज्ञानवर्द्धक तथ्य सभ पाठकक लेल परोसने छी। आजुक समएमे एकर ज्ञान आ अनुभव बड्ड आवश्यक भऽ गेल अछि।

लोरिकक गाथामे समाज ओ संस्कृति- ऐ गाथामे ओइकालक समाज ओ संस्कृति एवं राजनीतिक पक्षकेँ अहाँ उजागर कएने छी।

मिथिलाक खोज- अहाँ करैत रहलहुँ गाम-गाम। संगहि पाठककेँ स्थान सभसँ परिचित करबैत सराहनीय कार्य कएलहुँ।

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (गीत प्रबन्ध)- गीत प्रबन्धमे जीवनक अत्यन्त व्यापक चित्रण उदात्त मानवीय अनुभूतिक रूपमे प्रगट कएल गेल अछि।

अहाँ प्रारम्भमे लिखने छी-

“ई भारत ग्रंथ

जयक जाहिमे गान

तखन कहिया सँ भेलाह एतुक्का लोक

कर्महीन, संकीर्ण.....।”

अहाँ अन्त ऐ पाँतिसँ कएने छी-

“असञ्जाति मनक ई सम्बल

देलहुँ अहाँ हे बुद्ध

हे बुद्ध- हे बुद्ध।”

ओना आब महाकाव्य कम लिखल जा रहल अछि। किन्तु साहित्यक सभ विधा जीअत रहबाक चाही। ऐ परम्पराकेँ अहाँ द्वारा आगू बढ़ेबाक प्रयास भेल अछि। धर्म-उपदेशपर आधारित पौराणिक कथाकेँ अहाँ कथावस्तुक रूपेँ किछु नूतन तरहेँ सजेबाक प्रयास कएने छी। अभिव्यक्ति लेल तत्सम शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि। ओना पात्रानुकूल ओहन शब्द आनब आवश्यके छल। शीर्षक कहबामे काठिन्य सन अनुभव भेल। ताद्यपि रचना आदर करबाक योग्य अछि।

बाल कविता- ऐमे उपदेशक संगहि मनकेँ रंजित करबाक क्षमता होएबाक चाही। जे उत्सुकता बनौने रहए।

नव-नव मोहक दृश्य देखबैत अहाँ बच्चा सभकेँ नव संसारसँ परिचित करबाक प्रयास कएने छी। जेना-

“मेहनति अहाँ करू

फल हमरा दिअ.....।”

दोसर पाँति -

“मुइलपर भाबहु की भैंसुर केलहुँ अततह समए बदलल नहि बदलल ई गाम हमर।।”

निश्चय एतेक रास बाल कविता रचि अहाँ बाल साहित्यक भण्डार भरबाक सराहनीय प्रयास कएने छी।

अन्तमे, यएह जे साहित्यक सभ विधाकेँ एक्केठाम संग्रहित करबाक एकटा नव प्रयोग भेल अछि। व्याकरण आ भाषाक शुद्धता अछि।

पोथीक लेल यएह कहब जे अहाँ भिन्न-भिन्न प्रकारक पुष्पसँ सुसज्जित एहेन पुष्पवाटिका बनेलहुँ जइमे प्रवेश कऽ पाठक जेहने आकांक्षा करत तेहने रूप, गंध प्राप्त करत आ हमरे जकाँ आनन्दित भऽ कहत- “धन्यवाद।”

अध्याय-६

डॉ. अरुण कुमार सिंह- प्रियवर सम्पादकजी- (सम्पादक विदेह, गजेन्द्र ठाकुरकेँ सम्बोधित)

डॉ. अरुण कुमार सिंह, एल. डी. सी. आई. एल., भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-६. जन्म स्थान- अर्राहा, पो.- अर्राहा, भाया- मठाही, थाना- घैलाढ़, जिला- मधेपुरा, बिहार, पिन- ८५२१२१.

प्रियवर सम्पादकजी- (सम्पादक विदेह, गजेन्द्र ठाकुरकेँ सम्बोधित)

प्रियवर सम्पादकजी

यथोचित

अहिना सम्पादकीय लिखैत रही

हम मने-मन हर्षित होइत रही

हम सत्यसँ भेंट करैत रही

शब्दक अर्थ बुझैत रही

गरल मुर्दाकेँ उखारैत रही

नव-नव इतिहास बनाबैत रही

मिथिला, मैथिली एवं मैथिलकेँ परिभाषित करैत रही

युग-युगसँ परिव्याप्त गलतफहमीकेँ सुधारैत रही

परिवारवादसँ मैथिलीक रक्षा करैत रही

वर्त्तमानक कुचक्र चालिक पर्दाफाश करैत रही

मैथिलीक हत्याराकेँ सजा दियाबैत रही

मैथिल, ननमैथिल एवं सोइतक झगड़ाक फरिच्छोंठ करैत रही

मैथिलीक आवाजकेँ जनता-अदालत धरि पहुँचाबैत रही

आक्रोशितक आक्रोशकेँ आशीर्वचण बुझि अपनाबैत रही

मैथिलीकेँ लहटा दिस जएबामे मदति करैत रही

मैथिलीक प्रकाण्ड विद्वान प्रोफेसरकेँ शुद्ध- शुद्ध उच्चारण सिखाबैत रही

कब्रमे लटकल पाइरकेँ अपन प्रतिष्ठा बचैबाक पाठ पढबैत रही

अवसरवादीक अवसरवादिताकेँ बाँचैत रही

वैशाखी छोड़ि अपना बलेँ ठाढ़ होइत रही

मिथिलाक्षरकेँ पुनरस्थापित करबाक प्रयास करैत रही

विधि, विज्ञान,वाणिज्य एवं नव-नव प्रौद्योगिकीक संग मैथिलीकेँ जौड़ैत रही

मिथिला,मैथिलीक विकासमे सदति लागल रही

सम्पूर्ण विश्वमे अपन स्थान निर्धारित करैत रही

अध्याय-७- ओम प्रकाश झा- बाल गजल

ओम प्रकाश झा, घोघरडीहा (मधुबनी)।"कियो बूझि नै सकल हमरा" (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह) प्रकाशित।

बाल गजल

ओना तँ सभ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभ ऐ मे सक्षम छथि आ नीक सँ नीक बाल गजल लिख रहल छथि, मुदा ऐ सन्दर्भ मे हम श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक बाल गजलक उल्लेख करब उचित बूझि रहल छी। हुनकर एकटा बाल गजलक मतला अछिः-

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी

जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

ऐ गजल कैँ पूरा पढि कऽ कने देखियौ। ई गजल कनिया पुतराक उल्लेख करैत नेना-भुटकाक मनोरंजन तँ करिते अछि, संगहि अजुका बाजारवादक बलिवेदी पर कुर्बान भेल मनुक्खक मार्मिक विवेचना सेहो करैत अछि।

बाल गजल

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी

जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

बोने-बोने फिरैए जे दैता सभ

वनसप्तो लऽ घूरलि मानू बार्बी

सात रंग लऽ भोर भेले गाममे

परी रहैए गाम अकानू बार्बी

कननी दूर हेतै बच्चा सभमे

भरल आँखि बिसरी ठानू बार्बी

पानि अकास धरती जा-जा घूमी

पंख लगा टिकुली अकानू बार्बी

धम्म गुड़िया संग खेलू कूदू

राति सपनाउ निन्न आनू बार्बी

सुता दियौ ऐ गुड़ियाकेँ आ सुतू

चढ़ि ऐरावत दिन गानू बार्बी

अध्याय-८- आशीष अनचिन्हार- बहरे-मुतकारिब

मुदा हालहिमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आब एकर चर्चा आवश्यक। ओना मैथिलीमे वार्णिक बहरक खोज सेहो गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल अछि जकर अनुकरण प्रायः हरेक नव गजलकार कए रहल छथि।

बहरे मुतकारिब

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ रुक्न फ ऊ लुन (U।।) चारि बेर

अहाँ बूझि लै छी जुआरी अनेरे

जिबै कोन बैबे नियारी अनेरे

हहारो उठेलौं उदासी गबेलौं

सिहाबै किए छी मदारी अनेरे

जतेको नबारी छबारी बुरैए

घुरेबै कियो नै सुतारी अनेरे

घरोमे उपासे बहारो निरासे

दहारे अकाले नचारी अनेरे

चलै छी खटोली उठा ऐ भरोसे

भसाठी अबैए विचारी अनेरे

अध्याय-९- खटमधुर

जगदानन्द झा "मनु"

गजेन्द्र ठाकुर जीक ई उक्ति सय टका ठीक छैन -"जे जतेक बच्चा बनि जेता ओ ओतेक नीक बाल गजल कहता|"

चन्दन कुमार झा

गजेन्द्र जी गजल व्याकरणकेँ पुष्ट करैत नहि खाली गजल लिखलाह अपितु सरल वर्णिक आ सरल मात्रिक बहरक रूप मे मैथिली गजल संसार कैँ दूटा अनमोल बहर वा गजल-छंदक ढाँचा देलखिन्ह जे हमरा सन-सन कतेको नवतुरिया आ नवसिखुआ के लेल गजल लिखबा हेतु सहायक सिद्ध भेल अछि. एहि सँ मैथिली गजल कैँ अभूतपूर्व समृद्धि भेटि रहल छैक।

दुर्गानन्द मंडल

विदेह पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक सिनेहसँ हमरा अपनामे सृजनात्मक शक्तिक संचार भेल। बहुत रास एहेन शब्द सभ जे मैथिली साहित्यमे अप्रयुक्त छल। जेकरा ठेंठ कहल जाइ छलै ओ जखन ठाकुर जीक लिखल पोथी कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक पढ़ि देलखहुँ आ जनलहुँ तँ आरो विश्वास भऽ गेल।

राजेन्द्र कुमार प्रधान

श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक उपन्यास सहस्रबाढ़नि ढेर रास रजनैतिक आ ब्यूरियोक्रेटिक उथल-पुथलक गबाह अछि, तँ हुनकर सहस्रशीर्षा दलित गबैय्या मोहनक भारतक स्वतंत्रतासँ सूचनाक अधिकार धरि गीतक माध्यमसँ राजनैतिक चेतना पसारबाक अद्भुत सफल प्रयास अछि, आ एकर बीचमे सन्हिआएल गामक (एकटा काल्पनिक मुदा मिथिलाक गाम "गढ़ नारिकेल" क माध्यमसँ) आ बाढ़िक राजनीति जे गामसँ दिल्ली धरि पसरल अछि, सेहो एतऽ अछि।

जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक।

उमेश मण्डल

गजेन्द्र ठाकुर जीक लिखल "सहस्रबाढ़नि" उपन्यासक आखर-आखरमे संवेदनाक स्वर झलकैत अछि। संवेदनाक बिम्ब उदात्त आ सम्यक अर्थनीतिसँ भरल मार्मिक चित्रण अछि जाहिमे एकटा कर्तव्यनिष्ठ आ ईमानदार व्यक्ति नन्दक गृहस्थ धर्मक संग-संग सामाजिक दायित्वक पालन करबाक क्रममे उद्वेलित होइत व्यथाकेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि।

योगानन्द झा

कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- ई पोथी श्री गजेन्द्र ठाकुरक विभिन्न विधाक रचनाक संकलन थिक। एकर सातम खंडमे बालकथाक रूपमे तेइस गोट कथा संग्रहीत अछि। ऐ कथा सभमे अधिकांश मिथिलाक लोकनायक सबहक कथा थिक तथापि आधा दर्जनक लगभग कथाकेँ बाल-लोककथा कहल जा सकैछ, यद्यपि ओकरो सबहक भाषा पूर्णत: शास्त्रीय प्रकृतिक अछि। बाललोक कथाक संकलनक क्षेत्रमे चलैत प्रयास सबहक नमूनाक रूपमे एकरा महत्वपूर्ण कहल जा सकैछ।

अतुलेश्वर

हेमनिमे गजेन्द्र ठाकुरक एकटा सम्पादकीय आयल छल जे ई षडयंत्र नहि थिक जे कोनो गोष्ठी (सगर राति दीप जरए, जे वर्तमानमे कथा गोष्ठी सँ बेशी अनर्गल गोष्ठी भऽ गेल अछि) मे एहि तथ्य पर नहि आलोचना होइत अछि जे एहि कथामे कोन कमजोरी अछि वा कोन-कोन नव तथ्य आयल अछि, बल्कि जाइत, खाइत केर सङ्ग रमानाथी-शैली पर चर्चा कएल जाइत अछि?

राजनन्दन लालदास

सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संग्रहपर अहाँक आमुखक पहिल दस पंक्तिमे आ आगाँ हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी शब्द अछि..लोक नहि कहत जे चालनि दुशलनि बाढ़निकेँ जिनका अपना बहत्तरि टा भूर! अहाँक मंतव्य क्यो चित्रगुप्त सभा खोलि मणिपद्मकेँ बेचि रहल छथि तँ क्यो मैथिल (ब्राह्मण) सभा खोलि सुमनजीक व्यापारमे लागल छथि-मणिपद्म आ सुमनजीक आरिमे अपन धंधा चमका रहल छथि आ मणिपद्म आ सुमनजीकेँ अपमानित कए रहल छथि। तखन लोक तँ कहबे करत जे अपन घेघ नहि सुझैत छन्हि, लोकक टेटर आ से बिना देखनहि, अधलाह लागैत छनि। ओना अहाँ तँ अपनहुँ बड़ पैघ धंधा कऽ रहल छी, मात्र सेवा आ से निःस्वार्थ तखन बूझल जाइत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि रहितैक। ओहिना सभकेँ विलहि देल जइतैक।

मायानन्द मिश्र

कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मे हमर उपन्यास स्त्रीधनक जे विरोध कएल गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी।

सुभाष चन्द्र यादव (८ नवम्बर २००९, chandra.yadav.subhash@gmail.com)

गजेन्द्र बाबू, माया बाबू दिया बुझल अछि जे ओ महान अवसरवादी, जातिवादी, जोगारू आ असहिष्णु छथि, हिनका सऽ हम कहियो निकट नै रहलौं। एक शहरमे रहितो माया बाबु सऽ कहियो भेँट नै होइए। ओ बहुत स्वार्थी आ आत्मकेन्द्रित व्यक्ति छथि। ई सब सोच आ प्रतिक्रिया सऽ तत्काल तऽ कष्ट होइते छै, ई नीक जे अहँ अहि सभक परवाह नै करै छी आ जल्दी उबड़ि जाइ छी। अहाँक लड़ाइ सत्यक लड़ाइ थिक। अहाँ भाषा, साहित्य आ जनसंस्कृतिक सही विकासक लेल सम्पूर्ण निष्ठा, शक्ति आ आशाक संग लागल छी, अहाँक आइडियल्स निरन्तर मूर्त होइत रहत। सादर।

अध्याय-१०- पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (लघु, दीर्घ आ बीहनि कथा संग्रहक पोथी आ ऑडियोबुक) पर टिप्पणी

विकास कुमार झा

संग्रहक लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी नीक लागल, सबटा चिट्ठी कथाकारक चारुकात घुमै अय, किछु संस्मरण, किछ स्वानुभूति, मुदा एक ठाम आबैबला समयक सेहो दर्शन करेलक।

मनोज पाठक

कतेक दिनसँ इच्छा छल सुनबाक, आइ संजोग भेटल आ सुनलौं कथा सभ, कथो नीक, प्रस्तुतियो नीक। बधाई आ शुभकामना भरि ढाकी। परती भीठ टूटि रहल अछि। नव तकनीक संग डेगसँ डेग मिला बढ़ि रहल छथि मैथिली। स्तुत्य प्रयास गजेन्द्र बाबू।

डॉ. वियजेन्द्र झा

संग्रहक कथा सिद्ध महावीर! अद्भुत, एकर प्रस्तुति कला बहुत सुन्दर अछि। ई सुननिहारकेँ आकृष्ट करैए। एकर विषय वस्तु सेहो विराट अछि। धन्यवाद आ बधाइ।

संग्रहक कथा नवी मुम्बै। वाह! प्राकृतिक आपदा वा मानव निर्मित आपदा (कोरोना)पर रचल एकटा नीक रचना। ज्वलन्त समस्यापर उच्च कोटिक, समाज सापेक्ष रचनासभ।

आधुनिक तकनीकक उपयोग कए पाठक धरि कथा पहुँचाएब आ पाठककें कथा पढ़बाक हेतु आकर्षित आ विवश करबाक अत्यन्त उत्तम रीति। पाठ- शैली सेहो उत्कृष्ट। पलखति भेटलापर एकरासभकें पुनः सुनबाक उत्कण्ठा अछि । शुभकामना आ साधुवाद।

आचार्य रामानंद मंडल, सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढ़ी।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल पोथी बीहनि,लघु आ दीर्घ कथा के संग्रह हय। एक से बढ़ के एक नीक कथा से भरल पुरल हय। पोथी के नाम शब्दशास्त्रम् कथा के एगो गीत के शीर्षक हय। शब्दशास्त्रम् एगो शास्त्रीय कथा सन उत्कृष्ट प्रेम कथा हय, जे अन्तर्जातीय प्रेम कथा हय जे समीचीन हय। अइ कथा मे लेखकीय स्वतंत्रता के भरपूर प्रयोग कैल गेल हय। कथा नायक के जन्म पिता के मृत्यु के पाँच साल बाद भेल हय। जौंकि कथा मे कथा नायक के बिआह शब्दशास्त्रम् के आधार पर करौने हतन। अन्य कथा यथा सिद्ध महावीर, तस्कर, संघर्ष,लेटरबॉक्स मे आयल चिट्ठी, नई दिल्ली, नवी मुम्बै, मधुबनी माड्यूल, ’डोमा,बुधन आ...’, आत्महत्या, गंधर्व लेटरबम आ महिसबार ब्राह्मणक गाम आ ३९ टा बीहनि कथा नीक कथा हय। पोथी मे केवल कथा संचयन आ संकलन होय के चाही। सुझाव आ विशेष जानकारी देवे के कोनो आवश्यकता न जान पड़ैय हय। वो भूमिका वा अप्पन बात स्तंभ मे दे सकैय छी। ओना अनावश्यक लगैय हय।

कल्पना झा, पटना

पूरा पोथी पढ़ि गेलौं, अहाँक जतेक पकड़ मैथिलीपर अछि ततबे अंग्रेजीपर सेहो अछि। अनुवादो नीक भेल अछि। सभटा नीक रचना सभ अछि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

सिद्ध महावीर पढ़लहुँ। गजब के कथाकार छी अपने। शब्द सभक चयन अद्भुत अछि। अभिनन्दन! बहुत -बहुत बधाइ।

प्रोफेसर उषा चौधरी

अपनेक कथा संग्रह पढ़ल, खूब नीक लागल कृपया अपन काज के जारी राखू, अहिना मैथिली साहित्यक भंडार भरी से आग्रह।

बाबा बैद्यनाथ

बाऽह, हमर दृष्टिएँ अनुपम भऽ रहल अछि ई पोथी, सादर।

आभा झा

लेखक अपना हिसाबसँ कथाक उपस्थापन करैत छैक,पाठक अपन रुचिक अनुसार ओहिमे रसक अन्वेषण करैत अछि। अहाँक किछु कथा पढ़लहुँ, तस्कर, सिद्ध महावीर, संघर्ष आदि कथा अंत धरि जिज्ञासा जगौने रहल। नीक आ उपयोगी संग्रह पाठकक सोझाँ आओत। शुभकामना हमर।

राज किशोर मिश्र

अद्भुत शैली। लोक दोसर दुनियाँमे प्रवेश कऽ जाइए। मंत्रमुग्धताक संगे विविध विषयक दुनियाँ एक्के संग्रहमे, लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी आ आत्महत्या एकेडमिक विमर्शक विद्वत्तापूर्ण सन्दर्भ, कथाक माध्यमसँ सरल करैत अछि आ हिलोड़ि दैत अछि।

पञ्जीकार विद्यानन्द झा

गजेन्द्र ठाकुरक कथा संग्रह ’पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’ क कथा ’सिद्ध महावीर’ मिथिलामे व्याप्त धुरफन्दी प्रवृत्तिकेँ समुचित ढंगे व्याख्यायित करैत अछि। छल-प्रपञ्चक मग्नताक संगहि विधवाक जीवनक नैराश्यताक अभिव्यक्ति एहि कथामे सम्यक रूपेँ व्यक्त भेल अछि। स्त्री जातिक दयनीयतामे समाजेक लोकक कोन कथा निकटस्थ सम्बन्धियोक सहभागिता एहि कथामे सुस्पष्ट ढंगे चित्रित भेल अछि। एना तऽ सतत देखल गेल अछि जे हारलकेँ हरनामक भरोस परञ्च कथानायिका अनमना दीदी भक्ति मार्गक संगहि नैतिकताक पाठ सेहो आत्मसात कएने छलीह तँए तँ कहि उठलीह जे भगवानक काज मंगनीमे नहि करेबाक चाही। परन्तु दोसर दिस देखैत छी जे दास जी सनक सक्षम लोक आ अनमना दीदीक भातीज सनक निकटस्थ सम्बन्धी जाहि प्रकारेँ विश्वास हनन करैत छथि से बड़ दुखावह, ई पतोन्मुख समाजक लक्षण थीक।

’तस्कर’क कथावस्तु तँ नीक परञ्च एहिमे हमरा जनैत एकटा दोष अछि, ओ थीक मूल, मूलग्राम, गाम, गोत्र आ नाम संगहि सासुरक पूर्ण परिचय देब, तखन ई कथा नहि भेल इतिहास भए गेल। अस्तु एकरामे छद्मताक आश्रय लए काल्पनिक गामक आ मूलक नामक प्रयोग कएल जेबाक चाही छल जाहिसँ विवादक गुंजाइश नहि रहितए।

’संघर्ष’मे नारीक दृढ़ इच्छा-शक्तिकेँ दर्शाओल गेल अछि। जिजीविषा जखन प्रबल होइत छैक तखन मनुक्ख मानसिक रूपेँ पराभव स्वीकार नहि करैत अछि खाहे कतबो हारि पर हारि हो अन्ततः ओ लक्ष्यपर पहुँचि जाइत अछि आ अनको अनमनस्कताकेँ झकझोरैत उत्साहित कए दैत अछि जेना कथाक अन्तमे लेखक स्वयं स्वीकारैत छथि।

अनुलग्नक १:

बहुविधाविध रचनाकार युवा पत्रकार श्री गजेन्द्र ठाकुरजी सँ युवा प्रतिनिधि बीहनि कथाकार एवं समीक्षक मुन्ना जीसँ भेल गप्प सप्प

मुन्ना जी: गजेन्द्र जी नमस्कार। युवावर्गमे अहाँक कार्य देखि आह्लादित होइत रहलौं अछि, ताहि हेतु अहाँसँ ऐ पर विस्तृत चर्चा करऽ चाहब। गजेन्द्रजी अहाँक बेशी रहनाइ आ शिक्षा मिथिलासँ बाहर भेल। उच्च शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी रहल तखन मिथिला/ मैथिलीसँ एतेक लगाव कोना?

गजेन्द्र ठाकुर: बच्चामे १९७९-८०मे चौथा-पँचमा हम अपन गामक प्राइमरी स्कूलसँ केने छी। हमर पिताजी बिहार सरकारमे कार्यपालक अभियन्ता रहथि जखन कार्यकालहिमे हुनकर मृत्यु भऽ गेलन्हि। मुदा ई गप ओहिसँ पुरान अछि, ओहि समयमे हमर पिताजी सहायक अभियन्ता रहथि आ पटना-हाजीपुरक गंगापुल बनि रहल रहए। पिताजी ईमानदार रहथि से ठिकेदार सभ आ अभियन्ता सभ रोलरसँ पिचबाक धमकी देने रहन्हि, बच्चा सभकेँ मारबाक धमकी देने रहन्हि। अपने तँ ओ पलायन नहि केने रहथि मुदा हमरा सभकेँ गाम पठा देने रहथि। भऽ सकैए यएह डेढ़ सालक गामक निवास मैथिलीसँ आ मिथिलासँ हमर लगावक कारण रहल हुअए। फेर बादोमे सालमे दू बेर पिताजीक संग गाम जाइते छलहुँ, एक बेर होलीमे आ दोसर बेर दुर्गापूजामे। पिताजीक मुँहे एक बेर सुनने छलहुँ जे एहि जन्ममे तँ नग्रमे रहि रहल छी मुदा अगिला सात जनम गाम नै छोड़ब।

मुन्ना जी: पहिल बेर रचनाक प्रेरणा कोना/ कतऽसँ आ कहिया भेल। पहिल रचना (लिखल) कोन छल आ पहिल प्रकाशित रचना कोन (विधा सहित कही) कतऽ कहिया छपल।

गजेन्द्र ठाकुर: वएह १९७९-८०क गप अछि। गामक स्कूलमे एकटा बाल नाटकक भार हमरा कान्हपर वीरभद्रजी नवका मास्टर साहेब आ बड़हराबला मास्टर साहेब देलन्हि। नाटकक पोथी कत्तऽ सँ भेटत? तँ दानवीर दधीची लिखलहुँ। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे ई ढेर रास सुधारक संग प्रकाशित अछि २००९ ई. मे। २००० ई. मे जे हम मैथिलीक देवनागरीक

साइट याहूसिटीजपर बनेलहुँ ओहिसँ हमर पाण्डुलिपि टाइप भऽ अन्तर्जालपर नियमित रूपे आबए लागल, बादमे याहू अपन जियोसिटीज बन्न कऽ देलक मुदा ५ जुलाइ २००४ केँ “भालसरिक गाछ” नामसँ बनाओल हमर मैथिलीक अन्तर्जाल पहिल मैथिली उपस्थितिक रूपमे एखनो विद्यमान अछि। यएह भालसरिक गाछ १ जनवरी २००८ सँ विदेह पाक्षिक ई-पत्रिकाक रूपमे नियमित रूपेँ आबि रहल अछि, आब तँ एकर ३७१ टा विदेह रूप आ ३६ टा सदेह रूप आबि गेल छै। प्रिंट पत्रिका/ दैनिकक जतऽ धरि गप अछि तँ भारती-मंडन, समय साल, घरबाहर, अंतिका, आँकुर, पूर्वोत्तर मैथिल, जखन तखन, मिथिला डट कम (जनकपुर), परमेश्वर कापड़ि जीक पत्रिका (धुआ-धजा, जनकपुर), मिथिला समाद, मिथिला दर्शन आदिमे रचना सभ छपल अछि। भारती-मंडन लेल पूर्णियाँसँ हम रचना पठेने छलियनि २००१-०२ मे केदार कानन/ तारानन्द झा “तरुण”केँ, जे बादमे छपबो कएल, ओहि कालमे हम सासुरमे रही एकटा दुर्घटनाक बाद, बैशाखीपर डेढ़ बरख धरि रही (२००१-०२)। भऽ सकैए ओहो कालावधि हमरा समय देलक आ हमर दिशा निर्धारित कएलक।

मुन्ना जी: एक संग एतेक विधामे रचना करबामे असोकर्ज नै होइछ? एक संग बहुविधाक संगोर प्रकाशित करबाक की उद्देश्य?

गजेन्द्र ठाकुर: एतेक विधा माने कतेक विधा? विधा तँ दुइये टा छैक गद्य आ पद्य। हमर कथा शब्दशास्त्रम् मे ढेर रास गीत छै। तस्कर कथा पंजीमे वर्णित तस्कर केशवक तहमे गेलाक उपरान्त फुराएल। आब पंजीक मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यन्तरण नै करितहुँ तँ लैला-मजनू आ हीर राँझाक कोटिक मैथिली प्रेमकथा मैथिलीमे नै अबितए। मैथिली अंग्रेजी डिक्शनरी रहै मुदा इंग्लिश-मैथिली डिक्शनरी नै रहै, से ओ बनएबाक क्रममे हम ब्लॉगकेँ जालवृत्त लिखै छी आ इन्टरनेटकेँ अन्तर्जाल, तँ से कोना होइतए, हमर विज्ञान कथा काल-स्थान विस्थापन, आ अन्तर्जाल आ प्रबन्धनपर आलेख, मैथिलीक लेल SWOT अनेलिसिस मैथिलीमे कोना लिखाइत? तँ सिद्ध भेल जे हमर गद्य-पद्य एक दोसराक लेल ऋणी अछि, हमर पाण्डुलिपिक लिप्यन्तरण/ अंकण आ शब्दकोषक निर्माण सेहो हमर गद्य-पद्यक विशिष्टतामे योगदान देलक। हमर मैथिली-संस्कृत शिक्षाक कार्य मूल संस्कृत

कथा-काव्यक अन्वेषणमे हमर सहायता केलक, आ ताहि कारणसँ “दानवीर दधीची”क पौराणिक दन्तकथा जाहिमे दधीची हड्डी दान दै छथि कैँ हम नै मानलहुँ आ वैदिक कथा मानलहुँ जाहिमे आश्विनौ हुनका (दधीचीकैँ) घोड़ाक मुँह लगा दै छथि आ ओहि गरदनिकैँ इन्द्र काटै छथि आ फेर आश्विनौ दधीचीक असल मुँह लगा दै छथि, आ ओहि काटल घोड़ाक मुँहक हड्डीसँ इन्द्रक हथियार तैयार होइ छै, दधीचीक हड्डीसँ नै। त्वञ्चाहञ्च (मूल संस्कृत महाभारतपर आधारित)आ असञ्जाति मन (संस्कृतमे अश्वघोषक बुद्धचरितपर आधारित) ई दुनू गीत प्रबन्धमे आएल मूल विशिष्टता सेकेन्डरी सोर्सक अध्ययनसँ सम्भव नै छै, आ नहिये दूर्वाक्षत मंत्रक वा आन वैदिक युगक कथ्यक विश्लेषण (ग्रिफिथक अंग्रेजी अनुवादक सेकेन्डरी सोर्सक विपरीत) बिना मूल अर्थ बुझने सम्भव, से मायानन्द मिश्रक प्रथम शैल पुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनक समीक्षामे सेहो काज आएल। तँ हमर संस्कृत-मैथिली शिक्षा एतए काज आओल। हमर दर्शन शास्त्रक मूल वाचस्पति/ कुमारिल/ मंडनक ओ भामती आ ब्रह्मसिद्धिक दार्शनिक तत्व शब्दशास्त्रम् मे आओल। तँ हमर अंग्रेजी साहित्यक शिक्षा हमर आलेख मैथिली साहित्यपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभावक आधार बनल। हमर ऋगवैदिक संस्कृत आ अवेस्ता क मूल अध्ययन मैथिलीक गजलशास्त्रक आलेखमे प्रयुक्त भेल तँ हैकू आ हैबून- मूल जापानी काव्यशास्त्रक अनुवादक आधारसँ विशिष्टता प्राप्त कऽ सकल। सहस्रबाढ़निक ब्रेल वर्सन, कैथी आ मिथिलाक्षर यूनीकोडक निर्माणमे योगदान हमर कम्प्यूटर विशेषज्ञताक बिना सम्भव नै छल तँ हमर ’लेबर इन डेवेलपमेन्ट’क कोर्स हमर बाल-श्रमपर आधारित बाल कविता लेल अपरिहार्य छल।

एक संग ई सभटा रचना हार्डबाउन्डमे कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक नामसँ एहि द्वारे प्रथमे-प्रथम छपल कारण हम एकरा परिवारक सभ सदस्य लेल लिखने छी। शिशु/ बाल साहित्य सेहो एहिमे अछि कारण छोट बच्चा स्वयं ओ रचना नै पढ़त वरन् अहाँ ओकरा पढ़ि कऽ सुनेबै, कविता यादि करेबै, अंकिता वर्णमाला शिक्षा देखू, नाटक करबबियौ। मूड अछि तँ कथा पढ़ू, नै तँ कविता-समीक्षा/ नाटक पढ़ू खेलाउ। महाभारत/ बुद्धचरित पढ़बाक पलखति नै अछि तँ त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन पढ़ू। मोन अछि तँ उपन्यास पढ़ू आ नै तँ दीर्घकथा-

विहनि कथा पढ़ू। बादमे ई सातो खण्ड पेपरबैकमे सेहो सात खण्डमे आएल। हार्डबौन्डक हजार कॉपी तँ गोट-गोट बिका गेलै।

मुन्ना जी: एक संग बहुविधाक रचना प्रकाशनसँ अहाँक अपन अस्तित्वकेँ खतरा नै बुझाइत अछि? एहेन केलासँ भऽ सकैछ जे समीक्षक अहाँक कोनो मूल्यांकन नै कऽ सकैथ?

गजेन्द्र ठाकुर: मुदा से भेलै नै। कारण लीखपर चलैसँ हमरा परहेज नै अछि जे ओ कत्तौ धरि पहुँचाबए, आ नै तँ नव लीख बनेबामे सेहो कोनो असोकर्ज नै। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक हमर २००९ धरिक समस्त कृतिक (पंजी आ डिक्शनरीकेँ छोड़ि जे अलगसँ प्रकाशित भेल) संकलन अछि। ई पाठक लेल लिखल गेल अछि, समीक्षकक लेल नै, मैथिलीक ओहेन समीक्षकक लेल नै जिनका मिथिलाक्षर नै अबैत छन्हि आ कम्प्यूटर इलिटेरेट छथि से पंजी आ कमप्यूटर/ प्रबन्धन विषयक आलेखक समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै छी, करबाको नै चाहियन्हि; ऋग्वैदिक संस्कृतक ज्ञान नै छन्हि तँ हमर ताहि सम्बन्धी समीक्षापर ओ समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै छी, आ से करबाको नै चाहियन्हि। मुदा जाहिपर ओ कऽ सकै छथि ताहिपर करथु, कतेक समीक्षक केबो केलन्हि अछि, जेना प्रेमशंकर सिंह, शिव कुमार झा आ राजदेव मंडल। पक्ष-विपक्षमे सएसँ बेशी चिट्ठी सेहो आएल अछि। मुदा जे पाठक छथि हुनकर प्रतिक्रिया आह्लादकारी अछि, प्रिंटक अतिरिक्त हजारसँ बेशी डाउनलोड विश्वभरिमे पसरल मैथिलीभाषी द्वारा हमर सभ पोथीक भेल अछि। बिना कोनो सरकारी साहित्यिक संस्थाक सहयोगसँ हमर उपन्यास सहस्रबाढ़निक अनुवाद अंग्रेजी, संस्कृत, तुलु, कन्नड़, मराठी आ कोंकणीमे कएल गेल। एहि उपन्यासकेँ ब्रेलमे लोक पढ़ि रहल छथि।

खिरदमंदों से क्या पुछूँ कि मेरी इब्तिदा क्या है

कि मैं इस फिक्र में रहता हूँ मेरी इन्तिहा क्या है,

(इकबाल)

(बुधियारसँ हम की पूछू जे हमर आरम्भ की अछि, हम तँ एहि चिन्तामे छी जे हमर ओरछोर की अछि।-इकबाल)

खुदी को कर बुलन्द इतना, के हर तकदीर से पेहले

खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है ?

(इकबाल)

(अपन निःस्वार्थताकेँ ओहि स्तर धरि लऽ जाउ जे ककरो भाग्य बनेबाक पहिने भगवानकेँ ओकरासँ ई पूछए पड़न्हि जे बता केहन भाग्य चाही तोरा।- इकबाल)

मुन्ना जी: अहाँ निश्शन रचनाकार आ समीक्षकक अतिरिक्त मैथिली पत्रिकाक एकटा आधार स्तम्भ भऽ देखार भेलौं अछि। “विदेह ई पाक्षिक” प्रारम्भ करबाक विचार कोना भेल? आइ एकरा आ एकरा माध्यमेँ अपनाकेँ कतऽ पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली पत्रिका सभकेँ रचना पठाएब तँ दू बरखक उपरान्त नम्बर आएत, नहियो आएत। अतिथि सम्पादक रचना मंगबा कऽ गीड़ि गेलाह, सेहो उदाहाण अछि। नव रचनाकार हतोत्साहित रहथि। से विदेह प्रकाशनक नियमितता लऽ कऽ आएल, वितरणक समस्या एकरा नै रहै , कारण ई अन्तर्जालपर छल। भारत आ नेपालक मैथिली भाषीक बीचक जे बोर्डर छलै, देशक बोर्डर, से विदेह लेल नै छलै। भारतक नै वरन विश्वक बीच पसरल मैथिली भाषी मध्य विदेह लोकप्रिय भेल। मैथिलीमे पाठक नै छै, नीक लेखक नै छै, युवा लेखक नै छै, गएर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ- गएर सवर्ण लेखक नै छै, ई समस्त धारणा विदेह तोड़ि देलक। आइ धरि विदेह ई पत्रिकाकेँ १०७ देशक १,५७१ ठामसँ ५१,०७७ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी. सँ २,७२,०८२ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डेटा, २०१२ धरि)। विदेह: सदेह:१ मे ११८ टा लेखक (१८ बर्खसँ ८८ बर्ख धरि) छलाह। विदेह मैथिलीक एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नल अछि जकरा पेरिस स्थित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था मान्यता देने छै। विदेह अही सभ उद्देश्यसँ शुरू भेल आ अपन सभटा उद्देश्य प्राप्त कएलक। मुदा एतेक भेलाक पश्चातो हम कहब जे ई तँ एखन मात्र प्रारम्भ

अछि। विदेहक कारणसँ बहुत गोटे नीक-अधलाह लोक भेटलाह, बेशी नीके। विदेहक कारणसँ हमरा पाठक भेटल, स्नेह भेटल। विदेहक कारणसँ एकटा दवाब रहैत अछि, रचना करबाक दवाब आ रचनाकारकेँ जोड़बाक दवाब।

मुन्ना जी: ब्राह्मण वर्ग अपन हितपूर्ति लेल मैथिलीक दुरुपयोग केलनि वा मैथिलीकेँ गरोसि गेला। गएर ब्राह्मण वर्ग निङ्घेस जकाँ टारि पलथी मारने रहला, एकर की कारण, ऐ सँ मैथिलीकेँ कतऽ धरि लाभ वा हानि भेलै?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिलीक दुरुपयोग वा कोनो भाषाक दुरुपयोग केना सम्भव अछि? ई तखने सम्भव अछि जखन लोकक आर्थिक दशा तेहन होइ जे ओ भोजन लेल झखैत हुअए वा सरकार ओकर शिक्षा-व्यवस्थामे दोसर भाषा घोसिया दइ, भारतमे हिन्दी आ नेपालमे नेपाली घोसियाओल गेल। ब्राह्मण वा कायस्थ-वर्ग शिक्षामे आगाँ छलाह (देशक दोसर भागक ब्राह्मण वा कायस्थसँ हम तुलना नै कऽ रहल छी- हुनका सभसँ तँ ई लोकनि बड्ड पछुआएल छथि।), माने मिथिलाक दोसर जातिसँ। से साहित्यमे सेहो यएह सभ अएलाह। ने मिथिलामे राममोहन राय भेलाह जे विधवा लेल लड़ितथि, ने गेब्रियल गार्सिया मार्क्विस भेलथि जे “ए हन्ड्रेड ईयर्स ऑफ सोलिट्यूड” लिखबा लेल कार बेचि देलथि जे ओहि पाइसँ परिवारक साल भरिक खर्चा चलतन्हि आ ओहि अवधिमे ओ ई उपन्यास लिखताह! मुदा ई दुनू गप पूर्णतः सत्य नै अछि, बहुत गोटे अपन सर्वस्व बेचि मैथिली लेल झोकलन्हि, मुदा गुटबन्दीक कारण हुनकर चर्चा नै भेल। कतेक गोटे विवादमे घसीटल गेलाह तँ ओ तथाकथित पतनुकान लऽ लेलन्हि। पंजीमे कमसँ कम तीनटा सर्वस्वदाताक विवरण अछि जाहिमे एक गोटे अपन जीवनमे तीन बेर सर्वस्व दान केलन्हि। पंजीमे सैकड़ामे अन्तर्जातीय विवाहक विवरण अछि आ से ब्राह्मण आ दलितक बीच। तस्कर केशव राजाक निहुछल लड़कीसँ विवाह केलन्हि, लक्ष्मीश्वर सिंह किछु नै कऽ सकलाह। मुदा ई सभ दू साल पहिने धरि अभिलेखित नै भेल। १९४२ ई.क आन्दोलनमे पंचानन झा आ पुरन मंडल झंझारपुरमे संगहि अपन बलिदान देलन्हि मुदा से अभिलेखित नै भेल, आब २००९ ई. मे जगदीश प्रसाद मण्डल ओहि घटनाकेँ अपन पछताबा कथाक आधार बनेलन्हि। गएर ब्राह्मण वर्गक जगदीश प्रसाद मण्डल/ राजदेव मण्डल/ बेचन ठाकुर/ महेन्द्र नारायण राम/ मेघन

प्रसाद/ बिलट पासवान “विहंगम”, हिनका सभक अतिरिक्त जे साहित्यकार छथि ओहिमेसँ बेसी वएह आगाँ बढ़ि सकलाह जे टोना-टापर जानै छथि आ ब्राह्मण- कायस्थ मध्य सेहो बेशीकाल टोना-टापर जानैबला आगाँ बढ़लाह, से ककरा दोष देबै? ने पाठक रहै, जे जेबीसँ खर्चा केलन्हि से विवादित कएल गेलाह, जे प्रतिभावान रहथि से हतोत्साहित कएल गेलाह आ जे टोना-टापर जानैबला रहथि से आगाँ बढ़लाह। कारण सेहो स्पष्ट अछि जे मैथिलीमे पाठक नै छल तँ ई भेल आ ईहो सत्य जे एहि सभ कारणसँ पाठक नै बढ़ल, चिकन एण्ड एग प्रोब्लम। गएर ब्राह्मण वर्गक राजनीतिज्ञ बेसी दोषी छथि, ओ वोट मांगैले आबै छथि मुदा जितलाक बाद मैथिली नै बजताह जे हम अहाँक भाषा नै बाजै छी, से हमरासँ दूर रहू। विदेहक आगमन एहि सभ पक्षकेँ सोझाँमे राखि कऽ भेल, मैथिलीकेँ देल स्लो-प्वाइजनिंगक प्रभाव दूर भेल अछि।

मुन्ना जी: मैथिली विशेष कऽ गएर ब्राह्मणेक मूल भाषा छल। ब्राह्मणक मूल भाषा तँ संस्कृत रहल, बोली चालीमे सभक भाषा मैथिलीये रहल। मुदा ब्राह्मण लोकनि हुनका सभकेँ पूर्णतः दूर रखलनि। अहाँ हुनका सभकेँ जोड़ि लेलौं? कोना?

गजेन्द्र ठाकुर: मानुषीमिह संस्कृताम् – ई उक्ति हनुमान जीक छन्हि जे सीतामैयाक नैहरक भाषा मानुषीमे हुनकासँ अशोक वाटिकामे गप केलन्हि (वाल्मीकि रामायण- सुन्दरकाण्ड)। मैथिलीमे बहुत रास शब्द अछि जे वैदिक संस्कृतमे अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै, से मैथिल खास कऽ गएर ब्राह्मण वर्ग वैदिक संस्कृतक बेशी लग छथि तँ पढ़ल लिखल मैथिल (ब्राह्मण आ कायस्थ) लौकिक संस्कृतक। मुदा लोक कंठमे बसल साहित्य गएर ब्राह्मण वर्गमे अछि, उमेश मंडल १२-१४ जातिक एहेन साहित्यक संकलन केने छथि तँ महेन्द्र नारायण राम/ विश्वेश्वर मिश्र/ मणिपद्मक पोथी सेहो छपल छन्हि। ई अवश्य जे विदेहक अएबासँ पूर्व एकभगाह स्थिति छल नब्बे प्रतिशत ब्राह्मण आ १० प्रतिशत कायस्थ साहित्यकार छलाह। अन्य नगण्ये छलाह, विदेह सभक मध्य भरोस उत्पन्न कऽ सकल ताहिमे ओ सभ गोटे शामिल छथि जे विभिन्न कालावधिमे विदेहसँ जुड़ैत गेलाह आ एकरा शक्ति प्रदान कएलन्हि। पहिने विद्यानन्द झा, नागेन्द्र कुमार झा, रश्मि रेखा सिन्हा, उमेश मंडल, शिव कुमार झा आ मनोज कुमार कर्ण, जया वर्मा आ राजीव कुमार वर्मा विदेहसँ जुड़लाह। हमरा आ सम्पादक मंडलक सदस्यकेँ मानसिक रूपेँ प्रतारित करबाक घृणित

प्रयास सेहो किछु टोना-टापर जानैबला साहित्यकारक इशारापर कएल गेल, मुदा एहिसँ हमरा सभकेँ झमेलासँ बाहर अएबाक कला सिखबाक अवसर भेटल। मुदा उत्साहवर्धन करएबलाक तुलनामे ई सभ बड्ड कम मात्रामे रहथि, राखू पाँच प्रतिशत। हम सभ लोककेँ जोड़लहुँ आ ओ सभ जुड़लाह, दुनू सत्य अछि। हमर ई प्रयास एहि अभाव-भाषणकेँ खतम कऽ देलक- यौ बड्ड प्रयास केने छिऐ, नै सम्भव छै यौ..आदि...आदि; आ एहि अभाव भाषणमे ब्राह्मण-कायस्थ तँ शामिले रहथि, गएर ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार आ राजनीतिज्ञ सेहो शामिल रहथि, आ ओ सभ बेशी दोषी छथि। दोसर आबि जएताह तँ हमर चलती कम भऽ जाएत, माने प्रतियोगितासँ दूर भागब, ई जेना ब्राह्मण-कायस्थ आ गएर ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार- दुनुक मनोभावना बनि गेल छल; ओना एहिमे अपवादो सभ छथि।

मुन्ना जी: अहाँ स्वयं ब्राह्मण वर्गसँ रहि पुरना बभनौटी (ब्राह्मणवाद) सँ अलग बाभनवादसँ दुखी वा कतिआएल रचनाकार, सभ जाति-धर्मक नव-पुरान रचनाकारकेँ एक मंचपर एक संग जगजियार कऽ रहलौंहेँ, एकरा पाछाँ की मानसिकता वा रहस्य अछि?

गजेन्द्र ठाकुर: मैट्रिकक सिलेबसमे पढ़ै छलहुँ जे सभ जातिक मैथिलीभाषी मैथिल छथि, मुदा वास्तविक धरातलपर, विद्यापति पर्व आदिमे ई मैथिल विशेषण मुख्यतया दू जातिक भऽ जाइत छल। माने कथनी आ करणीक अन्तर। हमर पालन-पोषण आ शिक्षा-दीक्षामे कथनी आ करणीक अन्तर नै रहल, प्रायः सएह कारण हएत। दोसर प्रतियोगिता बढ़त तँ अहींक साहित्य ने मजगूत हएत, बेशी लोक आएत तखन ने नीक लोक बेशी आएत। जातिक नामपर वा सर-सम्बन्धीक नामपर हमर सहयोग क्यो मंगबाक हिम्मत नै केने छथि, कमसँ कम ओ लोकनि जे हमर पिता आ हमरा चिन्हैत छथि। ने कोनो रचना-चोरकेँ हम जातिक नामपर बकसैबला छियन्हि। आ जे ओहि प्रवृत्तिक छथि से सभ जाति-धर्मक लोक एकट्ठा भऽ जाथु जाहिसँ पीठमे छूरा भोंकेबासँ तँ हमरा सभ बचि जाएब। आ हमर मानसिकताक लोक जे एक मंचपर एक संग जगजियार भऽ रहल छथि तँ हम सएह कहब जे हमर काज हुनका सभमे हमरा सभक प्रति विश्वास देने छन्हि- से हुनका सभकेँ धन्यवाद।

मुन्ना जी: कोनो एहेन विशेष क्रियाकलाप वा घटना जे अहाँकेँ बाभनक वा बभनौटीक प्रति आक्रोश आ गएर बाभनक प्रति लगाव बढ़ेलक।

गजेन्द्र ठाकुर: कोनो एक घटनाक आवश्यकता कत्तऽ छै। दरभंगाक दोकानमे मैट्रिकक सिलेबसक गाइडक अतिरिक्त कोनो मैथिली पोथी नै भेटै छलै, कोनो एक साहित्यकारक मुँहसँ दोसराक प्रति आदर वचन नै निकलै छलै, कियो अतिथि सम्पादक बनि अहाँक रचनाक चोरि केलक तँ ओकरा अहाँ पकड़ी तँ ताहिपर एकमत नै होइ जाइ छलाह उनटे दोषीकेँ पीठ ठोकै जाइ छलाह, शब्दशः चोरि आ आक्रान्त वा प्रभावित भेल रचनाक अन्तर ककरा नै बुझल छैक आ ओहि आरिमे शब्दशः चोरि केनिहारक पीठ ठोकब! विदेहक आगमनक बाद एहि सभमे परिवर्तन आएल, एकरा के नकारि सकत। सत्यक प्रति लगाव रहत आ अन्यायक प्रति विरोध तँ सभ किछु अनायासे आबि जाएत, कोनो विशेष क्रियाकलाप वा घटनाक आवश्यकता नै पड़त, कोनो घटनासँ फाएदा उठेबाक आवश्यकता नै पड़त।

मुन्ना जी: अहाँक मैथिली पत्रकारिताकेँ दूरि हेबासँ बचेबाक वा सत्यक खोजक कारणेँ गारि-गंजनक पछातियो एक स्टंपपर अड़ल रहबाक दृढ़ संकल्प कतेक दिन धरि निमहता हएत?

गजेन्द्र ठाकुर: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पणमे हम लिखने रही-

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहिये बुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

आ ई पढ़ि गामक बहुत गोटे कानए लागल छलाह। हुनका सभकेँ बुझल छन्हि, मुदा अहाँकेँ हम यएह कहि सकै छी जे एकर निर्धारण भविष्य़ करत, अपन विषयमे बढ़ा-चढ़ा कऽ की कहू।

मुन्ना जी: किछु सम्पादक- "अहाँ हमर छापू वा हमरापर लिखू आ हम अहाँक छापब"बला नियतिपर छथि। ओ किछु चुनल-बीछल लोककेँ छपै छथि वा परिवारवादमे लेपटाएल रहै छथि। मुदा अहाँ ऐ सँ इतर सभकेँ स्थान दै छियैक- ई की सोच जाहिर करैए?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिलीमे समस्या रहै जे पाठक नै रहै, तेँ ओना होइ छलै। हम सभ सभकेँ स्थान दैत छिऐ तँ एहिसँ पाठक बढ़ल, मैथिली मृत होएबासँ बचि गेल। आ आब दोसरो पत्रिका सभ सभकेँ स्थान देनाइ शुरू कऽ देने छथि- कारण अभाव-भाषण जेना लेखके नै छै, दोसर जाति लिखिते नै छै, नव लोक मैथिलीमे आबिये नै रहल छै, ई सभ मिथ विदेह द्वारा ध्वस्त कऽ देल गेल छै।

मुन्ना जी: मैथिलक मानसिक अतिक्रमणसँ अहूँ अपन विचार बदलि ओहिना रहरहाम तँ नै भऽ जाएब, जेना मैथिली पत्रकारितामे आइ धरि चलि आबि रहलैए?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिलक मानसिक अतिक्रमण हमरापर होएत कोना? प्रतियोगितासँ, मेहनतिसँ हम दूर नै भागै छी। मैथिली पत्रकारितामे प्रतिभावान लोकक संख्या कम छलै से ओहन अतिक्रमण होएब स्वाभाविक रहै। मैथिली किएक, सभ भाषाक पत्रकारितामे/ विश्वविद्यालय शिक्षणमे भाषा विषयमे कम मार्क्समे नामांकन होइ छै, तेँ एहन अतिक्रमण बेशी होइ छै। मुदा विदेहक आगमनक बाद दोसर विषयक जेना इतिहास, भूगोल, कम्प्यूटर साइन्स, चाटर्ड एकाउन्टेन्सी, डॉक्टर आदिक संख्या मैथिली साहित्यमे बढ़ल अछि; साहित्य विषयमे सेहो प्रतिभावान लोक सभ छथि, सेहो सोझाँ आएल छथि। हमर मृत्युक बादो ई रक्तबीज सभ हमर उद्देश्यकेँ आगाँ बढ़बैत रहताह।

मुन्ना जी: ठाम-ठीम ई चर्च उठैत अछि जे अहाँ आ श्रुति प्रकाशन, व्यक्ति विशेषकेँ छपबामे अपन आर्थिक-मानसिक ऊर्जाक बेशी अंश लगा रहल छी, ताहि हेतु अहाँ की कहब?

गजेन्द्र ठाकुर: विदेहमे आइ धरि ई नै भेल अछि। हमर “प्रोविडेन्ट फन्ड आ एरियरक पाइ” आ माँक पेंशनक सीमित संसाधनक बावजूद जे मानसिक संसाधन अछि, जेना बुक डिजाइन, साइट-डिजाइन, टाइपिंग ई सभ विदेहक सम्पादक मंडल द्वारा मुफ्त उपलब्ध कराओल जाइत अछि। कोनो मैथिलीक पत्रिका वा संस्था वेबसाइट निर्माण, पत्रिकाक रजिस्ट्रेशन आदि लेल विदेहसँ सम्पर्क केने होथि आ से हुनका नै भेटल होइन्ह, से नै भेल अछि। श्रुति प्रकाशनक मैथिली पोथीक लेल सेहो हम कैमरा-रेडी-कॉपी धरि तकनीकी सहायता दैत छियन्हि। हमर देल सलाहपर श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक आठ टा किताब आ स्व. राधाकृष्ण चौधरी जीक मिथिलाक इतिहास छापल गेल अछि, ई सभटा पोथी विदेह आर्काइवपर मुफ्त डाउनलोड लेल उपलब्ध छै, एकरा सभकेँ अहाँ पढ़ू आ स्वयं निर्णय करू जे गुणवत्ताक आधारपर ई सभ छपबा योग्य अछि वा एकर छपबाक निर्णय व्यक्ति विशेषक आधारपर कएल गेल छै। बहुत रास हमर सलाह प्रकाशक द्वारा नहियो मानल गेल, सभ संस्थाक आर्थिक संसाधनक सीमा छै। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल आ स्व. राधाकृष्ण चौधरी जीक पाण्डुलिपि कतेको सरकारी मैथिली संस्थासँ जुड़ल पुरोधा लग गेलन्हि मुदा ओ लोकनि अपन पोथी छपेबाक जोगारमे छलथि, छपबेबो केलन्हि, भने ओकर कोनो ग्राहक/ पाठक नै होइ। मुदा एते धरि होएबाक चाही जे गुणवत्ता आधारित पोथी सभक हजारक हजार डाउनलोडक संग प्रिंट वर्सनक पाइ दऽ कऽ किननिहार संख्या देखि ई मैथिली सरकारी-गएर सरकारी संस्था सभ आब अपन विचार बदलथि। कारण आब हम मात्र विदेहपर केन्द्रित भऽ काज कऽ रहल छी आ प्रकाशक सेहो सीमित मात्रामे पोथी प्रकाशित करबामे समर्थ छथि तेँ जे ई लोकनि आगाँ आबथि तँ विदेह आर्काइवमे अमूल्य आ ढेर रास अद्भुत रचना/ रचनाकार उपलब्ध अछि/ छथि। कैमरा रेडी कॉपी धरि बनेबाक काज हम मुफ्तमे कऽ देबन्हि।

मुन्ना जी: अहाँसँ एकटा व्यक्तिगत जीवनक पहलूसँ जुड़ल प्रश्न पूछब जे अहाँ नोकरीक संग सभसँ नियमित सम्पर्क, नियमित रचनारत रहि नियमित पत्रिकाक संचालनक अतिरिक्त पारिवारिक समन्वयन कोना कऽ पबैत छी?

गजेन्द्र ठाकुर: पत्नी प्रीति ठाकुरक सहयोग छन्हि, ओहो मैथिली चित्रकथाक चित्रकारीमे लागल रहै छथि, बच्चो सभ, ओम आ आस्था, शान्त प्रकृतिक छथि, से अतिरिक्त सुविधा

प्राप्त अछि। विदेहक दूर-दूर प्रान्त देशमे बसल सम्पादक मंडलक सहयोग छन्हि, जे कतेक मेहनति करै छथि आ हुनका सभसँ कम मेहनति जे हम करी तँ हम कथीक सम्पादक। कोनो बौस्तु लेल हृदयमे अग्नि रहत तँ सभटा समन्वयन भऽ जाएत।

मुन्ना जी: एतेक काज केलाक पछातियो एखन धरि अहाँक कोनो मूल्यांकन (व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक) नै भऽ सकल। अइ सँ अपनाकेँ प्रभावित तँ नै पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर: नै, एहिसँ हम सहमत नै छी। हमरा प्राप्त ई-पत्र आ चिट्ठी सभ, पाठकक प्रशंसापत्र, पाण्डुलिपि सभक परिरक्षणक हमर योजनाक सफलता आ भाषा-विज्ञानक हमर शोध ई सभ हमरा संतुष्टि देने अछि। खराब लोक सेहो अहाँकेँ नीक कहत से कोना सम्भव? से हमरा चाहबो नै करी। व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक मूल्यांकन मैथिली की आनो भाषामे मृत्युक बादे होइ छै।

मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।

पीछे पीछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर।।

(कबीर)

(मोन एहन निर्मल भऽ गेल जेना ई गंगाक जल अछि। पाछाँ-पाछाँ भगवान कबीर-कबीर कहैत पछोर धेने छथि।-कबीर)

मुन्ना जी: मैथिलीमे समीक्षाक स्तर की अछि, समीक्षाक वास्तविक प्रतिरूप की अछि, आ ओ मैथिलीमे कत्तऽ अछि?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली समीक्षाक समक्ष वास्तविक समस्या रहै। पहिल रहै पाठकक संख्या शून्य रहब आ दोसर रहै लेखक आ समीक्षकक एक दोसराक सर-सम्बन्धी/ दोस- महीम होएब। से एहि स्थितिमे गपाष्टक आधारित समीक्षाक चलती भेलै। मुदा आब से नै अछि। जे पुरनका समीक्षक लोकनिकेँ अपन अस्तित्व बचेबाक छन्हि आ दुर्गानन्द मंडल, शिव कुमार झा, राजदेव मंडल, धीरेन्द्र कुमार आ मारते रास राक्षसी प्रतिभा सम्पन्न समीक्षकसँ

टक्कर लेबाक छन्हि तँ बिना पढ़ने समीक्षा लिखबाक आह-बाह आकि छी-छी बला विपरीत ध्रुवक समीक्षा छोड़ए पड़तन्हि।

मुन्ना जी: अन्तमे अहाँ अपन समकक्ष रचनाकर्मीकेँ कतऽ ठाढ़ देखै छी, हुनक दशा-दिशाक मादेँ की कहब?

गजेन्द्र ठाकुर:आश्चर्य लगैत अछि जे कत्तऽ ई लोकनि नुकाएल छलाह, सभ अपन सामाजिक-पारिवारिक जिम्मेदारी निमाहैत मैथिलीक लेल जतेक कऽ रहल छथि से आन भाषामे सम्भव नै छै, किछु अपवादो छथि आ से तँ रहबे करताह।

मुन्ना जी:अपनेक स्वतंत्र विचार आ एतेक समय देबा लेल बहुत-बहुत धन्यवाद।

(साभार: पूर्वोत्तर मैथिल)

भाग-२

प्रीति ठाकुर

अध्याय-१

दुर्गानन्द मण्डल

नेना लेल सुन्दर चित्रकथा

श्रीमती प्रीति ठाकुरक दू गोट चित्रकथा (पहिल गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, दोसर मैथिली चित्रकथा) मैथिली साहित्यमे पहिल बेर श्रुति प्रकाशन नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल। लागल जे आब हम मैथिल दरिद्र नै सभ कथुसँ सम्पन्न भऽ रहल छी। साहित्यक तँ अनेको विधा होइ अछि जइमे कथा एक विधा थिक तहूमे चित्रकथा तँ बाल साहित्य लेल प्रमुख। चित्रकथाक माध्यमसँ अपन भूलल-बिसरल संस्कृतिक झलक सेहो भेटैत अछि। निश्चित रूपे मैथिली साहित्यमे एकर अभाव बहुत दिनसँ खटैक रहल छल। जेकरा श्रीमती प्रीति ठाकुर अपन चित्र कथा मैथिल समाजक बीच राखि एकटा असीम प्रतिभाक परिचय देलनि अछि।

बुझना जाइ छल जेना हम अपनेकेँ स्वयं बिसरि गेल छी। बिसरि गेल रही ओइ समैकेँ जइ समैमे मैयाँ अपन पोता-पोती लऽ जा कऽ घूड़ लग बैसि गोनू झाक खिस्सा सुनबैत छलीह जे अति मनोरंजक आ गोनूक तीव्र बुधिक परिचायक छल। तहिना आनो आनो कथा जेकरा प्रीति जी चित्रवत् कऽ हमरा लोकनिक सोझामे रखलीह। जइमे रेशमा-चूहरमल, नैका बनिजारा, ज्योति पंजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महराज आ कालिदास छथि। जे कहियो आम छल, आब लुप्त प्राय: भेल जा रहल छल, ओकरा एकबेर पुन: परिचित करौलनि। जइमे लोक जनलक जे रेशमा के आ चूहड़मल के?

एतबे नै, प्रेमक पराकाष्ठाक परिचयक रूपमे जे लोकक ठोरपर हीर-रांझा वा लैला-मजनू रहैत छल, की ओकरासँ कम निस्वार्थ प्रेम रेशमा आ चूहड़मलक छल ई देखेबामे साकांक्ष रहलीह। जतए चुहड़मल दुधवंशी दुसाध जातिक तँ दोसर तरफ रेशमा भुमिहार ब्राह्मण जातिक बेटी। जखन जुहड़मलकेँ दंगल जीत कऽ अबैत देखलक तँ दुनूक भेँट गंगाक तटपर, ओतहि प्रेमकथाक प्रारम्भ भेल। अर्थात् प्रेममे जाति-पातिसँ कोनो लेन-देन नै अपितु प्रेम तँ प्रेम थिक। प्रेम कएल नै जाइ छै अपने भऽ जाइ छै। तहिना नैका बनिजारा

सेहो प्रेमेक पराकाष्ठाक परिचायक छी। भगता ज्योति पंजियार अपन वीरता आ पराक्रमक कारणे पूजित भेल। आइ जँ धर्मराजक पूजा तँ ज्योति पंजियार सेहो पूजित छथि। धर्मराजक भक्त ज्योति पंजियार बारह बर्खक तपस्याक बाद कंचन काया लऽ कऽ घूमि घर एलाह। माइक कोखि पवित्र भेल। जे एहेन पैघ भगता ओकरा कोखिसँ जनमल।

तहिना महुआ घटवारिन सेहो अपन इज्जत बचाबए खातिर कौशिकी धारमे जान गमा अपन सतीत्वकेँ अकिंचन बना कऽ रखलीह। राज सलहेसक कथा तँ नाचो रूपमे प्रसिद्ध अछि। जेकरा प्रीतिजी चित्रवत कऽ इतिहास बना देलनि। एकटा धरोहरक रूप दऽ देलथि। अनचिन्हार जकाँ छेछन महराज कथाक संग कालिदासक चित्र कथा आ हुनक यादव कुलमे जन्म हएब, हुनक यर्थाथ परिचए भेल। बहुतोकेँ ई बूझल हेतनि जे कालिदास तँ कर्ण-कायस्थ छलाह। ऐ लेल सेहो प्रीति जीकेँ धन्यवाद।

प्रीति जीक दोसर रचना मैथिली चित्रकथामे कुल दस गोट कथा वर्णित अछि। जइमे राजा सलहेस, बोधि कायस्थ, दीना-भदरी, नैका-बनिजारा, विद्यापतिक आयु अवसान प्रमुख अछि। ऐ प्रकारे दुनू चित्रकथा पढ़लापर एहेन लागल जे ई कथा सभ ऐतिहासिक महत पाओत। ऐ प्रकारक रचनाक सर्वथा अभाव सन छल। जेकरा प्रीतिजी हमरा सबहक समक्ष राखि एकरा धरोहरि स्वरूप महत देलनि। ऐ पोथीकेँ नैना-भुटुकाक पहिल पसिन कहल जा सकैत अछि। खास कऽ जे बच्चा नंदन, बालहंस, वा अन्य पोथी पढ़बाक हिस्सक लगौने छल आब ओ लेखिका द्वारा रचित रचनासँ लाभ उठाओत। पोथीक प्रत्येक चित्र तथ्यात्मक आ उद्देश्यपरक अछि। चित्रकथाक माध्यमसँ प्रीतिजी मिथिलाक विलुप्त प्राय भेल विषय-वस्तुकेँ कथाक रूप दऽ जीवंत कऽ देलनि। मैथिली प्रेमी ऐ तरहक रचनाकेँ नजरअंदाज नै कऽ सकैत छथि। आबैबला पीढ़ीक लेल ऐ प्रकारक रचना नै मात्र मनोरंजक अपितु प्रेरणादायक सेहो सिद्ध हएत। पोथीक सभसँ पैघ बात ई अछि जे प्रत्येक चित्र एकटा विशेष अंदाज आ दशाकेँ प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि जे लिखल गेल पाँतिक भाव स्पष्ट कऽ रहल अछि। प्राय: सभ जातिक लोकक चित्रण ऐ चित्रकथामे समाएल अछि। जे प्रीति जीक समन्वयवादी सोचक परिचायक अछि। प्रगतिशील विचार तँ सहजहि। मिथिला सभ दिनसँ उदारताक परिचायक रहल मुदा किछु लोक बेवसायिक एवं जातिवादी सोचक

लाड़नि बीचमे चलौलनि आ चलाइयो रहल छथि। हमरा हर्ख भऽ रहल अछि ऐ चित्रकथाक लेखिकापर जे एतेक सुन्दर, सुगम, आ प्रगतिशील डेग बढ़ा मैथिली साहित्यक विकासमे एकटा बेछप स्थान बनौलनि अछि।

हमर शुभकामना सतत रहत जे प्रीतिजी ऐ प्रकारक रचना करैत रहती तँ निश्चित रूपेँ मिथिला, मैथिली आ मैथिलामे रहनिहार सभ पूर्णत: समृद्ध भऽ जेताह।

अध्याय-२

शिव कुमार झा 'टिल्लू'

अध्याय-२ भाग-१ समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

किछु अर्थमे सन् २००८-०९ कैँ मैथिली साहित्यक विकासक लेल क्रांतिकाल मानल जा सकैत अछि। सन् २००८ मे मैथिली साहित्यमे एक गोट बाल साहित्यक रचना मैथिलीक प्रवीण समीक्षक श्री तारानंद वियोगी जी कएलनि पोथिक नाओ- ई भेटल तँ की भेटल। साहित्य अकादमी द्वारा नव सृजित बाल साहित्य पुरस्कारसँ एहि पोथीकैँ पुरस्कृत कएल गेल अछि। जौं किछु बर्ख पूर्वमे साहित्य अकादमी एहि पुरस्कारकैँ स्थापित करितए तँ भऽ सकैत छल जे मैथिलीक स्थान रिक्त रहितए किएक तँ कोनो-कोनो वर्षमे मैथिली साहित्यमे बाल साहित्यक रचना भेले नहि छल। सन २००९ मे मैथिलीमे कोनो महिला रचनाकार द्वारा पहिल नाटक लिखल गेल। रचनाकार छथि मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती विभा रानी आ नाटकक नाओ- भाग रौ आ बलचन्दा। हर्खक गप्प जे एहि नाटकमे बाल आ नारी मनोविज्ञानकैँ बिम्बित कएल गेल अछि। ओना तँ श्रीमती इलारानी सिंह सेहो नाटक लिखने छथि मुदा ओ सृजनात्मक नहि भऽ कऽ अनुदित अछि। तँए श्रीमती विभारानीकैँ मैथिली साहित्यक पहिल महिला नाटककार मानल जा सकैत अछि। ओना श्रीमती उषा किरण खान लिखित भुसकौल वाला पहिने छपल। क्रांतिक दीप कोनो योजना बना कऽ नहि जाराओल सकैत अछि। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण मैथिलीमे पहिल चित्रकथा- गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा (२००८) प्रस्तुत करैत अछि। हम एहिसँ पूर्व एहि विषयक पोथी मैथिलीमे नहि देखने छलहुँ। एहि चित्रकथाक सृजन श्रीमती प्रीति ठाकुर कएलनि। प्रीति जीक नाओ एहि चित्रकथाक लेखनसँ पूर्व कोनो साहित्य वा चित्रांकनमे झाँपल जकाँ छल। पहिलुक रचना आ ओहो मैथिली साहित्यक लेल आदि विषय मूलक। भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे रहितहुँ हम सभ कतहु-कतहु गुम्म छलहुँ। प्रवर भाषा समूहक भाषा मैथिलीमे किछु रचनाक वर्ग अछूत छल। आश्चर्य लागल संगे विस्मित भेलहुँ जे हमरा समाजक एकटा महिला एहि नवल विषयपर कोना केन्द्रित भऽ गेली?

एहि चित्रकथामे सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृतिकेँ बिम्बित करैत जनश्रुति आ ऐतिहासिक कथाक १६ गोट खंडपर चित्रकथा प्रस्तुत कएल गेल। पहिल नौ गोट कथा गोनू झाक करनीपर लिखल गेल अछि। गोनू झा कोनो अनचिनहार नाओ नहि। मुगल दरबारमे जे स्थान वीरबलकेँ भेटल अछि मिथिलाक बाक-पटुमे ओ स्थान गोनू झाकेँ देल गेल। गोनू विदूषक छलाह मुदा ककरो महिमामंडित मात्र करए बला विदूषक नहि। अपन बुद्धि आ चातुर्यसँ ककरो विस्मित करबाक कारणेँ हिनक कोनो जोड़ नहि। दुर्भाग्य जे गोनू मैथिल छलाह जौं अंग्रेज वा कोनो आन पाश्चात्य देशक रहितथि तँ वीरबलसँ हिनक तुलना नहि भऽ कऽ वीरबलक तुलना हिनकासँ कएल जाइत। हिनक ई दुर्भाग्य हमरा सबहक लेल सौभाग्य भेल जे एहि मिथिलाक भूमिपर महाकवि विद्यापति, गोनू आ राजा सलहेस सन महामानवसँ हमरा सभकेँ आन लोक जनैत अछि।

एहि पोथीमे संकलित पहिल चित्रकथा गोनूझा आ माँ दुर्गाजीसँ गोनू झाक बौद्धिक साक्षात्कारक चर्च कएल गेल अछि। एहि कथाकेँ तँ ऐतिहासिक मान्यता नहि देल जा सकैत अछि किएक तँ इतिहास आ विज्ञानमे भगवान मात्र प्रकृतिस्थ होइत छथि, कोनो वैधानिक नहि। मुदा जौं भावक शतदलक संग देखल जाए तँ नेना-भुटका लेल ई प्रश्नसँ भरल कथा जिज्ञासा अवश्य उत्पन्न कराएत जाहिसँ अंतत: मैथिली साहित्य आ भाखाक लेल लाभ स्वाभाविक मानल जा सकैछ। चित्रक स्तर तँ नीक, रंग-नीक प्रदर्शन नीक मुदा सिंहक चित्र बिलाड़ि जकाँ लागल। कोनो राजदरबार हुअए वा कोनो पितृ आ देव कर्मक स्थल, ब्राह्मणक संग-संग ठाकुर अर्थात हजामक भूमिका आन लोकसँ बेसी मानल जाइत अिछ। “गोनू झा आ स्वर्गकथा”मे एकटा ठाकुर गोनूकेँ पछाड़ए चाहैत छथि मुदा स्वयं चित्त। छोट चित्रकथामे नीक चुटुक्का जकाँ प्रस्तुति। गोनू झासँ संबंधित आन सात गोट कथा सेहो चोहटगर देल गेल अछि। जनश्रुतिक आधारपर लिखल गेल कथा सभ मात्र बालमनोविज्ञानक सेहंतित छायाचित्र प्रस्तुत करैत अछि किएक तँ लिखलो मात्र नेना भुटकाक लेल गेल अछि।

रेशमा चूहड़मल कथा ऐतिहासिक कथा थिक। भऽ सकैत अछि आर्यावर्त्तक इतिहासकार एकरा मान्यता नहि देथु मुदा मिथिलाक गाम-गाममे चर्चित अछि। दूधवंशी जातिसँ यदुवंशक तादात्म्य होइत छैक मुदा एहि साहित्यक चूहड़मल दुग्धवंशी दुसाध छथि आ

नायिका रेशमा भूमिहार ब्राह्मण। नीक लागल जे मोकामाघाटक कथाक सृजन करबामे पूर्णियाक वणिता आ मधुबनीक पुत्रवधूकैँ कोनो संकोच नहि भेलनि। सिनेहकैँ समाजक जातीय व्यवस्थामे पददलित करबाक दृष्टिकोणकैँ एहि चित्रकथामे तोड़ल गेल अछि। नैका बनिजारा कथापर डॉ. मणिपद्म जीक लेखनी मैथिलीमे सन् १९७३ मे फुजि गेल अछि तँए एहि कथासँ लोकजन सभ निश्चित परिचित छथि। प्रवेशिका स्तरपर मणिपद्म जीक ई कथा मैथिलीमे देल गेल छल। एहि पोथीमे सरल भाषा आ बालोनुरागी चित्रांकन नीक लगैत अछि। भगता ज्योति पजियारक चित्रांकन सेहो नीक रूपेँ बिम्बित कएल गेल अछि। प्राचीन जनश्रुतिक लुप्त कथा महुआ घटवारिन आ छेछन महाराज पढ़ि आ एकर चित्रांकन देखि नवका पिरहीक नेना भुटका सभ निश्चित रूपसँ मिथिलाक संस्कृतिक कोखिमे प्रवेश करबाक प्रयास करतथि। राजा सलहेस सन चराचर चर्चित विषय वस्तुक छायांकन आ कालिदासकैँ मिथिलाक संस्कारसँ संबंधक प्रदर्शन मनोवांछित लागल।

निष्कर्षत: प्रीति जीक नव प्रयास नवल सोच आ बहुआयामी विषय वस्तुक प्रस्तुति सराहनीय अछि। मैथिली साहित्यमे नव प्रकारक रचना थिक गोनू आ आन चित्रकथा तँए सम्यक समीक्षा करब हम उचित बुझैत छी।

अध्याय-२ भाग-२ समीक्षा - मैथिली चित्रकथा

आठ बर्ख पहिने ‘मैथिली’ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल कएल गेल। कतिपय हर्षित भेलहुँ जे हमरो भाखाकेँ वैधानिक अस्तित्व देल गेल। मोने-मोन ओहि सभ गोटेक प्रति कृतज्ञता आ मंगल कामना करैत छलहुँ जनिक प्रयाससँ ई काज भेल। मुदा! एकटा कचोट अर्न्तमनकेँ हिलकोरि रहल छल जे आगाँ की हएत? अपन भाखाक भविष्य नीक नहि देखि रहल छलहुँ।

एहि व्यथाक सभसँ पैघ कारण छल हमरा सबहक भाषा साहित्यमे कोनो क्रांतिक आश नहि नजरि आबि रहल छल। वर्तमान पीढ़ी मातृभाषासँ दूर भऽ रहल छलाह। अगिला पीढ़ीक गप्प की कहू? कतेक नेनाकेँ ओलती, चिनुआर, थान, छान-पग्घाक अर्थ बूझल अछि? जौं कोनो अभिभावकसँ पूछैत छी जे नेनासँ अपन बयनामे गप्प किए नै करैत छी तँ जवाब भेटैत अछि जे स्कूल जाएत तँ हिन्दी आ अंग्रेजी नहि बूझत तेँ अखनेसँ सिखा रहल छी। नेनोमे चेतना नहि किएक तँ बाल-साहित्य मैथिलीमे लिखले नहि गेल। जौं किछु अछि तँ ओकर अर्थ कतेक नेना बूझैत छथि। महान लेखक वा कविक श्रेष्ठ भाषामे लिखल रचना हम नहि बूझैत छी तँ हमर धीया-पूता कोना बूझतथि? एहि मध्य मैथिलीमे विदेह-सदेहक पदार्पण भेल। नव रूप, नवल सोच आ सकारात्मक दृष्टिकोणक संग। मौलिक बिन्दुपर रचना होअए लागल। उपेक्षितकेँ नव आश भेटल। साहित्य आन्दोलनक एकटा परिणामक चर्च हम पाठकसँ कऽ रहल छी- मैथिली चित्रकथा- श्रुति प्रकाशन दिल्ली द्वारा विदेहक सौजन्यसँ ई पोथी सन् २००९ मे बहराएल। एहि पोथीक लेखिका छथि श्रीमती प्रीति ठाकुर। हिनक ई दोसर रचना थिक। विषय पूर्णत: नव, बाल साहित्यक चित्रकथा। एकरा रचना नहि कहल जा सकैछ, किएक तँ एहिमे कोनो साहित्यक सृजन नहि, लोक कथा आ जनश्रुति जे मिथिलामे पहिनेसँ सुनल जा रहल छल ओकरा चित्रक संग चर्च कएल गेल अछि। एहि प्रकारक जन श्रुति गाम-गाममे बूढ़-पुरानक मुँहसँ बाजल जाइत छल मुदा आब विलीन भऽ रहल अछि। ओहि विलुप्त विषयपर चित्रकथा लिखि प्रीति जी बड्ड नीक काज कएलनि। एहि पोथीमे जे विशेष आ नव सकारात्मक पक्ष देखलहुँ ओ अछि विषयक आ कथाक चयन। सम्पूर्ण मिथिला एहिमे समाएल छथि। सभ जाति समाजक लोक-कथाक चित्रण कएल गेल अछि। मोती दाइ कथामे रजक जातिक निष्ठाक चित्रण तँ राजा

सलहेसमे दूधवंशीक भावनाक व्याख्या। मिथिला दरबारक वोधि-कायस्थक गंगा लाभ मनोरम लागल। बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दलाल बेगूसरायक लोक कथा थिक। पहिने लोकक मानसिकता छल जे बेगूसरायक लोक मैथिली भाषी नहि छथि। हमरो मर्म होइत छल किएक तँ हमर मातृक बेगूसरैए जिलामे अछि। एहि कथाकेँ पढ़ि तिरहुतिया आ दछिनाहाक भेद हियासँ मेटा गेल। हमरा सबहक समाजक एकटा उपेक्षित जाति छथि मुसहर। मुसहरोमे दूटा आदर्श पुरूष भेल छलाह दीना आ भद्री। ओहि दीना भद्रीक कथा बड्ड नीक लागल। पहिने बूझैत छलहुँ जे तपस्वी वनबाक लेल बौद्धिकता आ भौतिकता पैघ मापदंड थिक, मुदा आब ई भ्रम दूर भऽ गेल। एहि प्रकारे बहुत रास कथाक चित्रण कएल गेल अछि।

एकबेर आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल आ बेचन ठाकुर जीक रचना पढ़ि हम लिखने छलहुँ जे ‘विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन’ मैथिली पर लागल जातिवादी कलंककेँ धो देलक। जौं ई गप्प सत्य अछि तँ ओहिमे एहि पोथीक भूमिकाकेँ नहि नजरि अंदाज कऽ सकैत छी। वर्तमान पीढ़ीक लेल प्रेरणादायी आ अगिला पीढ़ीकेँ मैथिलीक प्रति सिनेह जगाबए लेल ई पोथी प्रासंगिक अछि। भाषा संपादन नीक लागल। चित्रक स्तर बड़ सुन्नर आ व्यापक अछि। नीक कागतक प्रयोग आ चित्रक रंग संयोजन सेहो सेहंतित लागल।

अंतमे हम प्रीति जीकेँ धन्यवाद दैत छिअनि जे हमरा सबहक बीच एकटा झाँपल विषएपर लेखनीक प्रयोग कएलनि। आगाँ सेहो हम आशा करैत धन्यवाद ज्ञापन करैत छी।

अध्याय-२ भाग-३ समीक्षा - मिथिलाक लोक देवता

कोनो साहित्यक समृद्धिक आधार महाकाव्य, प्रबन्ध काव्य, उपन्यास वा कथाक उत्तर आधुनिक विवेचनकेँ मानल जाइत अछि। ऐ दिशामे मैथिली एखन बड़ पाछू अछि किएक तँ समग्र साहित्य विधाक परम्परागत रूपमे ई भाषा बाझल मानल जा सकैछ। साहित्यक विकास तखने संभव जखन भाषाक दीर्घकालीन संभावना परिलक्षित होएत। पुरना पीढ़ी झखड़ि रहल छथि आ नवका पीढ़ीमे शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी तखन मैथिलीक अस्तित्वपर अपने आप प्रश्नचिन्ह लागब दर्शनीय। गाम-घरक नेना-भुटकाकेँ जौं छोड़ि देल जाए तँ मैथिल परिवारक शैशवक मातृभाषा निश्चित रूपेँ बदलि रहल अछि।

प्रारंभिक शिक्षाक माध्य अंग्रेजी आ हिन्दी थिक। ऐ दशामे साहित्यसँ बेशी आवश्यक अछि भाषाकेँ बचाएब। मैथिली तखने अपन आस्तित्वकेँ दृढ़ रूपेँ राखि सकतीह जखन नवका पीढ़ीमे मातृ आ वात्सल्य सिनेहक वेदना हुअए। ऐ लेल आवश्यक अछि बाल मनोविज्ञानकेँ स्पर्श करएबला बाल साहित्यक प्रोत्साहन।

ऐ दिशामे कहबाक लेल तँ बहुत रास कार्य भेल अछि परंच वास्तविक बाल साहित्यमे आधुनिक पीढ़ीक रचनाकारक समूहमे अग्रगन्या छथि श्रीमती प्रीति ठाकुर। हिनक तेसर पोथी 'मिथिलाक लोक देवता' श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ सन् २०१० मे बहार भेल।

टी.एस. इलियटक Tradition and the individual talent (सन् १९१७) क अनुसार कोनो कवि, कथाकार वा कलाकार स्वयंमे पूर्ण अर्थ नै स्पष्ट करैत छथि। हुनक कलाक तुलना मृत कवि वा कलाकारक रचनासँ कएलाक बादे हुनक मूल्यांकन कएल जा सकैछ। जौं ऐ मतकेँ प्रासंगिक मानल जाए तैयो प्रीतिजी अतुलनीय छथि किएक तँ हिनकासँ पूर्व ऐ प्रकारक चित्रात्मक आ लयात्मक शैलीमे बाल गद्य पहिने मैथिलीमे लिखल नै गेल। ई अक्षरश: सत्यो थिक किएक तँ आदि पुरुषक माथपर पाग रखबाक साहस कियो नै कऽ सकल। संगहि ऐ तथ्यकेँ जानब सेहो आवश्यक जे अन्य भाषा समूहसँ तुलनाक बाद प्रीतिजी कतए छथि?

‘सामा चकेबा’ परम्परागत जनश्रुति आ पौराणिक कथाक आधारपर मिथिलाक गाम-गाममे प्रचलित कार्तिक पूर्णमासीक पावनि थिक। ऐ कथाकेँ ऐ पोथीमे सम्मिलित कऽ प्रीतिजी कोनो नव रचनात्मक कार्य नै कएलनि परंच अनचोकेमे नवका पीढ़ीकेँ अपन संस्कृतिसँ अवश्य अवगत करा देलखिन। अनचोके शब्दक प्रयोग ऐ दुआरे कएलौं किएक तँ बहुत रास गामसँ ई पावनि लुप्त भऽ रहल अछि शहरमे तँ एकर अस्तित्वक कल्पना करब सेहो असंभव। आन ठाम जकाँ मिथिलामे सेहो पलायनवाद हावी भऽ गेल छैक। कोनो आवश्यक नै जे पलायनक बाद लोक अपन संस्कृतिकेँ दड़भंगिया प्रभावमे झाँपि कऽ राखि सकथि। तँए एहेन पावनिक चर्च आधुनिक पीढ़ी लग आवश्यक। जखन चर्च हएत तँ भऽ सकैछ जे प्रवासी नेनामे ऐ प्रकारक संस्कृतिसँ जुड़ल रहबाक प्रेरणा जागए। मधुश्रावणी वा कोजगराक सदृश सामा चकेबा कोनो जाति विशेषक पावनि नै थिक वरन् ई सम्पूर्ण मिथिलाक प्रतिनिधित्व कएने अछि।

साहित्यानुरागी लोकनि ऐ पोथीकेँ रचनात्मक कथा (creative story) नै मानताह ई ध्रुव सत्य किएक तँ एकर कथा सभा नूतन कल्पना नै भऽ कऽ परम्परागत शैली आ कथाक प्रतिरूप थिक। ऐ दुआरे रचनाकारक आलोचना सेहो संभव अछि। मुदा ई धियान राखब सेहो आवश्यक जे अबोध नेनाकेँ क्लिष्ट साहित्यसँ कोनो सिनेह नै होइछ। ओ तँ महाकाव्यक पाँतिसँ बेसी ‘आनी-मूनी हम नै जानी’ सदृश अर्थहीन पाँतिसँ सिनेह रखैत अछि। तँ चालनि बाढ़नि डेढ़ बितना, जेहन करनी, चारि बटोही, बगियाक गाछ आदि जनश्रुतिसँ संबंधित कथानककेँ बाल मनोविज्ञानसँ संबंधित माननाइ उचित हएत। लेखिका पहिनहि ईमानदारीसँ ई स्वीकार कएने छथि जे बाल कालमे बूढ़-पुरानक मुखसँ जे सुनने छलीह तकरा अपन शब्दमे कथाक रूप दऽ देलखिन।

ऐ पोथीक सबल पक्ष अछि कथा चित्रात्मक विवेचन। मोती सायर, लालबन बाबा, गरीबन बाबा, बिहुला, सीता आ सुग्गा, अयाची मिश्र, पक्षधर मिश्र आ उगना सन कथा चित्रकेँ तैयार करबामे कतेक मेहनति आ समए लागल हेतनि ओ तँ लेखिके कहि सकैत छथि। परंच ई चित्र अपन विविध मूक शैलीमे नेना-भुटकाक संग अवश्य वार्तालाप करत। आलोचनात्मक पक्षसँ जौं देखल जाए तँ एकरा आन भाषा साहित्यक कॉमिक्ससँ बेसी नै

मानल जाएत। मुदा एहेन दीर्घसूत्री आलोचके कऽ सकै छथि। किएक तँ ई कोनो कम्प्यूटरक खेल नै अपन मस्तिष्कमे उपजल बालउद्बोधनक चित्रात्मक शैली थिक जे समालोचनाक भयसँ मुक्त रहैत लेखिका मात्र नेनाक लेल कएने छथि।

रंग समंजन सेहो नीक लागल। अंतिम किछु चित्र श्वेत-श्याम रूपेँ देल गेल जइमे नेना स्वयं रंगरोगन कऽ सकैत छथि।

ऐ पोथीक कथानक परम्परागत अछि मुदा शैली आ चित्रांकन नव तँए अपन उद्देश्यमे रचनाकार सफल छथि। दुर्बल पक्ष जे चित्रक संग जे किछु कथा देल गेल अछि ओकरा आर विस्तृत कएल जा सकैत छल। जेना मोती सायरसँ लऽ कऽ मीरा साहेब धरिक चित्रकथामे कथानक एकाएक बदलि जाइत अछि, जे सारांश जकाँ लगल। मुदा आशा करैत छी जे नेना सभकेँ नीक लागि रहल होएतनि।

अध्याय-३

प्रो. वीणा ठाकुर- गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रीति ठाकुर रचित "गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा" (२००८) पढ़बाक आ देखबाक सुयोग भेल। देखबाक ऐ लेल जे ई पोथी चित्रकथा थिक अर्थात चित्रक माध्यमे संकलित सोलह कथाक चित्रण लेखिका कएने छथि। सोलह कथामे नौ कथाक नायक छथि गोनू झा आ शेषमे रेशमा चूहड़मल, नैका-बनिजारा, भगता ज्योति पँजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महराज आ कालिदास। सभ पात्र मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत।

वस्तुतः संस्कृति शब्द अत्यन्त व्यापक अछि, दोसर शब्दमे कहल जा सकैत अछि जे एहन व्यवहार जे परम्परासँ प्राप्त होइत अछि, संस्कृति कहबैत अछि। एकरा सामाजिक प्रथाक पर्याय सेहो कहल जा सकैत अछि। प्रेम, त्याग, दया, करुणा, सहानुभूति आदि समस्त गुण संस्कृतिक अन्तर्गत समाहित होइत अछि। संगहि कलाक उद्देश्य जौँ सौन्दर्यक अनुसंधान एवं रसानुभूति होइत अछि तँ कलाक संबंध लोक संस्कृतिसँ रहब आवश्यक भऽ जाइत अछि। गोनू झाक कथा मिथिलाक घर-घरमे जनकण्ठमे व्याप्त अछि प्रायः प्रत्येक मिथिला निवासी अपन बुजुर्गसँ गोनू झाक कथा सुनने होएत आ पश्चात अपन बाल-बच्चा संगी-साथीकेँ सुनौने होएत। तहिना नैका बनिजारा, सलहेस, छेछन महराज, भगता ज्योति पँजियार- अपन शौर्य, वीरता, पराक्रम आ उदात्त व्यक्तित्वक कारणेँ कहियो जौँ लोकनायक छलाह तँ पाछाँ लोकदेवता रूपमे पूजित होमए लगलाह। तहिना कालिदास अपना विद्वता एवं पाण्डित्यसँ भारतीय संस्कृतिमे अपन महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित कऽ लेने छथि। महुआ घटवारिनक आदर्श प्रेम कथा एहुठाँ आदर्श रूपमे चित्रित होइत अमर भऽ गेल अछि। पोथीमे संकलित प्रत्येक पात्र एवं कथा मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व कऽ रहल अछि।

संस्कृति लोक जीवनसँ सम्बद्ध रहैत अछि। समाज आ संस्कृतिमे अभिन्न सम्बन्ध अछि किएक तँ संस्कृतिक निर्माण काल सापेक्ष होइत अछि, जेना समाजमे नीक कृत्यक अनुकरण होइत अछि। किछु अवधि पश्चात ओ समाजक प्रकृति भऽ जाइत अछि।

कालान्तरमे ईएह प्रकृति संस्कृतिक रूप धारण कऽ लैत अछि। एवं प्रकारे कृति, प्रकृति आ संस्कृतिक क्रम चलैत रहैत अछि। ईएह कारण अछि जे संस्कृतिक निर्माण आ विनाशमे समय लगैत अछि जखनकि सभ्यतामे परिवर्तन कम समयमे होइत अछि। पोथीमे संकलित प्रत्येक पात्र अपन-अपन समयक प्रतिनिधित्व करैत मिथिलाक संस्कृतिक प्रतीक छथि। कलाकार, लेखिका प्रीति ठाकुरजी रेखा आ रंगक माध्यमसँ चित्रकथाक रचना कएने छथि। प्रत्येक चित्र किछु संकेतकेँ प्रकट कऽ रहल अछि। अकारण वा अनायास किछु नै बनाओल जा सकैत अछि। प्रत्येक चित्र तथ्यात्मक अछि, प्रत्येक रेखा एकटा कथाक निर्माण कऽ रहल अछि। मिथिलाक जन-जीवनक अभिव्यक्ति ऐ चित्र कथाक माध्यमसँ भेल अछि। वस्तुतः लोक चित्र कला तत्कालीन लोक जीवनक चित्रण करैत अछि जेना लोकगीत, लोकनृत्य, लोकभाषा आदि माध्यमसँ तत्कालीन समाजक स्वरूपक ज्ञान होइत अछि।

फूलक सुगंध सदृश संस्कृति अलक्ष्य होइत अछि मुदा वातावरणकेँ अपन सौरभसँ सतत सुवासित करैत रहैत अछि। ई आन्तरिक गुण थिक जकर मात्र अनुभव कएल जा सकैत अछि। एकर स्थान हृदयमे रहैत अछि, बाह्य आचरण ओकर मात्र प्रतिफल थिक। ऐ संस्कृतिक अभिव्यक्तिक माध्यम कला होइत अछि जेना नृत्य कला, संगीत कला, चित्र कला। चित्रकला मूक होइत अछि जकर भाषा रंग आ रेखा चित्र होइत अछि। कलाकार प्रीति ठाकुरजी मिथिलाक ऐ संस्कृतिकेँ नै मात्र रंग रेखाक माध्यमसँ चित्रित कएने छथि अपितु शब्दक माध्यमसँ चित्रित करैत अपन कलाकृतिक सौन्दर्य द्विगुणित कऽ लेने छथि। वस्तुतः हिनक ई प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय छन्हि।

कला मानव संस्कृतिक उपज थिक, कला आ मनुष्यक सम्बन्ध अविभाज्य अछि। मानव द्वारा कलाक प्रतिष्ठा भेल अछि आ कला द्वारा मानव आत्मगौरव आ आत्मचैतन्य प्राप्त कएने अछि। कलाक माध्यमे सँ मानव जीवनमे माधुर्य आ सौन्दर्यशीलताक जन्म भेल आ कर्म मधुर आ सुन्दर बनि गेल। वस्तुतः सौन्दर्यक मूलभूत प्रेरणा कलाक उद्गम स्थल थिक आ सौन्दर्याभिरुचिक प्रमाण। मनुष्यक अनुकरण प्रवृत्ति थिक। आदियेकालसँ प्राकृतिक दृश्य मानव मोनकेँ आनन्दित करैत रहल आ ऐ दृश्यक निर्माण करबाक इच्छा मोनमे जागृत भेल आ ईएह इच्छा जन्मक प्रेरक भेल। प्रीति ठाकुर जीक आत्मगौरव एवं आत्मचैतन्य ऐ चित्र कथाक रचना लेल प्रेरक भेलनि, आत्मगौरव मिथिलाक संस्कृतिक प्रति एवं

आत्मचैतन्य सौन्दर्यशीलताक कारणेँ आ जकर प्रतिफल भेल विभिन्न कालक मिथिलाक लोकनायकक चित्रकथाक माध्यमसँ निरूपण करबाक।

प्रिन्ट मीडिया आ इलेक्ट्रानिक मीडियाक कारणेँ जखन सम्पूर्ण विश्वक ग्लोबलाइजेशन भऽ गेल अछि, मिथिलाक चित्रकलामे अन्य कलाक विधा सदृश सेहो पारम्परिक स्वरूपमे परिवर्तन भेल अछि। परिवर्तनेक दोसर नाम तँ विकास थिक। लेखिका मिथिला चित्रकलाक पारम्परिक स्वरूपमे परिवर्तन तँ कएने छथि मुदा लोक चित्रकथाक माध्यमसँ एकर सार्थकता आ प्रासंगिकतामे सफल भेल छथि। किएक तँ मिथिलाक चित्रकला मूल्यग्राही अथवा कोमल हृदय कलाकारक मात्र हॉबी थिक अपितु परम्पराबद्ध समाजक एकटा अभिन्न जीवन-दर्शन थिक, संगहि मैथिल संस्कृतिक जीवनक एक अविच्छिन्न अंग सेहो।

समाजक परिवर्तनक प्रभाव कला आ साहित्यपर पड़ब स्वाभाविक अछि संगहि कला आ साहित्य समाजक प्रतिबिम्ब सेहो थिक। वस्तुतः साहित्य युगक प्रवृत्ति एवं प्रयोजनक उपेक्षा नै कऽ सकैत अछि। कला जीवनसँ निरपेक्ष नै रहि सकैत अछि कारण एकर आधार मानव जीवन थिक। एकर पोषण जीवनसँ होइत छैक, एकर प्रभाव मानव जीवनपर पड़ैत छैक, तेँ कलाकार जीवनक प्रति अपन उत्तरदायित्वक उपेक्षा नै कऽ सकैत अछि। आ ईएह कारण अछि जे कलाक स्वरूपमे परिवर्तन होइत रहैत अछि। ऐ वैश्विक प्रतियोगिताक युगमे मिथिलाक चित्रकला मात्र कोहबर, डाला, अष्टदल, अरिपन, मंडप, वेदी आदिक चित्र निर्माणक परिधिमे ओझरायल अछि, आवश्यक अछि जे मिथिला चित्रकलाक विषयवस्तुमे विस्तार कएल जाए। लेखिकाक ई सर्वथा नूतन प्रयास छन्हि। प्रीति ठाकुरजी परम्परागत विषय वस्तुसँ आगाँ बढ़ि मिथिलाक लोककथाकेँ चित्रकथाक माध्यमे चित्रित करैत मैथिली साहित्य मध्य सर्वथा नूतन शैलीक रचना कएलनि अछि। निश्चित रूपसँ मैथिली साहित्यक भंडारमे श्रीवृद्धि तँ भेल अछिये, ई नव शैली, नव विषय वस्तु एक शब्दमे नव स्टाइल सर्वथा प्रशंसनीय अछि।

समय परिवर्तनशील होइत अछि, ऐ बदलैत समयक संग जे अपनामे परिवर्तन नै आनैत अछि से विकासक धारासँ बाहर भऽ जाइत अछि। तेँ समयक यथार्थक चित्रण कलाक

माध्यमसँ होएब आवश्यक अछि, तखने कला अपन प्रासंगिकता सिद्ध कऽ सकैत अछि। वर्तमान बदलैत आधुनिक समाजक आवश्यकताक अनुरूप लेखिका ऐ पोथीक रचना कएलनि, ई प्रासंगिक तँ अछिये संगहि लोकोपयोगी सेहो अछि।

संगहि एकटा तथ्य आर महत्वपूर्ण अछि। मैथिली लोक साहित्यक संरक्षिका मिथिलाक महिला लोकनि छथि, किएक तँ हिनकहि कण्ठमे लोकगीत आ लोकनृत्य आ हिनकहिं हाथे लोकचित्रकला जीवित अछि। त्याग आ तपस्यासँ युक्त हिनका लोकनिक सांस्कृतिक चेतनासँ लोककला जीवित अछि तथा हिनकहि लोकनिक कोमल तूलिकाक प्रसादात मिथिलाक चित्रकला जीवित, संरक्षित एवं विकसित भऽ रहल अछि।

आ ई पोथी “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क रचयिता सेहो महिला छथि। ई सर्वथा स्तुत्य थिक।

अध्याय-४

डा. रमण झा- ’गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ’मैथिली चित्रकथा’

श्रीमती प्रीति ठाकुरक दू गोट सचित्र कथा संग्रह ’गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ’मैथिली चित्रकथा’ देखलहुँ आ पढ़लहुँ । चित्रक माध्यमे कथाक प्रस्तुति एकटा अभिनव प्रयोग थिक जे लोककेँ, विशेषतः बच्चा सभकेँ अपना दिस आकृष्ट करत।

खिस्सा पिहानी कहबाक आ सुनबाक परंपरा मिथिलामे अदौसँ चल आबि रहल अछि। बूढ़ पुरान स्त्रीगण लोकनि छोट-छोट बच्चा सभकेँ सुतयबाक काल नाना प्रकारक खिस्सा सभ सुनबैत छथि जे मनोरंजनक संग संग उपदेशप्रद एवं शिक्षाप्रद सेहो रहैत अछि। ओहि खिस्सा सभमे प्रसिद्ध अछि -दैत्य सभक खिस्सा, राज कुमार सभक खिस्सा, रामायण महाभारतक खिस्सा, गोनू झाक खिस्सा प्रभृति। उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालयमे प्रवेश कयलाक बाद छात्र-छात्रा लोकनि स्वयं कथा पढ़ैत छथि, बुझैत छथि, ओकर रसास्वादन करैत छथि आ समयपर लोककेँ सेहो सुनबैत छथि।

मैथिलीक संग विडम्बना ई अछि जे महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तरपर लोक विषयक रूपमे मैथिली रखितो अछि, पढ़ितो अछि किन्तु विद्यालय स्तरपर सरकारी घोषनाक बादो लोक ने मैथिली विषयक रूपमे रखैत अछि आने मैथिली माध्यमे कोनो आने विषय पढ़ैत अछि। एतेक धरि जे मिथिलांचलक विद्यालय सभमे गुरुओजी लोकनि मैथिलीमे पढ़यबामे हीनताक बोध करैत छथि। नव युवक लोकनि विवाह होइतहि पत्नीक संग हिन्दी झारय लगैत छथि। कनेक पढ़ल लिखल आ पदवीवला लोक सभकेँ देखबनि जे अपनामे जँ मैथिलीयोमे गप्प करताह तँ बच्चा सभसँ निश्चय रूपसँ हिन्दीमे। हुनका सभकेँ ई नहि बुझाइत छनि जे मैथिली भाषा कठिन छैक। एकर समुचित ज्ञान जँ बच्चामे नहि होयतैक तऽ बादमे होयब कठिन छैक । कवीश्वर चन्दा झा अमैथिलीभाषी (अन्यदेशीयक)क हेतु मैथिली भाषा ओहने कठिन कहलनि अछि जेहन एकटा इचना माछक बच्चाक हेतु समुद्रक सभटा जलकेँ पीयब छैक-

भाषा यदन्यदेशीयो मिथिलायाः भवेत्तदा।

पीतमिंचाकपोतेन समस्तं वारिधेर्जलम्।।

जतय धरि हिन्दीक प्रश्न अछि तऽ ओ तऽ राष्ट्रभाषा थिक। अनिवार्य विषय थिक। ओकर ज्ञान तऽ स्वत: प्रत्येक व्यक्तिकेँ होयतैक आ रहिते छैक।

एहन स्थितिमे श्रीमती प्रीति ठाकुरक उपर्युक्त विवेच्य पोथी देखि हमर मन गदगद भए गेल। गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथामे कुल १६ गोट कथा अछि जाहिमे गोनू झासँ सम्बद्ध नओ गोट कथा, महाकवि कालिदाससँ सम्बद्ध एक गोट आ शेष छओटामे राजा सलहेस, नैका बनिजारा इत्यादि प्रमुख चर्चित कथा सभ काल्पनिक चित्रक माध्यमे चित्रित कयल गेल अछि। एहि सभ कथामे किछु बात तऽ शब्दक माध्यमे अभिव्यक्त कयल गेल अछि आ किछु गप्प चित्र स्वयं कहैत अछि। एहि कथा सभक प्रसंग जे लोकक मनमे एकटा भावचित्र छल होयतैक से एतय बुझि पड़ैत अछि जेना साकार भए उठल हो।

विदुषी कथा लेखिकाक दोसर संग्रह थिक मैथिली चित्रकथा जाहिमे कुल १० गोट प्रमुख कथा सभ वर्णित अछि। एहि कथा सभक बीच बीचमे काल्पनिक चित्र सभक समायोजन कथाक यथार्थताकेँ प्रमाणित करैत अछि। एहि संग्रहमे संग्रहित महत्वपूर्ण कथा सभ थिक -राजा सलहेस, बोधि कायस्थ, दीना भदरी, नैका बनिजारा, विद्यापतिक आयु अवसान प्रभृति।

हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे उपर्युक्त दुनू कथा संग्रह बच्चा सभकेँ तऽ आकृष्ट करबे करत अपितु समाजक सभ वर्गक लोककेँ एक बेरि एकरा उलटयबाक लिप्सा होयबे करतैक। एहि दिशामे श्रीमती ठाकुरक स्तुत्य प्रयास अछि, साहसिक डेग अछि आ अभिनव प्रयोग अछि। हमर शुभकामना अछि जे कथा लेखिका एहने सरस, सहज आ सजल रचना सभसँ मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ सुरभित करैत रहथि।

अध्याय-५

धीरेन्द्र कुमार- प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर एक नजरि

मैथिली साहित्यमे पहिल बेर प्रकाशित चित्रकथा उमेश जीक माध्यमसँ भेटल। साहित्य पूर्ण तखने होइत अछि जखन साहित्य सभ विधामे लिखल जाए आ रचना प्रौढ़ होइ। हमर दृष्टिमे चित्रकथामे प्रीति ठाकुरक रचना गोनु झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली लोककथा सफल रचना थीक।

लेखिका धन्यवादक पात्र छथि, एहि कारणे जे मैथिली दिसि हुनक दृष्टि गेलनि। दोसर कारण ई जे मैथिलीक विरासतमे जे कथा लोकमुखमे सुरक्षित अछि तकरा ओ लेखनीक रूप प्रदान कऽ मैथिलीक चित्रकथा विधा जे नगण्य सन अछि- ताहिकेँ समृद्ध करक प्रयास केलनि अछि।

गोनु झा आ आन मैथिली चित्रकथामे प्रकाशित अछि- गोनु झा आ माँ दुर्गा, गोनु आ स्वर्ग, गोनु आ स्वर्ण चोर, गोनु झा आ बिलाड़ि, गोनु झाक दूटा बरद, गोनु झाक महीस, गोनु झाक अशर्फी, गोनु झा आ कर अधिकारीक दाढ़ी, गोनु झाक माए, रेशमा चूहड़मल, नैका बनिजारा, भगता ज्योति पजियार, महुआ घटबारिन, राजा सलहेस, छेछन महराज, राजा सलहेस आ कालिदास आ मैथिली चित्रकथामे अछि मोती दाइ, राजा सजहेस, बोधि-कायस्थ, बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल, अमता घरेन, दीना भदरी, जालिम सिंह, नैका बनिजारा, रघुनी मरड़, विद्यापतिक आयु अवसान ।

सभटा कथा मिथिलाक धरतीसँ सम्बद्ध अछि आ एखन धरि लोक मुखमे सुरक्षित अछि। समैएक परिवर्तन संगे लोक रूचि आ लोक संस्कारमे परिवर्त्तन सेहो होइत अछि। अपन देशक गप्प लिअ। आइ पोथीमे सुरक्षित अछि आयुर्वेद विद्या, यूनानी विद्या, होमयोपैथी आ कतेक रास ज्ञानसँ समर्पित विद्या। जँ पोथीमे सुरक्षित नहि रहत तखन अगिला पीढ़ी एहि विद्यासँ अनभिज्ञ रहि जाएत। तेँ हमर मिथिलामे जे कथा पसरल अछि ओकरा पोथी स्वरूपमे प्रदान कऽ प्रीति ठाकुर जी प्रशंसनीय काज केलनि अछि। वीरबलक कथा भऽ

सकै छल जे लोक बिसरि जाइत मुदा पोथी स्वरूपमे रहलासँ आइ धरि ओ लोक-मानसक रंजनक माध्यम बनल अछि।

चित्रकथाक अपन महत्व होइत अछि। बाह्य-संप्रेषणसँ जे प्रभाव वंचित रहि जाइत अछि ओ संप्रेषित होइत अछि चित्रसँ। नाटकमे अभिनयसँ जे संप्रेषित नहि होइत अछि ओ संप्रेषित अछि रंग, ध्वनि आ प्रकाशसँ तहिना चित्रकथामे सेहो होइत अछि। प्रस्तुत आलोच्य पोथीक चित्र सुसंस्कृत अछि।

बाल साहित्य लेल ई काज प्रीति जीक सराहनीय छन्हि। चारि बर्खक नेना जेकरा अक्षर बोध नहियो छै सेहो कथार्कें परेख सकैए, चित्रक माध्यमसँ। बाल साहित्यक जे अभाव अपना मैथिलीमे अछि ताहिपर बड़का-बड़का विद्वानक अछैत थोड़ेकबो ध्यान नहि देल गेल छल आ खास कऽ एहि तरहक।

पोथी आकर्षक, रूचिकर आ बालमनकेँ प्रभावित करैत अछि। एहि लेल हम फेर एक बेर श्रीमती प्रीति ठाकुरकेँ धन्यवाद दैत छियनि। संगे आशा करब जे आगाँ सेहो एहि तरहक काज करथि।

अध्याय-६

डॉ. शेफालिका वर्मा- प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रत्येक भाषामे किछु एहेन रचनाकार होइत छथि, महिला आकि पुरुष-वर्ग, जे अपन विलक्षण प्रतिभाक कारण सभसँ फराक बुझा पड़ैत छथि। ई दोसर बात थीक कि आलोचक वर्ग महिला लेखनकेँ इतिहासक पन्नाक एकटा कोन दऽ दैत छथि। किछु भाग्यशाली लेखिकाकेँ किछु स्थानो भेटि जाइत छैक, मुदा समग्रतामे नै. लेखनमे महिला पुरुष नै होइत छैक, जइ विषय पर लेखक लिखैत छथि, ओहि पर लेखिका सेहो लिखैत छथि, कखनो बेसी नीक। बस, आब एकेटा प्रतीक्षा अछि जे कोनो सशक्त महिला आलोचककेँ देखी, जे महिला नै भऽ मात्र आलोचक रहथि, पूर्वाग्रहसँ रहित, नीक आलोचनाकेँ जन्म दैत. मैथिली साहित्यक इतिहासमे चारि चान लगाबथि। हम जनैत छी एहेन विद्वान लेखिकाक कमी नै अछि।

प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा गोनू झा पर पोथी देखि चमत्कृतऽ भ गेलौं। पहिने तँ हम मैथिलीक नेना भुटका लेल कोमिक्स बुझलौं मुदा पढ़े लगलौं तँ एकरामे डूमि गेलौं। गागर मे सागर। अद्भुत, मैथिली लोकगाथाक विपुल संसारकेँ शिवक जटाजूट जकाँ केना समेटि लेने छथि, ई पढ़ला उपरान्ते बुझा पड़त। कतेक कथाक खाली नाम सुनने छलौं, ओ सब एहि पोथीमे साकार छल। जहिना आजुक समाज अकबर बीरबलकेँ बिसरि रहल अछि, ओहिना गोनू झाकेँ। प्रस्तुत पोथीक माध्यमसँ पाठक अपन समाजक सब वर्गक आदर्शकेँ चीन्हि सकैत छथि। प्रीति जी केँ अशेष शुभकामना एतेक सुन्दर पोथी लेल। प्रीति जी आ गजेन्द्र जी सँ हम एकटा आग्रह करबैक जे कोसी नदी लेल बड खिस्सा कथा समाजमे पसरल छैक, ओकरो चित्रकलामे समेटि लैथि। कोसी नदीक रहस्यमय चरित्र, सिंघेश्वर बाबासँ विवाह आदि, आदि खिस्सा सब.....। जहिना समाजक प्रत्येक क्षेत्रमे नारी आइ निरंतर आगू बढ़ि रहल छथि, ओहिना मैथिली मिथिलाक विकासमे आजुक नारी अपन अपन स्तरसँ अमूल्य योगदान दऽ रहल छथि। अशेष साधुवाद, प्रीति जी। असंख्य शुभाशंसा।

अनुलग्नक २: गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुरक रचना संसार

I.

गजेन्द्र ठाकुरक रचना संसार

मूल (मैथिली): १.मैथिली समीक्षाशास्त्र, २.मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग), ३.मैथिली प्रतियोगिता, ४.प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१, ५.प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-२), ६.प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-८) (संक्षिप्त), ७. नित नवल दिनेश कुमार मिश्र, ८. दूषण पञ्जी- The Black Book, ९. पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (बीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह), १०. स्वप्नमे मिज्झर होइत, ११. नित नवल सुभाष चन्द्र यादव, १२. जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी,१३. गंगा ब्रिज (नाटक), १४. उल्कामुख (नाटक), १५.संकर्षण (नाटक), १६.धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह), १७.सहस्रजित् (पद्य संग्रह), १८.सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह), १९.त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध), २०.सहस्रबाढ़नि (उपन्यास), २१.सहस्रशीर्षा (उपन्यास), २२.गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह), २३.बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि),२४. Learn Maithili Sign Language, २५.Learn Mithilakshar Script, २६.Learn Braille through Mithilakshar Script, २७.Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script, २८.Learn Kaithi, २९.Learn Newari, ३०.Learn Calligraphic Newari (Ranjana), ३१.Learn Urdu Script, ३२.Learn Tibetan Script, ३३.Learn Japanese Script for Haiku, ३४.Learn Brahmi, ३५.Learn Kharoshthi, ३६.मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत, ३७.जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह), ३८.अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह), ३९.बाङक बङौरा (बाल-पद्य संग्रह), ४०.नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध), ४१.मचण्ड (नाटक),

४२. भऽ जाएब छू(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012), ४३.कमलाक भगता, ४४.तरहरिमे परीलोक, ४५.बेसी छुट्टी कम इसकूल, ४६.बड़द करैए दाउन ने यौ, ४७.बाल गजल, ४८.फिनिश लाइन

मूल (मैथिली- ब्रेल): १.सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)

मूल (अंग्रेजी): १. Rajdeo Mandal- Maithili Writer, २.JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

अनुवाद (अंग्रेजी): १.The_Science_of_Words.

अनुवाद (मैथिली): १.तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, भोजपुरी आ कश्मीरी कविता, ३. विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ), ४. मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका, ५. सुनू, ६.घर सभ, ७.एकटा नीक दिन, ८.चलू हम तँ ठीक छी ने!, ९.की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?, १०.टोस्ट, ११.बड़ीटा! कनियेटा!, १२.एतऽ हम सभ रहै छी, १३.भारतोल्लक राजकुमारी, १४.वुयो, १५.कच-कच कचाक, १६.चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ, १७.नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल, १८.अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला, १९.हारू, २०.अखन नै, अखन नै!, २१.जन्मदिनक उत्सव भोज, २२.मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़, २३.बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि, २४.अंग्रेजी, २५.हम सूंघि सकै छी, २६.छोट लाल-टुहटुह डोरी, २७.करू नीक, भोगू नीक, २८.ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!, २९.चोभा आम!, ३०.हमर टोलक बाट, ३१.जखन इकड़ू स्कूल गेल, ३२.माछी फेर आउ टाटा!, ३३.अमाचीक जुलुम मशीन सभ, ३४.टिंग टोंग, ३५.पाउ-म्याऊ-वाह, ३६.कुकुड़क एकटा दिन, ३७.हमरा नीक लगैए, ३८.रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन, ३९.कनी हँसियौ ने!, ४०.लाल बरसाती, ४१.भूत-प्रेतक नाट्यशाला, ४२.आउ पएर गानी, ४३.कतऽ अछि ई अंक ५?, ४४. भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)।

मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक: १.https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका), २.https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!), ३.https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन), ४.https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ), ५.https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?), ६. https://www.youtube.com/@videha_ejournal पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल।

सम्पादन: विदेह अंक १-३७१, विदेह-सदेह अंक १-३६

संयुक्त सम्पादन: गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार: १.मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, २.मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)। **गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा:** १.जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध, २.जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२,३.Maithili-English Dictionary Vol.I, ४.Maithili-English Dictionary Vol.II, ५.Videha English Maithili Dictionary, ६.English-Maithili Computer Dictionary.

II.

प्रीति ठाकुरक रचना संसार

मूल: १.गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य), २.मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य), ३.मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य), ४.विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)।

अनुवाद (मैथिली): १.रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा), २.ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ३.सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ४.बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ५.रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ६.(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ७.(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ८.(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ९.जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा), १०.पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा), ११.बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)।

Compiled, Scanned & Catalogued: १.पञ्जी खण्ड- I सँ XXII (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)।

